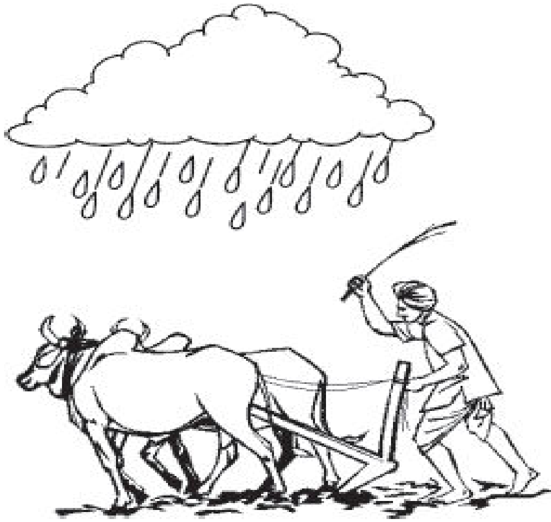
डाकवचन-संहिता

(टिप्पणी-व्याख्या सहित विशुद्ध पाठ, सम्पूर्ण)

रचनाकार

डाक



व्याख्या-टिप्पणीकार सम्पादक

डॉ० शशिनाथ झा

कुलपति

का.सिं. दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय

दरभंगा

2021 ई.

डाकवचन-संहिता

(टिप्पणी-व्याख्या सहित विशुद्ध पाठ, सम्पूर्ण)

रचनाकार

डाक

व्याख्या-टिप्पणीकार सम्पादक

डॉ० शशिनाथ झा

कुलपति

का.सिं. दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय

दरभंगा

2021 ई.

प्रकाशक :

संस्करण वर्ष : 2021 इ.

प्रति :

मूल्य :

मुद्रक :

विषय सूची

प्रथम खण्ड

(डाकवचनामृत, मैथिल डाक एवं लोकमुखसँ प्राप्त वचन)

<u>द्वितीय खण्ड</u>

(डाकवचनसंग्रह, लोकमुख एवं विविध स्रोतसँ प्राप्त वचन)

तृतीय खण्ड
(प्राचीन ग्रन्थमे प्राप्त डाकवचन)



भूमिका

डाक नामक एक तेजस्वी व्यक्ति छलाह जे जीवनोपयोगी अनेक व्यावहारिक विषयकेँ पद्यबद्ध लोकभाषामे लिखि देने छथि । हिनके दोसर नाम 'घाघ' छल । ई नवम शताब्दीमे भेल छलाह । ई अपन रचनामे अपनाकेँ गोआर (गोप) कहैत छथि । लोकमे प्रसिद्ध अछि जे हिनक पिता ज्योतिषी वराह मिहिर (ब्राह्मण) ओ माता गोपपुत्री छलथिन्ह । लालन-पालन नानाक घर भेल छलन्हि, तेँ गोप कहओलनि आ से कहबामे गौरवक अनुभव होइन्हि ।

डाक शब्दक अर्थ होइछ तेजस्वी पुरुष । ई लोकभाषाक शब्द थिक, जकर संस्कृत मूल दक्ष=दक्क=डाक अथवा टङ्क=डङ्क=डाँक=डाक मानल जाय सकैछ । एकरे स्त्रीलिङ्ग रूप डाकिनी (डाइनि) = तान्त्रिक सिद्ध महिला कहाए प्रसिद्ध अछि, परन्तु एहन पुरुषकेँ सम्प्रति ओझा कहल जाइछ । डाक शब्दसँ तीक्ष्णता, शीघ्रता ओ उत्कटता एखनहुँ अनेक रूपमे देखल जाइछ, जेना (1) डकब-उत्कट गन्ध पसरब (हींग डकैत अछि), कौआक भोरमे बाजब (तेज शब्द करब), (2) डाकनि देब (जोरसँ शाबर मन्त्र पढ़ब), (3) डंका (ढोलहो), (4) डाक लागब (अतिशय भाँग लागब), (5) डकैत, डाकू, डाका इत्यादि एही तीक्ष्णतामूलक निन्दनीय शब्द प्रचलित अछि, (6) डाकिया (शीघ्र पत्र पहुँचओनिहार) ।

डाकक महत्ता सभ वर्गक लोकक लग समाने रहल अछि । हिनक नीति, कृषि ओ उद्योग सम्बन्धी वचन सभधर्मक लोक अपनबैत अछि । ई भ्रमणशील व्यक्ति छलाह, जतए जाथि, अपन व्यावहारिक वचनसँ सभकेँ आकृष्ट कए लेथि । एहि क्रममे हिनक वचन बंगालसँ राजस्थान धरि पसरि

गेल ओ एखनहुँ लोककण्ठमे सुरक्षित अछि, परन्तु ओहिपर स्थानीय भाषाक ततेक प्रभाव पड़ि गेल जे परस्पर भिन्न लगैत अछि । हिनका मिथिलामे डाक ओ घाघ, उत्तर प्रदेश आदिमे घाघ, बंगालमे डंक तथा राजस्थानमे टंक कहल जाइत अछि । ई अपन 'वचन' जनिकाँ सम्बोधित कए कहने छथि तनिकाँ मिथिला ने भाँडरि रानी, मगधमे भडुली तथा आनठाम भड्डरी कहल जाइत अछि ।

डाक मिथिलावासी छलाह, जाहिमे निम्नलिखित युक्ति अछि–

(1) डाकक रचनाकेँ मिथिलामे 'वचन' (ऋषिक उक्ति, प्रामाणिक कथन) कहल जाइत अछि । आनठाम एकरा कहावत कहैत छैक । एतय घर–घरमे हिनक वचन प्रचलित ओ मान्य अछि । एतेक रास डाकवचन आन प्रान्तमे उपलब्ध नहि अछि ।

(2) मिथिलाक धर्मशास्त्र ओ ज्योतिषक प्राचीन ग्रन्थमे डाकक वचनकेँ प्रामाणिक रूपेँ उद्धृत कएल गेल अछि । तत्त्वचिन्तामणि प्रभाकार यज्ञपतिक (1430 ई.) पौत्र पशुपतिक (1400 ई.) व्यवहाररत्नावली, अनर्घराघव नाटकक टीकाकार म.म. रुचिपति उपाध्यायक (1430 ई.) पुत्र हरपतिक (1450 ई.) व्यवहारप्रदीप, शुभङ्कर ठाकुरक (1570 ई.) तिथिद्वैधनिर्णय, विष्णुदेवक (1630 ई.) रत्नकलाप आदि ग्रन्थमे डाकक विशुद्ध वचन भेटैत अछि (द्रष्टव्य–एहि डाकवचन संहिताक) तेसर खण्ड ।

(3) डाकक कहल मुहूर्त्त सभ मैथिलक ग्रन्थ रत्नशतक, रक्तकलाप आदिसँ मिलैत अछि, अन्यदेशीय मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि सँ नहि ।

(4) डाक मिथिलाक भाँड़रि रानीक आश्रय पाबि रचना कएने छलाह ।

(5) मिथिलामे गूढ़ आशय रखनिहारकेँ एखनहुँ घाघ कहैत छैक ।

लौकहीक समीप '**डकही**' गाम कें डाकक स्थान मानल जाइत अछि । ओतए हिनक पोखरि आदि विद्यमान अछि ।

झंझारपुरक निकट दीप गाममे दरिहरा चरसँ पूब भँड़ोरा रजबान्ह अछि जे घघरा घाटक रेवले पुल लग मिलैत अछि । कोशीक एक शाखा एतए बहैत छल जे सम्प्रति भरिकए धनखेती भए नदी कहबैत अछि ।

ई घाघक स्थान छल जे रानी भाँड़रिक भँड़ोरा रजबान्हक सम्पर्कसँ सिद्ध होइत अछि ।

(6) राशिक दैनिक मान (पृ. 102) जे डाक कहने छथि से मिथिलादेशीय मान थिक, आन ठाम ई स्वीकृत नहि अछि ।

(7) डाक अपनाकेँ गोआर कहैत छथि जे मैथिलीक शब्द थिक ।

मिथिलामे आठम–नवम शताब्दीमे पालवंशीय बौद्धराजाक शासन छल जे कर्मकाण्डक घोर विरोधी छल आ अनेक बौद्ध सिद्ध केँ आश्रय देने छल। वर्णरत्नाकरमे ज्योतिरीश्वर (1320 ई.) एहन 84 सिद्धक उल्लेख कएने छथि। एहिमे अनेक सिद्धक उपनिवेश (कुटी) मिथिलामे छल आ ओहि स्थानक नाम हुनके सभक नाम पर पड़ल–वेरुपा (बेरमा), भिखरपा (भखरौली), कान्हपा (कन्हौली), सरहपा (सहरबा), भादेपा (भदुआर), लुइपा (लोआम), भुसुकपा (भुसकौल), दारिपा (दरभंगा), हलिपा (हरिभंगा) इत्यादि । ई सभ वैदिक धर्मक विपरीत छलाह, तेँ एतए हुनक आचारक निन्दाक क्रममे हुनक नाम निन्दित मानल–गेल भुसकौल, पलित (पलितपा), भद्दा, डोमा (डोम्बीपा) आदि । एहि सिद्ध सभक भाषा लोकभाषा छल । बहुतोक गीत 'चार्यापद' नामक पोथीमे मैथिलीक अछि । तेँ हुनक प्रचार अधिक होमए लागल ।

एही अवसर पर डाकक प्रादुर्भाव भेल । ओ सर्वप्रथम परम्परागत आचार–विचार, विधि–व्यवहारकेँ लोकभाषाक माध्यमसँ कहए लगलाह । एहिसँ सर्वसाधारण लोक बौद्धतान्त्रिकक आचारक जालसँ बँचलाह आ अपन परम्परागत धर्मसँ यथार्थतः अवगत भेलाह । तें हिनक वचन मे सरस्वती, गौरी, गणेश, गोविन्द ओ शिवक स्मरण कएल गेल अछि (पृ.– 21, 31, 100)।

'डाक' एक सिद्ध पुरुष छलाह । हिनक दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म छल, तेँ ई दूरदर्शी छलाह । प्रकृतिक परीक्षण कए ओहिसँ भावी समयक फलादेश कए लैत छलाह । एहन लोकोपयोगी विषयकेँ लोकभाषाक पद्यमे हजारो वचन बनाए प्रचार कए गेलाह जे ततेक लोकप्रिय भेल जे लोकण्ठमे वास करए लागल । वचन कहैत छैक ऋषि–मुनिक वाणीकेँ । से डाकक वाणीकेँ लोक वचन मानि अभ्यास कए लेलक । प्राचीन कालहिसँ कतेको व्यक्ति एहि वचन सभक संग्रह करैत रहलाह ।

डाकक वचन सब सदा लोकप्रिय रहल अछि । विशेष कए खेतिहर गृहस्थ एखनहुँ एकरे अनुसार बीया बाउग, रोपनि, बीजरक्षण, वर्षाक अनुमान आदि करैत छथि । कुशी अमावस्याक बाद वर्षा भेलो पर धान नहि रोपि किसान बाजि उठै छथि–

काशी कुशी चौठीचान, आब की रोपबह धान किसान ।
भारे बीया बोझे धान, आबहु बैसह घर किसान ।।

–डाकवचन ।

अर्थात् भादवक अन्हरियाक एकादशी, कुशी अमावस्या आ चौरचन आबि गेलह । आब धनरोपनी बन्द करह, एक भार बीया रोपबह तँ एक बोझ धान होएतह जे तोहर बोनियोँ नहि दए सकतह । तेँ आब घर बैसह ।

एहिना दुर्गापूजा अएला पर किसानक मुँह पर ई वचन आबि जाइछ–

(1) आधा चितरा राइ–मुड़ाइ, आधा चितरा जौ–केराई ।।

अर्थात् चित्रा नक्षत्रक आधा तक सरिसब, रैंची, तीसी आदिक बाउग होइछ आ शेष आधामे जौ, मटर, केराव, खेसारी आदि खेतमे छीटल जाइछ ।

(2) हथिया वरिसए चित मड़राए ।
घर बैसल गिरहथ इतराए ।।

(3) मग्घा मकड़ी, पूर्वा डाँस ।
उतरामे हो सबहक नाश ।।

वर्षा किसानक अवलम्ब होइछ । एकरे अनुसारेँ काज आगू बढ़ैछ । एकर विचार नक्षत्रक अनुसार कएल जाइछ । डाक कहैत छथि–

(1) जओँ पुरवैया पुरबा पाबए ।
सुखले नदिया नाओ बहाबए ।।
जओँ असरेसा गुमकी लाबए ।
मघा निरावे चारू पाबए ।।

(2) पुक्ख न राखए रुक्ख ।

(3) सावन पछवा भादव पुरबा, आसिन बहए इसान ।
कातिक कन्ता सिकियो न डोलै, कहाँ कए रखबह धान ।।

एहिना आनो प्रसंग पर एखनहुँ लोक बाजि उठैछ–

(1) हर बहए त अपनहुँ बही । नहि वही त बैसलो रही ।।

(2) नित्तह खेती दोसँझ गाय । जे नहि देखए तकरे जाय ।।

(3) विशाखाक आठ । जहाँ मन फुरए तहाँ काट ।।

(4) सुख सुकराती देवउठान, तकरे बारहें हुए नवान ।
तकरे बारहें खेत खढ़ियान, तकरे बारहें कोठी धान ।।
तकरे बारहे ँ औड़-बौड़, बहिङा लए लए दौड़ बौड़ ।।

(5) दिने बदरा, राति निवद्दर, वह पुरवैया हब्बर-हब्बर ।
कहइ डाक बीआ मत खोअह, धानक खेतमे राहड़ि बोअह ।।

मिथिलाक सांस्कृतिक अनेक तत्त्वके ँ समेटने डाकवचन यद्यपि पूर्णरूपमे उपलब्ध नहि अछि तथापि पूर्वाचार्य सभक प्रयत्नसँ आइ एक हजार पद्य उपलब्ध अछि जे कम-सँ-कम एतएक एक हजार वर्षक सामाजिक एवं सांस्कृतिक गाथा गाबि रहल अछि । लोककण्ठमे एखनो कतोक वचन एहन अछि जकर संग्रह नहि भए सकल अछि । जेना हमरा गाममे एक वृद्धक मुँहे ँ ई डाकवचन सुनल अछि–

पहिल पहर राति टकुआतान, दोसर पहर राति धनुषाबान ।

तेसर पहर राति कँकोड़ाक टाङ, चारिम पहर राति मोटरी बान्ह ।।

अर्थात् मनुष्य रातुक पहिल पहरमे सोझ लम्बा सुतैत अछि, दोसर पहरमे धनुष जकाँ टेढ़ भए जाइछ, तेसर पहरमे काँकोड़क टाङ जकाँ मोड़ा जाइछ आ चारिम पहरमे ठेहुनमे दाढ़ी सटाए मोटा बनि जाइत अछि ।

डाक प्रकृतिक गहन निरीक्षणक अपन दीर्घकालिक अनुभव एवं शास्त्रीय अनुशीलनसँ एहन वचन सभक रचना कएलनि जे सामाजिक उन्नति, आचार-विचारक विशुद्धता ओ कर्मनिष्ठताक शिक्षा ओ सन्देश दैत अछि ।

लोकोपयोगी विषयक सरल लोकभाषामे प्रस्तुति डाकक विशेषता थिक ।

हिनक मूलवचन प्राचीन मिथिलाक अपभ्रंश अवहट्ठमे अछि जे प्राचीन ग्रन्थ व्यवहाररत्नावली (1375ई.), व्यवहारप्रदीप (1430 ई.) आदिमे उद्धृत वचनक स्वरूपसँ स्पष्ट होइछ–

तिक्खा, काणा, राउता, भुञ्जए दिवहा तीस ।
ताके डेढ़े भूमिसुअ, मास अठारह सीस ।।
जत्ते दिवहा चन्द गऊ, तत्ते सनि वरिसाञि ।
बारह मास बेहप्फई, इत्थि गुनिञ ग्रह काञि ।।

–व्यवहारप्रदीपमे डाकवचन ।

अर्थात् तीक्ष्ण=सूर्य ओ कान=कनाह=शुक्र ओ राउत = राजपुत्र = बुध एक राशिमे तीस दिवसक भोग करैत छथि । तनिक डेढ़ गुना=45 दिन भूमिसुत= मंगल, अठारह मास धरि सीस=शिरमात्रक राहु ओ केतु, जतेक दिन चन्द्र रहैत छथि अर्थात् अढ़ाइ दिन ततेक वर्ष (अढ़ाइ वर्ष = 30 मास) शनि आ बृहस्पति बारह मास (एक वर्ष) रहैत छथि । एहि तरहेँ गुनि कए ग्रहक एक राशिमे रहबाक स्थिति बुझक चाही ।

सम्प्रति लोकमे प्रचलित डाकवचनक भाषा युगानुरूप भए गेल अछि । तकर कारण छैक । डाक एवं हुनक दल अपन सिद्धान्तक प्रचारमे दूर–दूर देशक भ्रमण कएने छलाह– बंगाल, आसाम, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं राजस्थान तक । तेँ हिनक वचन एतेक ठाम विभिन्न रूपमे भेटैत अछि । ई मिथिलामे डाक ओ घाघ, बंगालमे डंक, राजस्थामने टंक ओ आन ठाम घाघ नामसँ प्रसिद्ध छथि । एके आशयक वचन विभिन्न देशमे विभिन्न भाषाक रूप धारण कए लेलक आ तेँ ओहि सभ देशक लोक हिनका अपन क्षेत्रक लोक मानए लागल अछि ।

हिनक विषयमे प्रचलित कथा अछि जे कोनो वराह मिहिर नामक ज्योतिषीक द्वारा गोपजातिक स्त्रीसँ हिनक उत्पत्ति भेल छल । जन्मक छओ वर्षक बाद पिता आबि हिनका संग कए अपन घर बिदा भेलथिन । बालककेँ माइक लगसँ जाएब विचित्र जकाँ लगलैक, किन्तु सभक विचारसँ ओ पिताक

संग चलए लागल । धनखेती दुनू कातक खेतमे दू रङक धान छलैक मुदा दुनूमे काते-काते किछु किछु बेदरङ धान छलैक । ओ पितासँ एकर कारण पुछलक। पिता उत्तर देलथिन- वाउग करैकाल ओइ खेतवलाक बीआ छिटकि कए किछु एहू खेतमे पड़ि गेलैक त दू रङक धान एके खेतमे छै'। नेना तुरत प्रश्न कएलक- तखन त एहि खेतमे सँ बीयावला किसान सेहो लेतै'। पिता कहलथिन- नहि, सबटा उपजा खेतेवलाक हेतै, बीया छिटकि कए आबि गेलै ताहिसँ की' ? नेना झटदए पिताक कन्हापर सँ उतरि गेल आ बाजल- तखन त हम ओहि गोआरेक बेटा छी, अहाँक नहि ।' पिता अवाक् भए गेलाह, ओकरा नहि रोकि सकलथिन आ आशीर्वाद देलथिन जे तोहर ई सूक्ष्मबुद्धि बढ़ैत रहओ, तोँ नामी विद्वान् भए लोककल्याण करैत रहबह'। डाक स्वयं प्रकृति ओ समाजसँ शिक्षा लए गोआरक पुत्रक रूपमे महान् ज्ञानी भेलाह आ हुनक रचनोसँ ई सिद्ध अछि जे अपनाकेँ गोपजातिक कहि ओ गौरवान्वित होइत छलाह । तेँ एहि कथामे सत्यता झलकैछ ।

प्राचीनग्रन्थ मे प्राप्त वचनक भाषासँ डाक नवम शताब्दीक मानल जा सकैत छथि । मुदा हिनक लोकप्रसिद्ध वचनक भाषा देखि विद्वानो सभकेँ हिनक एतेक प्राचीन होएब स्वीकार्य नहि होइत छनि । मुदा जखन हिनक वचनक प्राचीन ग्रन्थमे उद्धरण पबैत छी तखन तँ मानए पड़ैछ जे ई बहुत पूर्वक आचार्य छलाह । लोककण्ठमे घँसाइत-मँजाइत हिनक वचनक भाषा नवीन भए गेल अछि ।

आधासँ अधिक डाकवचन ज्योतिष विषयक अछि । तिथि, नक्षत्र, योग आदिसँ लए राशिक मान, ग्रहदशा, यात्रा, संस्कार आदिक मुहूर्त्त, प्रश्न-फलादेश, डीह गुनब, वर्षायोग, सूर्यमण्डल, अद्भुतप्रकरण आदिक सरल रीतिसँ विचार कएने छथि । गृहप्रकरणमे अष्टवर्ग, घरक नाप, घरक लग गाछक शुभाशुभ इत्यादि आवश्यक विषय अछि । सम्प्रति मिथिलामे एही तरहेँ मुहूर्त्तविचार एवं गृहविचार कएल जाइत अछि ।

खेतीक प्रसंग बड़द किनबाक विचार डाकक एखनहुँ जनमानसमे विद्यमान अछि-

ओहि पार जँ दखिअह मैना । एहि पारसँ फेकिहह बैना ।।

नाटा वरदा बेचि कए, दूइ धुरन्धर कीन ।
आपन खेती सम्हारि कए, आन कें मङनी दीन ।।

डाकक नीतिप्रद उपदेश हृदयहारी बनल अछि–

(1) खएलहुँ मरी, विनु खएलहुँ मरी ।
कहथि डाक जे संयम करी ।।

(2) गोड़कठ खाट, उबटन घोड़, नारि कुलच्छनि, चाकर चोर ।
एहि चारूकें तुरित परिहरी, तुम्मा बान्हि फकीरी करी ।।

(3) कपटी मित्र, कोसलिया माय, बुड़िबक बेटा, टेटा जमाय ।
कहथि डाक चारू परिहरी, बुड़िबक सन ससुरो नहि करी ।।

(4) महतमसँ बहिया भेल बरी, कहथि 'घाघ' सन्तापहि मरी ।।

महत्तम= पैघलोक= मालिक सँ नोकर यदि बली = अधिक प्रभावशाली हो, तँ मालिक जीवितहि मृत भए जाइत छथि ।

(5) ई जनु बूझी डाक निर्बुद्धी, नाशहिं काल विनाशहिं बुद्धी ।।

(6) काँची कुची वेश्या घालए, बाभन घालए दासी ।
हँसी ठठा संन्यासी घालए, चोरहिं घालए कासी ।।

(7) उत्तम खेती, मध्यम वान, अधम चाकरी भीख निदान ।।

डाक खेतीकें उत्तम, बनियौटीकें मध्यम, नोकरीकें अधम ओ भीख माङबकें लाचारी कहैत छथि ।

कतोक विषय आलंकारिक छटासँ मिलाए हृदयंगम करबैत छथि–

(1) नाटा बड़द, बहुरिया जोई । ने घर बसए, ने खेती होई ।।

छोट बड़द आ कम वयसक स्त्री कोनो कजक नहि । बहुरिया घरमे बसवे नहि करत, भागि जाएत आ बड़द खेती नहि सम्हारि सकत । एहिमे दू भिन्न वस्तुमे समान काजक दृष्टान्त चमत्कारजनक अछि ।

(2) तीतर पंखी बादरा, विधवा कज्जल रेख ।
ई वरिसए ओ उढरए, एहिमे मीन न मेष ।।

अर्थात् तितीर पक्षीक पाँखि सन कारी मेघ जँ उठय आ विधवा काजर लगाबए त दुनू सीमा पार कए जाए । एहिमे सन्देह नहि । एतहु प्रस्तुत मेघ ओ अप्रस्तुत विधवामे एककार्यक प्रवृत्ति चमत्कारजनक अछि । 'मीन ने मेष' लोकोक्ति थिक । कएम चन्द्रमा छथि, ताहि लेल मेष राशि सँ मीन धरि गणना करए पड़ैत छैक । जँ आठम चन्द्र निर्णीत हो त मीन-मेष गनबाक काजे की, अर्थात् निष्फल ।

(3) आबत नहि आदर दिये, जात न दिज्जै हस्त ।
यहि दोनो तब ही गए, पण्डित ओ गिरहस्त ।।

अबितहि जँ आदर नहि देलक वा आदियहिमे अरदरा नक्षत्रमे मेघ नहि बरसल आ जाइत काल किछु हाथमे नहि देलक वा अन्तमे हथिया नक्षत्रमे वर्षा नहि भेल तँ ई दुनू = पण्डित आ गृहस्थ गेले घर छथि । एतए आदर शब्दक दू अर्थ आदर ओ आर्द्रा तथा हस्तक अर्थ हाथ ओ नक्षत्र भेलासँ श्लेष अलंकार आ दुनूक पण्डित ओ गृहस्थमे समान रूपसँ अन्वय भेलासँ दीपक अलंकार अछि, कारण एतए खेतीक प्रसंगमे गृहस्थ प्रस्तुत आ पण्डित अप्रस्तुत (अप्रसंगक) छथि ।

ज्योतिषक मुहूर्त्त सहज रूपेँ सामान्यो लोक हरवाह-चरवाह धरि डाकक कृपासँ बुझए लागल । जेना-

(1) केरा रोपी दिन विचारि, सीमी भदबा भादव वारि ।।

अर्थात् सी आ मी अन्तवाला तिथि पंचमी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी आ दशमी एहिना एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी आ पंचदशी (अमावस्या आ पूर्णिमा) तिथि, भदवा (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तर भाद्र आ रेवती नक्षत्र) आ भादव मास छोड़ि आन समयमे केरा रोपी । तेँ पड़ीब, द्वितीया, तृतीया, चौठ आ षष्ठी तिथिमे केरा रोपल जाइछ ।

(2) नहि किछु जानी, त दिग्बल धए तानी ।।

जँ दिग्बल रहए त यात्रा शुभ हो, आन विचार नहियो कए सकी त हर्ज नहि । दिक्शूलक विपरीत दिशामे दिग्बल होइछ । रवि आ शुक्र दिन पूबमे, सोम आ शनि दिन पच्छिममे, मंगल दिन दच्छिनमे आ बुध-बृहस्पति दिन उत्तरमे दिग्बल हो ।

(3) प ती प चा ख सा दो आ । नवे नवे योगिनि होआ ।।

पीड़ब, तृतीया, पंचमी, चतुर्थी, षष्ठी, सप्तमी, द्वितीया आ अमवस्या सँ (प्रत्येक तिथिसँ) नओ नओ संख्याक तिथि लए पूर्वादि दिशामे योगिनीक वास रहैत अछि- 1, 9-पूब, 3-11 अग्निकोण, 5-13- दच्छिन, 4-12 नैर्ऋत्य, 6-14- पच्छिम, 7-15- वायकोण, 2-10- उत्तर, 30-8- ईशान ।

यात्रामे सम्मुख आ दहिन योगिनी अनिष्ट तथा वामा दिस आ पाछू सुखकारिणी होइछ ।

एहि तरहेँ डाकवचनमे मिथिलाक कृषि ओ विधि व्यवहारक संस्कृति भरल अछि । यद्यपि 'जिज्ञासा' पत्रिकाक जून 1996 अंक मे हम प्राचीनवचनक व्याख्या एवं कठिन शब्दक अकारादिक्रमें सार्थ सूची दए देने छी तथापि एहि ग्रन्थक व्याख्यासहित समीक्षात्मक संस्करण आवश्यक अछि ।

डाकक वचन जे प्राचीन ग्रन्थ सँ उद्धृत भेल अछि तकर भाषा अवहठ (प्राचीन मिथिलाक अपभ्रंश) थिक, जाहिमे विद्यापति कीर्त्तिलता बनओने छथि । परन्तु लोककण्ठसँ प्राप्त वचन पर बादक भाषाक रंग चढ़ि गेल, तथापि कतेको प्राचीनताक छाप अछिये ।

डाकवचन सामान्यत: चौपाइ ओ दोहा छन्दमे अछि, मुदा कतहु-कतहु सोरठा, अहीर, जयकरी आ सबैया छन्द सेहो अछि ।

मिथिलामे प्रचलित डाकवचनक संग्रह सबसँ पहिने शुभंकरपुर (दरभंगा) निवासी पं. मुकुन्दझाक पुत्र पं. कपिलेश्वर झा 'डाकवचनामृत' नामे 3 भागमे कएने छलाह जे 1905 ई.मे आ 1924 मे कन्हैयालाल कृष्णदास, दरभंगा द्वारा प्रकाशित भेल आ अनेक बेर छपैत रहल ।

तकर बाद 1950 ई.मे दरभंगा राज पुस्तकालयक पं. जीवानन्द ठाकुर (सर्वसीमाग्राम निवासी) 'मैथिल डाक' नामक पोथीक सम्पादन कएने छलाह

जे मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगासँ प्रकाशित भेल छल । एहिमे प्रथम बेर प्राचीन ग्रन्थ सभसँ डाकवचनक उद्धरण प्रस्तुत कएल गेल एवं सम्पूर्ण डाकवचनामृतक पाठसंशोधन भेल । परन्तु मूल उद्धृत वचनमे पाठसंशोधन अपेक्षित रहल, कतेको वचन छुटि गेल, कतेको दोहराए गेल । एकरे यथावत् पुनः प्रकाशन राँटीसँ 'जिज्ञासा' पत्रिकामे 1994 ई.मे भेल आ तकर अगिला अंकमे 'मैथिल डाकक' प्रथम खण्डक पाठ संशोधित व्याख्या हमर कएल, 1996 मे 'डाकवचन संहिता' नाम सँ छपल । 1955 ई.मे डाकवचन संग्रह चारि भागमे मधुबनीक 'बाबू रघुवर सिंह बुक्सेलर' द्वारा प्रकाशित भेल । एकरे पुनर्मुद्रण पुपरी सँ भेल छल । तकर बाद हमर 'डाकवचन संहिता' उर्वशी प्रकाशन, पटनासँ 2001 ई.मे छपल । तकरे ई परिवर्धित संस्करण थिक ।

संहिता शब्दक अर्थ होइछ संकलन, यथा ऋग्वेदसंहिता, महाकाल संहिता, भृगुसंहिता, नारदसंहिता । विषयक क्रमबद्ध प्रामाणिक संग्रह भेलाक कारण प्राचीनकालमे संहिता सभक नाम एहन पड़ल । डाकवचनक ई क्रमबद्ध संग्रह ऋषिवचनवत् मान्य भेलाक कारण एतए संहिता कहल गेल अछि । एहिमे डाकवचनामृत, मैथिल डाक ओ डाकवचनसंग्रहक सकल वचनक संग किछु आनो स्रोतसँ प्राप्त वचन देल गेल अछि, प्रकरणकेँ सुव्यवस्थित कए पाठपरिशोधन कए अपेक्षित टीका-टिप्पणी सेहो कएल गेल अछि ।

बहुतो वचन मौखिक परम्परासँ प्राप्त कएल । तदनुसारे डाकवचनसंग्रहक अनेक वचनक संस्कार भए सकल । प्रस्तुत संस्करणक पहिल भाग डाकवचनामृत ओ लोकमुखक वचन, दोसर भाग डाकवचनसंग्रह ओ लोकमुखक वचन तथा तेसर भाग प्राचीन ग्रन्थक वचन थिक ।

यद्यपि सम्पूर्ण पोथीक विस्तृत व्याख्या अपेक्षित अछि, मुदा एखन एतबे प्रस्तुत कए लोकक आकांक्षाक पूर्तिमात्र करबाक उद्देश्यसँ उपलब्ध सकल वचनकेँ सुव्यवस्थित रूपेँ राखल गेल अछि । आशा अछि जे समाज एहिसँ लाभान्वित होएत । ई हमर चिरकालक काज थिक । 1980 सँ हम एहिमे लागल छी ।

प्रख्यात समालोचक मोहन भारद्वाजक 'डाकदृष्टि' समीक्षात्मक पोथी 2012मे मुद्रित भेल जाहिमे डाकक विषयमे विविध पक्ष पर गहन आलोचना

भेल अछि । एहिमे पृ.- 87 पर ओ लिखैत छथि- ''कहय डाक तोँ सुनह रावन, केरा रोपी अषाढ़ सावन'' -डाकवचनामृतक एहि पाठमे डॉ० शशिनाथ झा रावनक स्थामने 'बाभन' कए देलनि' ।

एहि पर हमर वक्तव्य जे डाकवचन संग्रह (मधुबनी)मे 'बाभन' सएह छपल छै । हम मूलपाठमे एतेक मनमानीक विरोधी छी । हम ओतबे संशोधन करैत छी जतबा लेल सम्पादक अधिकृत रहैत छथि । विशेष संशोधनक लेल हमर नीति अछि-

(1) कोनो आधार ग्रन्थमे प्राप्त हो ।

(2) छन्द, भाषा, अर्थ संगतिक सहारा लैत एक-दू मान्य विद्वानक अनुमोदन हो ।

(3) लोकक मुखसँ प्राप्त वचनमे संशोधन करैत मूलरूपक रक्षा हो ।

(4) छपलाहा पोथीक वचन जँ लोकमुखसँ प्राप्त भेल, ताहि स्थलमे मैथिलीक प्राचीन प्रकृतिक अनुरूपे पाठकेँ मान्यता देब उचित थिक ।

तेँ जतए संशोधित रूप देखि पड़ए ततए पूर्वोक्त हेतु जानल जाय । पाठपरिशोधनमे परामर्श देनिहार सम्मान्य विद्वान्मे मुख्यतः स्व. पं० जीवानन्द ठाकुर, स्व. डॉ० रामदेव झा ओ अग्रज स्व. पं० हरिहर झा भेलाह । हिनका सभकेँ प्रणाम ओ कृतज्ञता निवेदित करैत छी ।

पूर्वाचार्य लोकनि एवं पोथी वा वचन उपलब्ध करओनिहार सभक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत समसामयिक अनेक विद्वानकेँ धन्यवाद दैत छियन्हि, जनिकासँ एतत्प्रसंग परामर्श लेल गेल ।

दिनांक : 14.4.2021 ई.

पण्डित श्री शशिनाथ झा
कुलपति,
का.सिं.द. संस्कृत विश्वकवद्यालय,
दरभंगा
(ग्राम-दीप, जि०- मधुबनी)

डाकवचन-संहिता

प्रथम खण्ड

(डाकवचनामृत एवं लोकमुखसँ प्राप्त वचन)

मंगल वचन

गिरजा गिरा गोविन्द गणेश, सकल काज सुमिरी गिरिजेश ।
पाँच गकारें विघ्न न होय, कहथि 'डाक' ई बुझु सब कोय ॥ 1 ॥

1. अथ सामान्य प्रकरण

तिथिनाम ज्ञान वचन

पड़िबा षष्ठी एकादशि नन्दा, द्वितीया सप्तमी द्वादशि भद्रा ।
तृतीया अष्टमी त्रयोदशि जया, चौ नव चउदशि रिक्ता भया ॥
पञ्चमी दशमी पञ्चदशी अमा, कहथि 'डाक' ई पूर्णा समा ॥ 2 ॥

सिद्धियोग-

शुक्रक पड़िबा एकादशि होई, सिद्धि योग कह षष्ठी सब कोई ।
बुधवासर जौं भद्रा पाबै, सिद्धि योग तेहि जग मह गाबै ॥
जया तिथिहि जौँ मंगल होय, सिद्धि योग मन मानिय सोय ॥
शनि दिवस रिक्ता जौं आबै, सिद्धियोग गुनिजन तेहि गाबै ।
पूर्णा तिथि गुरु वासर जानि, सिद्धियोग कह 'डाक' बखानि ॥ 3 ॥

निन्दित योग-

रवि मंगल जौं नन्दिका, भद्रा मे शुक चन्द ।
बुधे जया गुरु रिक्ता, शनि पूर्णा अति मन्द ॥ 4 ॥

---

1. गिरा = सरस्वती । गिरिजेश = महादेव । गकार = 'ग' आदि अक्षरवाला शब्द । 2. चौ = चौठ, अमा = अमावस्या । 4. शुक चन्द = शुक्र सोम । मन्द = अधलाह, मृत्युयोग ।

दग्ध तिथि विचार-

मेष कर्क केर षष्ठी होई, धनुष मीन द्वितीया जोई ।
बृष कुम्भ चतुर्थी जान, अष्टमि कन्या मिथुनहि मान ॥
बृश्चिक सिंह दशमी भान, मकर तुलाक द्वादशी गान ।
एक विधि तिथि केँ दग्धा कही, शुभ कारज सब छोड़ि रही ॥ 5 ॥

तारा विचार-

जन्म नक्षत्रसँ इष्ट नखत्रा, गणना करि धरि देखिय पत्रा ।
जाबत अंक एकट्ठा भेल, तकरा केँ नवसँ भजि लेल ।
शेष बाँचय से तारा जान, कहए 'डाक' नाम गुण फल मान ॥

तारा नाम विचार-

जन्म सम्पति विपति अरु क्षेम, प्रत्यरि साधक वध सुनु नेम ।
मित्र ओ अतिमित्र तारा नाम, 'डाक' कहथि सभ फल के धाम ॥ 6 ॥

चन्द्रफल विचार-

जन्म राशिसँ गणना करी, ओहि नक्षत्रक चन्द्रमा धरी ।
यावत अंक आबै ई विधि, चन्द्र ज्ञान जानी एहि सिधि ।
चारि आठ बारह कें त्यागि, शेष चन्द्र शुभ कहिअह लागि ॥ 7 ॥

2. जातक-प्रकरण एवं संस्कार

प्रसवार्थ घरमे प्रवेशक समय-

रोहिणि श्रवणा सूर्य्यनक्षत्र, शुभ वासर पैसी देखि पत्र ॥ 8 ॥

निन्दित योगमे जन्मक फल-

शनि रवि मंगल तीनू तेखा, श्रवण धनिष्ठा ओ अश्लेषा ।
ओहि राति जँ बालक होय, मात पिता संहारय सोय ॥

---

6. नखत्रा = नक्षत्र । पत्रा = पतड़ा । नव सौं भजि = नौ सँ भाग ।

8. सूर्यनक्षत्र = हस्त । 9. तेखा = त्रिक (तीनूक समूह) ।

आप मरए कुल भरि संहार, राशि गुनैत बाभन केँ मार ॥
लग्नहि कुजा लग्नहि सुजा, लग्नहि होबए भानु तनूजा ।
की मर जननी की मर बाप, की ओ जातक अपनहि आप ॥ 9 ॥

प्रसूतीक स्नान समय–

अनुराधा, अश्विनी ध्रुव[4] हस्ता, स्वाती पौष्णा[5] नक्षत्रे शस्ता ।
कुज रवि गुरु दिन करी नहान, कहथि ''डाक'' प्रसूती के जान ॥
बुध पूत मरए, बाँझ हो कान[6], सूती शनि मर दूध नाश जान
रवि मङ्गल गुरु करी नहान, पूत धन बढ़ए डाक ई जान ॥
कृतिका आर्द्रा भरणी मूल, पुक्ख पुनर्वसु मग्घा तूल ॥
चित्र विसाखा श्रवण नक्षत्रा, कहथि डाक देखि सब पत्रा ।
एहि दशाञे करी सनान, फेरि प्रसव होवे नहि आन ॥ 10 ॥

स्तनपानक दिन–

रिक्ता मंगल छोड़ि के बिष्टी, व्यतीपात वैधृत अति दुष्टी ।
मृदु ध्रुव क्षिप्र नक्षत्रे जान, कहए ''डाक'' माताक स्तन पान ॥ 11 ॥

प्रथम क्षौर (मुंडन)क समय–

नहि गुरुशुद्धि वेद प्रकार, शुद्ध समय के करु ने विचार ।
विषम वर्ष उत्तरायण जानि, चैत छाड़ि शुभवासर मानि ॥
जन्म मास के दीजिए त्यागि, ज्योतिष उक्त नक्षत्र लागि ॥
आदि क्षौर बालकेर होय, 'डाक' कहथि जानब सब कोय ॥ 12 ॥

कर्णवेध–

जन्मक तारा जन्मक चन्द्र, जन्म मास ओ जन्म ग्रहेन्द्र ।
दक्षिणायन छोड़ि, शुभबार, सूर्य्य शुद्धि केर करी विचार ।

---

9. कुजा=मंगल, सुजा–सूर्य, भानुनूजा– शनि । 10. ध्रुव=रोहिणी, उत्तरा तीनू । पौष्णा= रेवती । कान=शुक्र । 11. विष्टि=भद्रा (कृष्णपक्षक सप्तमी ओ चतुर्दशीक पूर्वार्ध ओ तृतीया दशमीक उत्तरार्ध तथा शुक्लपक्षक अष्टमी पूर्णिमाक पूर्वार्ध ओ चतुर्थी एकादशीक उत्तरार्ध) । मृदु=मृ., चि., अनु. रे. । क्षिप्र=अश्विनी पुष्य, हस्त, अभि० ।

अश्विनि पुष्य हस्त अभिजित, मृग अनुराधा रेवती चित[1] ।
स्वाती हस्त ओ उत्तर तीन, विषम वर्ष कनछेदक दीन ॥
शुभ ग्रह शुभ लग्न सकाल, शुद्ध समय लेल 'डाक' बेहाल ॥ 13 ॥

खड़ी धरबाक-

सौम्यायन[2] शुभ कालहि जानि, पाँचम वर्षमे खड़ी आनि ॥
गणपति विष्णु सरस्वती मा[3], पूजन कर शिशु अक्षर कामा ॥ 14 ॥

उपनयन-

गर्भाष्टम बाभनक काल, एगारह वर्ष क्षत्री के लाल ।
बारहम वर्षे वैश्य के बाल, मुख्य समय हेतु सबहि बेहाल ॥
सोलह बाइस चौबीस पर्यन्त, क्रम सौँ व्रात्य सावित्रीक अन्त ।
वर्षशुद्धि कह 'डाक' गोआर, पाँच सौं सातहुँ करी विचार ॥
मकर कलस मछली अरु मेष, बृष मिथुन मे धरु व्रत भेष ।
द्वितीया तृतीया पंचमी शुभवार[4], दशमी एकादशि द्वादशि आर[5] ॥
सन्ध्या गलग्रह अन्ध्या[6] त्याग, कृष्णपक्ष ओ ग्रहणक भाग ।
गुरु दुनूकेँ शुद्ध करि जानि, धर्म्मशास्त्र सँ होए बखानि ।
आर्द्रा श्लेषा जेष्ठा मूल, रोहिनि उत्तर तीन समतूल ।
मृग चित्रा रेवति अनुराधा, हस्त पुष्य अश्विनि व्रत साधा ॥
[7]दिति त्यागि तिनु पूर्वा जान, 'डाक' कहथि उपनयनक मान ।
श्र.ध. शतभिषा पुनर्ब्बसु स्वाती, कहथि 'डाक' उपनयनक पाती ॥ 15 ॥

विवाहक दिन-

[8]मा. मा. फा. बै. जेठ आषाढ़, कन्या विवाही कहथि गोआर ।
रोहिनि रेवति मूल ओ स्वाती, मृग मग्घा अनुराधा हाथी ।
दू.ती.पा.सा. दस एगारह, तिथिकेँ उत्तम जानि विचारह ॥

---

1. चित्रा । 2. उत्तरायण । 3. लक्ष्मी । 4. सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्र । 5. मंगल । 6. अनध्याय तिथि । 7. पुनर्वसु, ई ब्राह्मणेक हेतु त्याज्य ।
8. माघ, मार्ग, फाल्गुन, बैशाख ।

पन्द्रह तीस चौदह नौ चार, त्यागि मध्यम कह शेष गोआर ।
रवि कुज शनि वासरकेँ जोड़ि, अधपहरा भद्राकेँ छोड़ि ॥
दग्धा तिथि मासान्तहि त्यागि, करी विआह शुभ-शुभकेँ जागि ।
जौँ कन्या नहि रखबा योग, शुद्ध जानि करु विवाह सुभोग ॥ 16 ॥

वधूप्रवेशक समय-

करी विवाह दिन सोलह मध्ये, विषम मास ओ बर्षहि साध्ये ।
हस्त आदि कए तीनि नखत्ता, मघा ब्रह्मयुग[9] पुष्य धनिष्ठा ॥
श्रवणा उत्तर मूल अनुराध, अश्वि रेवति बधु परवेस साध ।
गुरु शुक्र चन्द्र शनीचर दीना, कहथि 'डाक' बधु प्रवेस नवीना ॥
[10]आठ षाट बारह बुधबार, रिक्तहुँ त्यागी कहथि गोआर ।
शुक्र सूर्य्यक दोष नहि लग, चन्द्र तार बलहुँ के त्याग ॥ 17 ॥

द्विरागमन-

विषम बर्ष, घट[11] अलि ओ मेष, मिथुनक रविएँ दुरागमन देख ।
मृदु ध्रुव क्षिप्र चर ओ मूल, शुभ वासरमे करि समतूल ॥
रवि गुरु शुद्ध जानिकेँ कही, दक्षिण संमुख शुक्र छोड़ि रही ॥
शुक्ल पक्षमे करिअह जानि, 'डाक' कहै छथि समय बखानि ॥ 18 ॥

शुक्रान्धता कथन-

रेवतीसँ मृगसिर पर्यन्त, यावत दिन धरि चन्द्र उगन्त ।
तत दिन शुक्र अन्ध भय जाथि, वर द्विरागमन करौलेँ जाथि ॥
संमुख दक्षिण दोष नहि हो, कहथि 'डाक' एक युक्ति इहो ॥
संमुख शुक्र पीठ दिश बुध, एहना समयेँ दैत्यगुरु[12] शुद्ध ॥ 19 ॥

3. गृह-प्रकरण

डीह गुनबाक-

कर समान नापि कए काठी, दीर्घ प्रमान नापि कए बाँटी ॥

---

9. रोहिणी ओ मृगिशिरा । 10. अष्टमी, षष्ठी, 11. कुम्भ आ वृश्चिक । 12. शुक्र ।

एके हाड़, दूजे चमार, तीने विप्र, चौठे शूद्र ।
पाँचे यम, छठेँ क्षत्री, साते योगी, आठेँ घुन ॥
हाड़ी पहिराबए साड़ी, चमार लय जाय काढ़ी ।
विप्र विघिन आनीबो, शूद्र बहुत धन देबो ॥
यम पड़ीबो रोगी, क्षत्री करीबो भोगी ।
योगी करए अन दूना, घूना करीओ सूना ॥ 20 ॥

डीह पर वास्तुक-

[1]अक्षर दोगुन चौगुन मात्रा, पूछोँ कन्ता गामक वात्ता ।
गामेँ नामेँ एक करी, तामे साते भाग धरी ।
[2]बेवि छट्ठबो पाबह ओरे, गेलो बितह[3] पलट्टे तोरे ।
एक शून्य जोँ पाबए चारी, छाड़ह गाम कि होबए मारी ।
तीजैँ पाचैं मान समान, कहथि 'डाक' गाम परमान ॥ 21 ॥

डीह गुनबाक वर्गविचार-

अ[4] इ उ ए गरुड़, क ख ग घ मर्जार, च छ ज झ सिंह, ट ठ ड ढ़ श्वान ।
त थ द ध न नाग, प फ ब भ म मूस, य र ल व हाथी, श ष स ह मेष ॥ 22 ॥
गामेँ नामेँ डीह एक करी, तामे आठें भाग धरी ।
घर आङन करिअह जानि, ई कहै अछि 'डाक' बखानि ॥
[5]पक्षी वसु सर पञ्च मजार, षट् केसरी श्वान शर चार ।
अहिसर सात उन्दु सर एक, गज सर तीनि बेबि सर मेष ॥ 23 ॥

वैरिमित्र कथन-

पक्षिराज केसरि सौं संग, साप श्वानकेँ दोबर रंग ।
गजे मजारे हो उत्पत्ति[6], मेषे मूसहि बहु सम्पत्ति ।
पक्षी नाग करत संहार, वनबिलाड़ मूसा केँ मार ॥ 24 ॥

---

1. द्रष्टव्य- खण्ड-3,14 । 2. दोसर ओ छठम जँ शेष पाबी । 3. वित्त । 4. अवर्ग, कवर्ग इत्यादि । 5. द्रष्टव्य-खण्ड-3,14 । 6. वंश वृद्धि ।

कोन ग्रहक दशामे घर बनाओलें कोन फल-

रविक दशा जोँ करी घर, घरनी राजा झगड़ा कर ।
सोमक दशा जोँ करी घर, दूधेँ पूतेँ भरी घर ।
मंगलक दशा जोँ करी घर, घोड़ा-घोड़ी मानुष मर ।
बुधक दशा जोँ करी, अटुट लक्ष्मी आबए घर ॥
शुक्रक दशा जोँ करी घर, खीर-खाँड़ लय भोजन कर ।
शनिक दशा जोँ करी घर, घर घरनी मरय पर ॥
राहुक दशा जोँ करी घर, सकल गोष्ठी मरय पर ॥ 25 ॥

दोसर तरहेँ-

रवि कर कलह, धन सोमवार, मंगल मरण कहल गोआर ।
बुधे धन बिहफ्फे सिद्धि, शुक्रहि भोजन हो बहु वृद्धि ।
शनि हो रोग शोग ओ हानी, कालक[1] दशेँ मरण केँ जानी ॥ 26 ॥

कतबा हाथक गृह कर्त्तव्य-

गृहपति हाथ करब परमान, जत चाकर दीर्घ गुनि आन ।
एक छाड़ि, आठ सौँ हरब, बाँकी रहत से लेखा करब ॥ 27 ॥

फल-

एक अनेक, तिए धनवान, पाँचे पुत्र होइ फल मान ।
सातेँ सकल मनोरथ पूर, कहिअ 'डाक' घर एहि विधि फूर[3] ॥ 28 ॥

सूर्य्यमंडल, चन्द्रमंडलक विचार-

दीर्घ चाकर सम जोँ होई, रवि मंडल ता कह सब कोई ।
मंडल चन्द्र विविध सुख दाई, उत्तरे दक्षिणे दीर्घ जोँ पाई ॥
घर आङन बिनु गुनि जोँ करइ, पुत वित चित्त सबहु के हरई ।
सोड़ह हस्त ऊँच नहि कीजए, 'डाक' कहथि जे दिनदिन छीजए[4] ॥ 29 ॥

---

1. राहुक । 2. एक शेषेँ अनेक होइ । 3. स्फुट । 4. क्षीण हो ।

वास्तु खात लेबाक दिन–

आदि भादव पूबे शीश, दच्छिन पश्चिम उत्तर दीश ।
तिनि-तिनि मास विचारी भाग, बामा भाग सूतथि नाग ॥
जत भूमिक प्रथमहि घर करी, शीरम दीश सौँ छौ भाग धरी ।
दूइ भाग शिर दीशक त्यागि, एक भाग पुच्छहुँ केर लागि ॥
दुनू भाग जे मध्ये रहए, खात करु ई 'डाक' कहए ।
एक हाथक खात करी, 'डाक' भनए पूजा कय भरी ॥ 30 ॥

घर छरयबाक वचन–

राजा युधिष्ठिर मन्दिर छाबा, सोलह सहस्र ऋषि बुलावा ।
हे ऋषि हम पूछी तोही, घर छाबन विधि कहओ मोही ।
कहहि 'डाक' पड़िबा मति छाबहु, बल सँ कलह काल जगाबहु ।
[1]दुज दशमी ते बहुफल होई, सकल मनोरथ पुरबै सोई ।
तीज त्रयोदशि करिय निबासा, ता घर होबए भोग विलासा ।
चौठि चतुर्दशि छाएब छानी, ता घर होयत बालक हानी ।
पाँचे साते तिथि अगाधा, गाय महिसि धुरन्धर बान्धा ।
छठि आठे छाएब नर जोई, स्त्री मरय बहुत दुख होई ।
नवमी कहए इहे व्यवहारा, सो नर खइञें सदा उधारा ।
एकादशी द्वादशी छाएब जहिया, ता घर काल भुजंग मरैआ ॥
दशे पुरुष की दशे नारी, सो घर रहिञें सदा उजारी ।
कहहि 'डाक' जों तिथि नहि पाबी, [2]ओरिसौँ घर बरु बैसि गमाबी ॥
पन्द्रह तीसे छाबए छानी, ताघर होयत राजाकेँ हानी ॥ 31 ॥

घर समीप अशुभ वृक्ष कथन–

सिमरि तेतरि ओ पुनि तार, तूति डूमरि अरु वट विस्तार ।
जामुन अड़िरी गाछ जोँ होए, कहए 'डाक' नाशए पुनि सोए ॥ 32 ॥

---

1. द्वितीया । 2. उछेहल ।

शुभाशुभ वृक्षक फल–

सदन समीप नारिअल होइ, गृह बहुत धन पाबए सोइ ।
घर ईशान पूब जों ँ पाबए, ता के घर बहु पुत्र बढ़ाबए ।
पूरब दिशा आम यदि होय, धनदायक 'डाक' कहए सोय ।
बेल पनस बदरी अरु तेनू, पूरब रहने प्रजा बढ़ धेनू ॥
इएह सब वृक्ष दक्षिण जौ ँ होय, अन धन लक्ष्मी बढ़ाबए सोय ॥
जामुन दाड़िम पूरब आशा[1], बन्धु बहुत ताके परगासा ।
घर दच्छिन इएह तरु जौ ँ होय, ताके बहुत मित्रकर सोय ॥
दच्छिन पच्छिम पूगी होय, ताके बहुत हर्ष कर सोय ॥
जौ ँ ईशान दिश ई तरु होय, प्रजा बढ़ए बहुत सुख होए ॥
चम्पा तरु पूरब जौ ँ होय, अन धन लक्ष्मी बाढ़य सोय ॥
तुम्बीफल अरु कक्कारु, कुम्हर भण्टा सब दिशि चारु ॥
लता समीप सदनके ँ होय, कबहु ने दुष्ट बढ़ाबए सोय ॥
वनमँझार[2] जे होय अनेक, विटप ने रोपिअ करिअ विवेक ॥
सदन समीप विटप वट होय, धन ता के तस्कर नित खोय ।
सोइ तरु हो पुनि नगर मझार, ताहि सुखद कह 'डाक' गोआर ॥
घर समीप सीमर दुख मूल, तेतरि नाशए धन केर मूल ।
पुत्र नाश करि भीख मँगाबए, सपनो कहिओ सुख ने देखाबए ॥
सिरिस अशोक कदम्ब सुखदाई, हरदी अदरख परम सोहाई ।
हड़ीर आओर आमलकी[3] दोऊ, शश्य वृद्धि ताके घर होऊ ॥
आगाँ कदली[4] पाछाँ मान, बनिता बैसथि माँझ दलान ।
पुरुष सूतथि पीड़ा पाड़ि, एकसरि की कर भुल्लि बिलाड़ि ॥ 33 ॥

---

1. दिशा ।

2. वन मध्य । 3. धात्री । 4. केरा आ मएन ।

त्याज्य वस्तु

गोड़कट खाट उकटन घोड़[1], नारि कुलच्छनि चाकर चोर ।
ई चारूकेँ तुरंत परिहरी, तुम्बा बान्हि फकीरी करी ॥
शनि रवि फरकी, मंगल खाट, ई तीनू ताकए स्वर्गक बाट ।
कपटी मित्र कोशलिआ माय, बुड़बक बेटा टेटा जमाय ।
कहहि 'डाक' चारू परिहरी, बुड़िबक सन शशुरो नहि करी ॥
[2]महतम सौँ भेल बहिया बरी, कहथि 'घाघ' सन्तापहि मरी ॥ 34 ॥

सय्यँमक प्रसंग–

खयलहुँ मरी बिनु खयलहुँ मरी, कहथि 'डाक' जे संयम करी ॥
ई जनु बुझी डाक निबुद्धी, नाशहि काल बिनाशहिँ बुद्धी ॥ 35 ॥

॥ इति गृहप्रकरण ॥

4. खेतीक प्रकरण

बड़द लेबाक प्रसंग–

घुरि घुरि आ[3], दीपक बर जहाँ, बारह वर्ष बड़द रह तहाँ ॥
नाटा बड़दा बेचि कए, दूइ धुरन्धर कीन ।
आपन खेती करि कए, आनकेँ मँगनी दीन ॥
नाटा बड़द, बहुरिआ जोई[4], नहि घर बसए न खेती होई ॥ 36 ॥
बैल कीनए जाइछ कन्ता, कैल गोल के देखह न दन्ता ॥
[5]चरक कसौटी सउरा बान, एहि छाड़ि जनु कीनह आन ॥
ओहि पार मे देखिअह [6]मैना, एहि पारसँ फेकिअह बैना ॥ 37 ॥

हलचक्र–

जाहि नखत्ता[7] रवि कर बासा, तासौँ तीन दियो हरनासा ।
वृषभ विनाश उपजए नहि धान, पाटा[8] वेबिहि आनन्द किसान ॥

1. घोड़ल । 2. मालिक । 3. लोक बड़द लग आबए । दीप नित्य बरए । 4. योषित् (स्त्री) । 5. उज्जर वा श्यामल (सिलेब) कसल बान्हक । 6. जाहि बड़दक सींग हिलैत हो । बेना = निर्धारित मूल्यक किछु अंश । 7. जाहि नक्षत्रमे सूर्य रहथि ताहिसँ तीन नक्षत्र तक अधलाह फल हो । 8. दोसर खण्ड (पट्टी) तीन नक्षत्र ।

लगना[1] तीनि उपज नहि चास, बहु विधि लाभ पंच कह आस।
पलबा[2] तीनि तीनि कहए अनन्दा, तीनि महादेव सभ सौँ दन्दा[3] ॥
करहा[4] तीनि उपज नहि धान, बेवि[5] राइ ले आन किसान ॥ 38 ॥

हर जोतबाक-

पड़िबा बड़े धुरन्धर, छठि आठे हर जाय ।
चौदह चौठि अमाबस, अयलो हर बिठाय ॥
साते पाँचे तीतिया, दशमी एकादशि जीव ।
एहि तिथि हर जोतिए, ताहि प्रसन्न हो शीव ॥
स्वा. रो. ह. उ. पु. पु. तेउ, बु. शु. चं. गु. बार कहेउ।
ए.तृ.पा.सा. तिथि लहेउ, खेती कर 'डाक' कहेउ ॥ 39 ॥

बखार बन्धन आदि-

बुध बखार, बिहप्फे[6] बीज, शुक्र हर जोतबह नीज ॥ 40 ॥

सीरपंचमीक हर ठाढ़ करबाक फल-

जाहि नखत्रा[7] उगै सूर, ता सौँ आठ परिहर दूर ।
बारहम सोड़हम बीसम वारि, शेष नखत्रा परिहरि चारि ॥
सर्व्व युक्ति सौं जाएब खेत, उत्तर दीश सँ धरब सचेत ।
बड़दा जोतब ठीक कए, लागन धरब दीढ़ कए ॥ 41 ॥

बड़दक चेष्टाक फल-

बड़दा मूते खेत दहाए, खसै खेत जौँ बड़द पड़ाय ।
गोड़ा झाड़ की मूड़ा झाड़, तौँ नहि नीक जौँ खसै फार ॥
[8]ईशा टुटए सून हो कोर, लागनि टूटए बड़द लिए चोर ।
जूअठ टूटए तोँ शुभ होए, बैसे कुदे लादे गोय ॥
तत जानी कृषी भल होय, 'डाक' कहै छथि निश्चित सोय।
खुर सिंग सौँ माटी लीए, बहुत सुख की मानहि दीए ॥ 42 ॥

---

1. तेसर खण्डक तीन नक्षत्र । 2. तकर बादक तीन तीन नक्षत्र । 3. झगड़ा । 4. तीनक समूह । 5. दोसर। 6. बृहस्पति । 7. नक्षत्र । 8. हरीश।

खेत जोतबाक-

ऊँचे नीचे करी चास, भाइ भतीजे करी बास ।
सए छाड़ि कए करह पचास, बड़दे करतहु बड़दक घास ॥ 43 ॥
थोड़ कए जोतिअह अधिक मइअबिअह, ऊँच कए बन्हिअह आरि ।
जौँ खेत तैओ नहि उपजहु, 'डाक' केँ पाड़ह गारि ॥ 44 ॥
बरदा बहए तँ अपनहुँ बही, नहि बही तँ बैसलो रही ।
जे कहए हर बहए कहाँ, कहए 'डाक' घण्टो नहि तहाँ ॥ 45 ॥
पाही जोतए ओ घर जाए, डाक करथि की तकर उपाय ॥ 46 ॥

गृहस्थी-

छोट छोट घर बान्ही चौघरा, नामे फार जोताबी हरा ।
थोड़े थोड़े बेचि कए किनहि माछ, ताहि घर लक्ष्मी खल खल नाच ॥
सए छाड़हु अरु करह पचास, नीच ऊँच कए जोतह चास ।
नित्तह खेती दोसँझ गाय, जे नहि देखथि तकरे जाय ।
घर बैसल जे बनबथि बात, देह मे वस्त्र ने पेट मे भात ॥ 47 ॥

धान बोएबाक-

पुष्य पुनर्व्वसु पेलिबह धान, मघ असरेसा कादो सान ॥ 48 ॥

रोपबाक-

काशी[1] कुशी चौठी चान, आब की रोपबह खेते धान ।
भारे बीआ बोझे धान, आबहुँ बैसह घर किसान ॥
आषाढ़ रोपी तान बितान, सावन रोपी लगकए धान ।
भादब रोपी ककोड़ाक बान, तीनू काटी एक समान ॥ 49 ॥

खेती स्वतन्त्र-

बापे पुत्ते करी चास, बापक मुइले भाइक आस ।
आनक संग करी ने चास, ने अन्न ने गामहि वास ॥ 50 ॥

---

1. भादव कृष्ण एकादशी । दोसर अर्थ- काश फुलाए । कुशी आमावास्या ।

खेतीक प्रसंग अन्य बात–

भादव चारि ओ आसिन चारि, अन्त आदि आठ जोड़ि विचारि ।
कहए डाक करावक वपन, कोठी भरि भरि राखब अपन ॥
जा धरि रहथि बीछक सूर[1], ता धरि बविअह जओ मसूर ।
वेदविहित नहि होवे आन, तुला विना नहि फूटए धान ॥ 51 ॥
आधा चितरा राइ मुड़ाइ, आधा चितरा जओ केराइ ।
विशाखाक आठ, जहाँ मन हो तहाँ काट ॥ 52 ॥
सुख सुखराती देवउठान, तकरे बारहेँ खेत खरिहान ।
तकरे बारहेँ करी नवान, तकरे बारहेँ कोठी धान ॥ 53 ॥

वर्षफल

साओन कृष्ण एकादशी, रोहिनि जेते होय ।
तेते समया जानिए, खड़ी घसए नहि कोए ॥
तिथि बढ़ए तोँ धान नशाबए, नक्षत्र बढ़ए तोँ धान उपजाबए ।
तिथि नक्षत्र होबए समतूल, पुहुमी[2] उपजए तूलम तूल ॥ 54 ॥
कृत्तिक होएतहु कटिमटि[3], रोहिनि होए सुकाल ।
जो मृगशिरा आबि पड़ए, पड़ए अचक्क अकाल ॥
जब जनिहह खरचाक हीन । कितिका मे तोँ बोअह चीन ।
अदरा मास मे बोअए साठी[4] । दुख केँ मार, निकालि लाठी ॥ 55 ॥

साओन शुक्ल सप्तमी–

(1) शुभ

साओन शुक्ला सप्तमी, छपिकेँ ऊगहि भानु ।
तौँ लगि मेघा बरिसए, जौँ लगि देव उठान ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, रैनि होहिँ मसिहारि ।
कहए 'डाक' सुन भाँडरी, पर्व्वत उपजए सारि[5] ॥

---

1. वृश्चिकक सूर्य । 2. पृथ्वी । 3. किछु किछु । 4. गम्हरी । 5. धान ।

सावन शुक्ला सप्तमी, बादर बिजुरी होय ।
करि खेती पिया भवनमे, होय निचिन्त रहु सोय ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, रिमिझिमि बरिसए वारि ।
सुतहु पिया निचिन्त भय, बन्हए ने सारिक आरि ॥ 56 ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, जोँ बरिसए घहराय ।
ता लगि मेघा बरिसहिँ, पुहमी धूरि मेटाय ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, छपि कें ऊगथि भानु ।
मूसिन पूछय मूस सँ, कहाँ करब खरिहान ॥ 57 ॥

(2) अशुभ-

साओन शुक्ला सप्तमी, जौँ गर्जे अधरात ।
तोँ जाहू पिआ मालवा, हम जाइब गुजरात ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, ठह ठह रैन करन्त ।
की जल भेटए गंगतट, की तिय कूप भरन्त ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, लुक दय उगए सूर ।
हाँकहु पिआ हरदा-बरदा, वर्षा गेल बड़ी दूर ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, निर्म्मल चान उगन्त ।
की जल मिलए समुद्रमे, कामिनि कूप भरन्त ॥ 58 ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, मेघ न छाजए रैन ।
कहहि 'डाक' सुन 'भाँडरी' वर्षा हो गेल चैन ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, गगन स्वच्छ जोँ होय ।
कहहि 'डाक' सुन 'भाँडरी', पुहमी खेती होय ॥ 59 ॥

कर्क संक्रान्तिक-

कंकड़ भीजहिँ कंकड़ी[1], सिंह उबारय जाए ।
कहहि 'डाक' सुन 'भाँडरी', कुत्तो अन्न न खाए ॥

---

1. कर्क- साओन । सिंह- भादब ।

कंकड़ सुखहि कर्कमे, भीजए सिंह सिआर ।
अन्न महग्गा हो कहहि, सूनल 'डाक गोआर' ॥ 60 ॥

आर्द्राक आदिमे वर्षा-

आदि ने बरिसय आदरा, हस्त ने बरिस निदान[1] ।
कहहि 'डाक' सुन 'भाँडरी', किसान होयत पिसान ॥
चढ़िते बरिसए आदरा, उतरत बरिसए हस्त ।
कतबो राजा डाँरए, रहए अमन्द गिरहस्त ॥ 61 ॥

पूसी अमावस्याक फल-

सोम शुक्र अरु वीफे बार, बुध अमावस पूस मझार ।
खेती कय नर सोबहुँ जाय, उपजए अन्न हर्ष महि छाय ॥ 62 ॥

सस्ती महगी रौदी विचार-

शाके सम्वत् बर्षा विश्वा, जोड़ि करी एक ठौर ।
सातक भागे भाजिए, जे किछु बाँचए और ॥
एके छक्के सम करि जान, सुन पड़य तोँ काल बखान ।
जोँ पुनि बाँचए दुइ चारि, महगो अन्न बेशाहे झारि ॥
तीनि पाँच जौँ बचि जाय, माँटिक मोलेँ अन्न विकाय ॥ 63 ॥

दिनविशेषेँ संक्रान्तिक फल-

शनिवासर जौँ रवि परवेश, धान नाश कर उजड़ए देश ।
मंगल दिवस अग्नि भय होय, गुरुवारहि पुरहितहि खोय ॥ 64 ॥
बुध परवेश वृष्टि बहु होय, शुक्रहिँ अन्न बढ़ाबए सोय ।
रवि अरु सोम प्रजा दुख पाबय, परबेशक फल 'डाक' इएह गाबय ॥ 65 ॥
रवि कुज शनि हो संक्रान्ति, राजा अग्नि घोर भयभाँति ॥
बुध चन्द्रहि जौँ हो संक्रमन, सस्ती कल्यान शोभित जन ।
गुरु शुक्र जौँ हो परवेश, धान्यवृद्धि सौँ 'डाक' निकलेश ॥ 66 ॥

---

1. अन्त ।

अधलाह वर्ष-

दिनमे मेघ रातिमे तारा, कहए 'डाक' वर्षा गेल मारा ॥
शनि मंगल जोँ हो शिवराति, पछबा वह जौँ दिन ओ राति ।
घोड़ रोड़ टिड्डी जौँ उड़ए, राजा मरए की परती पड़ए ॥ 67 ॥
जाही होबए छेदा[1] बेदा, ताहि चुमाबी गाय ।
ताही होबए होलाहोली, पुहमी रकत लोटाए ॥
रवि शनि मंगल वारकेँ, स्वाती नक्षत्र जौं होइ ।
दीप मालिका ताहि दिन, छत्र भंग फल जोइ ॥
गर्भस्रवत बहु तीयकेँ, पर्वतहुँ गिर जाहि ।
युद्ध उपद्रव बहुत विध, रोग बहुत जग माहिँ ॥ 68 ॥
स्वाती जौँ दीआ बरए, विशाखा खेलए गाय ।
नर अवश्ये जूझञें, अन्न महघ भए जाय ॥
दीप जलए स्वाती दिन, गोधन होए विशाख ।
निश्चय जानहु 'डाक' कह, नाशय उपजल शाख[2] ॥ 69 ॥

होलिका दाहमे बसातक फल-

फागुन पूनो दिवस मे, होली दाह जबे होय ।
वायु बहन के फल कहह, परम विचारे सोय ॥ 70 ॥
पुरिबा बहए परम सुख पाबए, राजा के मन मोद बढ़ाबए ।
दक्षिण बहए परम दुखदाइ, उजड़ए प्रजा महगी महि छाइ ॥
पच्छिम पवन बहए यदि सुन्दर, समय प्रजा भरिपूर वसुन्धर ।
पवन पूर्व यदि बहए सुहाई, किछु वर्षा किछु रौदी जाई ॥
वायु दक्षिणी धन कर नाश, धान नष्ट कए उपजय घास ।
उत्तर पवन बहए झड़ि लागिअ, पृथिवी पानी अनरथ पाड़िअ ॥

---

1. जाही दिन जयन्ती छेदन (विजय दशमी) हो, सएह दिन गोवर्धन पूजा (कातिक सुदि पड़िब) आ होली (फागुन पूर्णिमा)मे पड़ए, तँ देशमे युद्ध हो । 2. अन्न ।

'डाक' कहए यदि चारू वायु, नृपति प्रजा सब जीव डराउ ।
बहय वायु आकाशे आय, महि समस्त संग्राम कराय ॥ 71 ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा मे बसातक फल–

मास अषाढ़ पूर्णिमा गमना, ध्वजा बान्हि के देखह पवना ।
पूरब सौं जौँ वायु चल आबय, उपजय धान मेघा झड़ि लाबय ॥
दक्षिण सौँ बह मलयानील, मध्य समय जूझए बलवीर ।
पछबा बहए नीक कय जानब, अति उलास किछुए भय मानब ॥
उत्तर सौं उपजए धन धान, धान पान सब खाय किसान ।
जोँ ई ध्वजा रहए ब्रह्मण्डा[1], पड़ए अकाल डोलए नव खण्डा[2] ॥
पश्चिम बहए तृणहि उपजाबए, सम्पति प्रजा बहुत पूत पाबए ।
उत्तर बहए धान्य बहु होई, ईशान अनावृष्टि कर सोई ॥ 72 ॥

वर्षक राजा आदिक फल–

बुध राजा मंत्री कान[3] अन्नक सुखे चलब उतान ।
शनि राजा मंगल मन्त्री, नहि हो धान ने होबए यन्त्री ॥
एक राशि छओ गरहक भोग, ताहि वर्ष बहु पीड़ा रोग ।
कहए 'डाक' ई गोलक योग, युध कारण इन्द्रहुँ काँ शोग ॥ 73 ॥
चैत त्रयोदशी शनिक योग, नहि हो अन्न 'डाक' के भोग ।
पाँच सूरजहिँ[5] मास तुलाय, ताहि वर्षमे 'डाक' लजाय ॥
की अति रौदी की अति वृष्टि, की अति क्षय अति मंगल सृष्टि ।
फाल्गुन मंगल होए पाँच, पूसहु मे पाँच कुबड़ा[4] नाच ।
काल पड़ए तेहि सालहि घोर, 'भाँडरि' सुनह बात ई मोर ॥ 74 ॥

कीड़ा नाशक अवधि–

मग्घा मकरी पुरबा डाँस । उतरा मे हो सबहक नाश ॥ 75 ॥

---

1. आकाश । 2. नवो द्वीप । 3. शुक्र । 4. रवि दिन । 5. शनि ।

5. वर्षा प्रकरण

मेघ गर्भ-धारण-

पूस अन्हरिया जत दिन मेह, साओन सुदि तत दिन जल देह ।
माघ सुदि जत दिन मेह जान, साओन तत दिन वर्षा मान ॥
माघ वदि जत मेघ देखाय, भादव सुदि तत वर्षा आय ।
फाल्गुन सुदि जत लागए बादर, भादव वदि तत वृष्टिक आदर ॥
आसिनहु मे एहि विधि जोँ देख, फागुन सुदि मे डाकक लेख ।
चैत वदि जौँ मेघा लाग, आसिन वदि कातिक सुदि भाग ॥
जेठ सुदि अष्टमी सँ देख, चारि दिन मन्द वायुक लेख ।
गगन सुन्दर घन देखल जाय, मेघ गर्भ कहु 'डाक' बुझाय ॥ 76 ॥

मास विचार-

अगहन-

अगहन वदि तिथि अष्टमी, जोँ मेघा दर्शन्त ।
ओ मेघा साओन भरि, कहए 'डाक' वर्षन्त ॥
अगहन सुदि दशमी तिथि, द्वादशि कातिक राति ।
पौष पंचमी आर सुनू, माघ मास बरसाति ॥ 77 ॥
ई सब दिन यदि मेघ देखी, चारि मास वर्षा अति पेखी ॥
धन[1] ओ राजा धन ओ देश, जहाँ बरिस्से अगहन सेस ॥
अगहन दोबर, माघ सबाइ, फागुन वरसे घरहु के जाइ ॥ 78 ॥

---

1. धन्य ।

पूस

[2]दशतारक–

मूल आदि भरणी केर अन्त, चन्द्र चार तेँ गर्भ कहन्त ।
कारी घटा गगन मे छाबए, बहए पवन वृष्टि नहि लाबए ॥
ओ दशतारक नीक कहाबए, वर्षा कयकेँ अन्न बढ़ाबए ।
जौं दशतारक वर्षा होअ, पुहमी धूरि लोटाबए सोअ ॥ 79 ॥

अमावस्या–

काहे जोइसि लिखि पढ़ि मरसि, पूस अमावस लिखि नहि धरसि ॥ 80 ॥
पौष अमावस यदि पड़य, सोम शुक्र गुरु दिन ।
जल बरसय बहु अन्न हो, प्रजा मुक्त हो रिन ॥
पौष अमावस यदि पड़य, शनि रवि मंगल दीन ।
'डाक' अन्न महगी होबए, जल बिनु तलफय मीन ॥
पौष इजोड़िया सप्तमी, अष्टमी नवमी बाज ।
'डाक' जलद देखय प्रजा, पूरय सब विधि काज ॥ 81 ॥
पौष वदि सप्तमी तिथि माँही, बिनु जल बादर गर्जत आँही ।
पूनो तिथि साओन के मास, अतिशय वर्षा राखहु आस ॥
पौषवदी दशमी तिथि माँही, जो वरषय मेघा अधिकाँही ।
तोँ साओन वदि दशमी दरस, ओ मेघा पुहमी बहु बरष ॥ 82 ॥
रविआ[2] रविसुत ओ अंगार, पूस अमावस कहल 'गोआर' ।
मूल विशाखा श्रवणा पुरिबा, ई जँ होए अमावस पड़िबा ।
अपन अपन घर चेतहु जाय, रतनक मोलेँ अन्न बिकाय ॥
पानी बरसय आधा पूस, आधा गेहूँ आधा भूस ।
पौष अमावस तिथि विषय, होबए मूल नक्षत्र ।
चारू वायु बहए पुनि, सुनले हओ गिरहस्त ॥

---

1. पूस मासमे मूल सँ भरणी तक दश नक्षत्र दशतारक कहबैछ ।
2. रवि, शनि ओ मंगल ।

बाँधो अपनी झोपड़ी, निश्चय लो मन मान ॥
वर्षा अतिशय हो मही, कहय 'डाक' परमान ॥ 83 ॥

माघ

माघ वदि सप्तमी के ताहि, जोँ बिज्जू चमकय नभ माहि ।
मास बारहो बरषए मेह, मत सोचहु चिन्ता तजि देह ॥
माघ अन्हरिआ सप्तमी, घन बिजुरी दमकन्त ।
बारह मास बरसए जलद, जटा कटाबह सन्त ॥
माघ सुदी पड़िबा के मध्य, दमकय बिज्जु गरजय बज्ज[1] ।
तेल अरु सुरही[2] दिन दिन भार, महगी होबए 'डाक' गोआर ॥ 84 ॥
माघ वदी तिथि अष्टमी, दसमी पूस अन्हार ।
'डाक' मेघ देखी दिना, साओन जलद अपार ॥
मास मास जँ होअए पानि, अन्न सृष्टिमे निश्चय जानि ॥
माघ बरिस्सय तीनि लय जाय, गेहूँ गाय बेमाय ॥
माघ द्वितीया चन्द्रमा, वर्षा बिजुली होए ।
'डाक' कहथि सूनह नृपति, अन्नक महगी होए ॥
माघ तृतीया सुदिमे, वर्षा बिजुली देख ।
'डाक' कहथि जओ गहुँम अति, महग वर्ष दिन लेख ॥
माघ सुदी के चौथ मे, जोँ लागय घन देख ।
महगी होबए नारिअल, रहए न पानहि शेष ॥
माघ पंचमी चन्द्र तिथि, बहए जोँ उत्तर वाय ।
तौँ जानहु भरि भाद्रमे, जल बिनु पृथिवी जाय ॥
माघ सुदी षष्ठी तिथि, यदि वर्षा नहि होए ।
'डाक' कपास महग मिलय, राखए ता नहि कोए ॥ 85 ॥
माघक गरमी जेठक जाड़, पहिला पानि भरि गेल ताल ।
कहए 'घाघ' हम होएब योगी, कुआँक पानिए धोअए धोबी ॥

1. वज्र । 2. मद्य ।

माघ सुदि जओँ सप्तमी, सोमवार दीसन्त ।
काल पड़ए, राजा लड़ए, सगरो नगर, भ्रमन्त ॥
सोमवार मह यदि पड़य, माघ सुदी तिथि सात ।
'डाक' नृपति मँह युद्ध तहिँ, प्रजा काल मुख जात ॥
अन्न महग जानहु हे मीत, माघ मासमे खसए न सीत ॥ 86 ॥

5. फागुन

फाल्गुन सुदि तिथि पञ्चमी, शनि मंगल दिन होय ।
'डाक' वर्ष महगी पड़ए, बीज न छीटय कोय ॥
फागुन अमावस मंगलवार, अन्न संयोगे मनहि विचार ।
अवस अकाल पड़य तेहि वर्ष, कहए 'डाक' तेजहु मन हर्ष ॥
शुदि फागुनके सप्तमी, नवमी तिथि अरु अष्टमी ।
ता दिन मध्य जौँ मेघा गर्जे, तौँ अकाल जानहु तू सर्वे ॥ 87 ॥

5. चैत

चैत मास यदि तप्पय जाए, नहि मेघ नहि बिज्जु देखाए ।
बहए न वायु अंधेरी पाख, ताकर फल इमि 'डाकहि' भाख ॥
समय होअ शुभ वर्षा होए, राजा प्रजा सुखी हो सोए ।
चैत अंधरिया पड़िबा देख, जौन बार ताकर फल लेख ॥
रविवार तौँ आँधी बहए, मंगल विग्रह युद्धहि कहए ।
बुधवार हो काल जनाबए, शनिवार बहु विपदा लाबए ॥
सरवर नदी कूप नहि पानी, मानुष चौपद मृत्यु बखानी ।
हाहाकार सकल दिश जानू, शनिवार के इएह फल मानू ॥

चन्द्र शुक्र बृहस्पति बार, दुध अन्न सौँ भरे भण्डार ।
चैत वदी पड़िबा फल इहए, सुनिलेहु राजा 'डाकहि' कहए ॥ 88 ॥
चैत्र सुदि अष्टम नवम, वर्षा बिजुली जोइ ।
जा दिशि अइसहु देखहु, ता दिशि काल पड़ेइ ॥
चैत सुदि पड़िबा जे वार, डाक करै छथि तकर विचार ।
रवि शोखा, मंगल बरखा, बुध महगी काटह चरखा ॥
सोम, शुक्र अरु हो जौं आर[1], पुहमी पीड़ित अन्नक भार ॥
चैत अमावस पत्रा देखहु, उदय से जए घड़ी पेखहु ।
ते ते सेर बिकाही धान, कातिकमे ई 'डाक' बखान ॥
चैत मासक दशमी सुदी, बादर बिजुली देखहु यदी ।
ताकर फल इहे नीक न होए, एहि विरुद्ध फल शुभ लेहु जोए ॥
एक बुन्द जल चैतहि होए, सहस बुन्द साओन मे खोए ।
चैत तुअए तीनि लए मोए, कहए डाक जे रौदी होए ॥ 89 ॥

वैशाख

बादर जौं वैशाखमे, देखि पड़य पचरंग ।
अथवा मेघा वर्षहीं, चमकए बिजुली संग ॥
तो चौमासा वर्षहीं, मेघ मही पर जान ।
साओन मे उपजए घनो, नाज[2] अनेक विधान ॥ 90 ॥
होहि अमावस जोँ शनिवार, अरु रविवार के करहु विचार ।
छत्र भंग राजन के होइ, 'डाक' अबल देखी सब कोइ ॥
सुदि वैशाख एगारह बारह, अरु तेरह जोँ बादर छारह ।
अरु बिजुली चमकए बहु ताहि, राज उपद्रव हो महि माँहि ॥
जौँ पहिले वैसाखहि जल, आँसुअहि होएतहु दोगुन फल ॥ 91 ॥

---

1. आर=मंगल । पुहमी–पृथ्वी । 2. सूर्य । 3. अनाज । 4. फसल ।

जेठ

जेठ मास अंधिआरी पाख, ता मह पड़िबा कर फल भाख ।
चैत मास पड़िबा फल जइसन, 'डाक' कहए एहु केर फल तइसन ॥
जेठ वदी दशमी तिथि पेखहु, शनिवार के जौँ इएह लेखहु ।
वर्षा पुहमी पर नहि होइ, विरले जगमे जीबए कोइ ॥
पौख वदीमे मेघा धमकए, अरु घन बिज्जु ता मे चमकय ।
बचय थोड़ चौपद बहु मरही, 'डाक' एकर फल अइसहु करही ॥
जेठ सूदि अट्ठमि सँ देख, चारि दिन मन्द वायुक लेख ।
गगन सुन्दर घन देखल जाए, मेघहि गर्भ कह डाक बुझाए ॥ 92 ॥
सूर्य्य आस जहि ठाम, जेठ अमा सन्ध्या समय ।
राखहु मनमे ध्यान, जेठ सुदी दुतिया तलक[1] ॥
दुतिआ के चन्दा उगए, रवि ते पश्चिम मन्द ।
उत्तर ऊँचो होइके, दक्षिण नीचो चन्द[2] ॥
उत्तम फल जाकर लखे, समय होइ अति नीक ।
दक्षिण ऊँचो अरु उतर, बीच 'डाक' नहि ठीक ॥
जेठ पूर्णिमा दिन मे, पक्षी लोटए धूर ।
कहए 'डाक' तेहि वर्षमे, वर्षा हो भरि-पूर ॥
जेठ पूर्णिमा रातिमे, मेघ भयानक होए ।
किछु किछु पछबा संचरए, महावृष्टि कर सोए ॥ 93 ।
जेठ सुदि तृतीया माँहि, आर्द्रा ऋक्ष मेघ वर्षाहि ।
तौं दुर्भिक्ष पड़ए तेहि साल, कहए 'डाक' हो प्रजा बेहाल ॥ 94 ॥
जेठ मास जोँ सूर्य तपाबए, उष्ण वायु बहु रजहिँ उड़ाबए ।
घनहु मेघ बर्षए महि माहिँ, जौं पृथिवी मे नाहि समाहि ॥
जेठ मास जौँ तपए न सूर, शीत माघमे पड़ए न पूर ।
उपज थोड़, थोड़ जल होइ, कहत 'डाक' मानहु सब कोइ ॥ 95 ॥

---

1. सोरठा छन्द । 2. दोहा छन्द ।

आर्द्रादिक दश ऋक्ष[1], जेठ सुदी मँह जौं तपए ।
तोँ भागए दुर्भिक्ष, चारिहुँ मास बर्षए घन ॥
जेठ अन्हरिआ शनि दिन, जौं दशमी तिथि होए ।
पानि न बरिस मही पर, 'डाक' न जीबए कोए ॥ 96 ॥

आषाढ़

वदि अषाढ़ के प्रतिपदा, यदि मेघा गर्जन्त ।
पृथ्वी पर मानव लड़ए, निहचे[2] काल पड़न्त ॥ 97 ॥
जकर बनल अषाढ़, तकर बारह मास ।
आषाढ़ बदी एक[3] आकाश, गर्जय बिज्जु वायु प्रकाश ॥
तोँ खेती करहु मति कोइ, साओन भादहु सूखा होइ ।
रोहिन हो दशमी तिथि माँही, तब ही सस्ता धान विकाहीँ ॥
सुदि आषाढ़ बुधवार के, शुक्र उदय यदि होए ।
होय अस्त साओन विषय, महाकाल पड़ि तोए ॥ 98 ॥
अखाढ़ नवमी शुक्ल पक्खा, की कर पण्डित लेखा जोखा ॥
बरषए मेघ जँ मूसरधार, माँझ समुद्र मे बगड़ा चार ॥
जँ मेघ बरिसए फूहाफूही, मत्स्यवृद्धि हो डाक कही ।
मन्द मन्द जँ बरखन कर, अन्न वृद्धि सँ पुहमी भर ॥ 99 ॥

साओन

साओन बहए पुरबैआ, बेचह वरदा कीनह नैआ ।
चौठ अन्हरिया साओन माहिँ, जौँ महिपर मेघा वर्षाहि ।
पैंतालिस दिन घन बरसए, साख[4] सबाइ बढ़ मन हरषए ॥
साओन पञ्चमी बरिसए मेघ, चारि मास वर्षा नित नेह ।
सबे सोहावन हर्षित गेह, 'डाक' करी नहि किछु सन्देह ॥
साओन अमावस परहि जोँ, सोमवार मे आए ।
उपज अन्न हो थोड़हि, हाहाकार मचाए ॥

---

1. आर्द्रा सँ दश नक्षत्र । सोरठा छन्द । 2. निश्चय । 3. एकादशी ।

कहुँ बरिसए कहुँ सूखहि, मरए जगत बहु लोग ।
फल जाकर कह 'डाक' इमि, जइसे ज्योतिष योग ॥
दिने बदरा, राति निबद्दर, बह पुरबैया हब्बर हब्बर ।
कहहि डाक बीआ मति खेअह, धानक खेतमे राहड़ि बोअह ॥ 100 ॥

भादव

भादव सुदि पञ्चमी माँहि, स्वाती रिक्ष[1] संयोग हो जाहिँ ।
दोऊ शुभ जग मंगल करए, सुखी लोक सब केर दुख टरए ॥
भादोमे भरणी जब होइ, घटाटोप मेघा नभ जोइ ।
तब जानहु वर्षा सब देश, 'डाक' सुखी जन मिटय कलेश ॥
[2]अउआ-बउआ बहए बतास, तब होबए वरखा के आस ॥
बाजे लखुरी फूले कास, आब गेल बरखा के आस ॥ 101 ॥

आसिन

आश्विन अमावस हो शनिबार, खरबर समय होए विचार ॥
दक्षिण लौका लोकहि, उत्तर गरजए मेह ।
कहहि 'डाक' सुन 'भाँड़री', ऊँच कय किल्ला देह ॥ 102 ॥

कातिक

कातिक सुदि एकादशी, बिजुली मेघा होए ।
'डाक' मास आषाढ़मे, अति वरषा जल होए ॥
शनि रवि मंगल वारकेँ, कातिक अमावस होए ।
आयुष योग पड़ए पुनि, स्वाती नक्षत्र जोँ होए ॥
काल पड़ए तेहि देशमे, अरु बड़ लोक नसाए ।
कहत 'डाक' सुन 'भाँड़री', बुरहु सगुन इएह आए ॥
कातिक सुदि पूनोके माँही, नखत[3] कृत्तिक जो पड़ि जाहीँ ।
तादिन हो संयोगहि बादर, पुनि पुनि बिजुली चमकय सादर ॥
मास चारि वर्षाकेँ सुनह, भलीभाँति वर्षे मन गुनह ।

1. नक्षत्र । 2. आबाजाही बसात (दहो दिसक) । 3. नक्षत्र ।

कातिक मास जौँ दरसे मेह, जए दिन ताकर सुनहुँ खेह[1] ॥
सो मेघा बरिसए आषाढ़, सुन 'भाँडरि' कह 'डाक' गोआर ॥ 103 ॥

मेघप्रवेश लग्नक फल–

मेघ सिंह धनु अग्नि करए, वृष कुम्भ कन्या माटी भिजए ।
मिथुना तुला बह पवना, कर्क्क मीन वृश्चिक जल भरना ॥ 104 ॥

मेघ देखने वर्षा विचार–

कार्तिक द्वादशि मेघा दिस्सए, ताहि दिशा आषाढ़ वरिस्सए ।
अगहन पँचमी मेघ घटा, भरि साओन कवन मेटा ॥
पूस अमावस मेघा कार[2], बरिसए भादब धूआँधार ।
माघ सप्तमी मेघ बदरिआ, चारू मास बड़ जलधरिआ ॥
ई सब जौं एको न देखि पर, मेघ रसातल मे चल जाय ।
कहहि 'डाक' सुन 'भँडरि' रानी, मानुष कूपहि पैसि नहाय[3] ॥ 105 ॥
जोँ मेघा जल बरिसए स्वाती, जोलहिन पहिरय सोनाक पाती ॥ 106 ॥

वर्षाक योग–

शनि रवि मंगल हो शिवराति, हड़हड़ पछबा बह दिन राति ।
नदिआक तीरे तीरे करिअह चास, तकरहुँ रखिअह थोड़बे आस ॥
पछबा बहिके बरिसए शीत, ऊँच जोति पिआ सुतहु निचीत ॥
पहिल पवन पूरब सोँ आब, बरिसए मेघ अति झड़ी लगाब ।
चमके पच्छिम उतरा ओर, तोँ जनिअह वर्षा हो जोर ।
पश्चिम दिश जोँ हरिअर मेह, चमके बिजुली वायुक नेह ।
वर्षा होअए मूसल धार, सात दिन धरि 'डाक' गोआर ॥ 107 ॥
जौं देखी कोदरिकट्टा मेघ, ताहि बीचमे बातक नेह ।
जाय खेतमे बान्ही आरि, 'डाक' कहै छथि समय विचारि ॥
ने ओहि दिन तँ प्रात दिवस, वर्षा होअए अधिक अवस ।
पच्छिम धनुषा, होअए सुखा, पुरब देखाबय, जल लय आबय ॥

---

1. खेढ़ा (विवरण) । 2. कारी मेघ । 3. दू पंक्ति सबैया छन्द थिक ।

दूर माँड़रि[1] लग जल, लग देखलें गेल रसातल ।
चैत थर थर, वैशाख पाथर, जेठक राति चकाचक कर ॥
पूसक उषम, वैसाखक जाड़, पहिले वर्षे भरए गाड़ ।
चढ़ितहिं वर्षा मेघबा झर, कहए 'डाक' ऊँच कए घर भर ॥ 108 ॥
चन्द्र माँड़रिमे[2] देखी तारा, वर्षा होअए मूसर धारा ।
इन्द्रधनुष जौं पूबहि देखी, नीच ऊँच मे एके लेखी ॥ 109 ॥
जे छन हो रोहिनि परवेश, धनपति[3] इन्द्र धर्म जलेश ।
जल पूरित घट रोहिनि परयन्त, कहए 'डाक' फल कही तुरन्त ॥
धनपति[4] जल जौं पूरन देख, भरि सावन जल वर्षा लेख ।
जत खाली तत वर्षा थोड, खाली घैलेँ मूह बिदोड़ ॥
पूब दच्छिन पच्छिम घट जल, भादव आसिन कातिक फल ॥ 110 ॥
आबत दे नहि आदरा[5], जात न दीन्हेँ हस्त[6] ।
ई दूनू तबहिँ गए, पण्डित ओ गिरहस्त ॥ 111 ॥
माघ उषम वैशाख जाड़, पहिले वर्षा भरि गेल गाड़ ।
धोबी धोअए कूआँ पैसि, कहए 'डाक' देहरि पर बैसि ॥
जेठ तपए, अषाढ़ लबए ॥ सिंह गरजए, हाथी[7] भागए ॥ 112 ॥
शुक्ल पक्ष नवमी के वार, मास अषाढक कहओँ विचार ।
भोर झड़ी सुखा करबाबए, पहर तेसर वान[8] कहाबए ॥
मध्य झड़ी धान उपजाबए, सूर्योदय मारी दिखलाबए ॥ 113 ॥
बीफे[9] शुक्रक बादरी, रहए शनीचर छाय ।
कहए 'डाक' सुनु 'भाँडरी', बिनु वर्षे नहि जाय ॥ 114 ॥
शनि सतहिआ[10] रवि बतहिआ, पुक्ख न राखए रुक्ख ॥
अषाढ़क पछवा सोना बहए, सीक डोले मही भरए ॥

---

1. सूर्य ओ चन्द्रमाक मण्डल (प्रकाशक गोलाकार घेरा) । 2. चन्द्र मण्डल । 3. उत्तर, पूब, दच्छिन ओ पच्छिम । रोहिणीक प्रवेश कालमे चारू दिश भरल घैल राखी । रोहिणीक अन्तमे देखि फल बुझी । 4. उत्तर दिशा । 5. आदर वा आर्द्रा । 6. हथिया नक्षत्र वा हाथ मे । 7. सिंह-भादव, हाथी-हस्त । 8. वामन (स्वल्प) । 9. बृहस्पति । 10. सप्ताह भरि ।

रोहिनि लब्बए मृगशिर तब्बए, आर्द्रा देल भुभुआए ।
कहए 'डाक' सुनु सज्जना, कुकुरो अन्न न खाए ॥ 115 ॥
धान पान के नित्य स्नान, कहए 'डाक' ई निश्चय जान ॥
कर्कट छिरकट सिंहे सूखा, कन्या कोने कान ।
बिना वायु वरषे तुला, कत कए रखबह धान ॥
पुक्ख पुनर्वसु भरए न ताल, पुनि बरसए घन अगिलहि साल ।
हथिया झटकए चित[1] मडराए, घर बैसल गिरहथ इतराए ॥ 116 ॥
कलसहि पानी गरम होए, चिड़इ नहाए कि धूर ।
अण्डा लए चुट्टी चलए, तँ वर्षा भरिपूर ॥
सिंहक[2] माथे पछबा बहय, तकरहु मानिअह डर ।
कहहि 'डाक' सुन 'भाँडरी', ऊँच कय बान्हह घर ॥ 117 ॥
जौँ असरेसा गुमकी लाबए, मघा निराबे[3] चारू पाबए ।
जौँ पुरबा पुरबैआ पाबए, सुखले नदिआ नाव बहाबए ॥ 118 ॥
साओन पछबा, भादब पुरबा, आसिन बहए इशान ।
कातिक कन्ता सिकिओ न डोलय, कहाँ कए रखबह धान ॥
साओन पछबा बह दिन चारि, चूल्हिक पाछाँ उपजए सारि[6] ।
बरिसे रिमझिम निशिदिन बारि, कहि गेल 'डाक' वचन परचारि ॥
साओन पुरिबा भादब पछबा, आसिन बहय नैर्ऋत ।
कातिक कन्ता सिकिओ न डोलय, उपजय नहि भरि बीत ॥
साओन पुरिबा बह बिकरार, कोदो मड़ुआक हो व्यवहार ।
खोजत भेटय नहि थोड़ो अहार, कहत बैन इहे 'डाक गोआर' ॥
जौँ साओन पुरबैआ बहए, शाली लागु करीन ।
भादव पछबा जौं बहए, होहिँ सकल नर हीन ॥
साओन बहए जौँ बड़दहाँसा[4], बीआ काटि करह गए घासा ॥ 119 ॥

॥ इति वर्षा प्रकरण ॥

---

1. चित्रा । 4. भादव । 2. नीर (जल) देअए तँ पूर्व फल्गुनी, उत्तरा ओ हस्त तक वर्षा हो । 3. धान । 4. नैर्ऋत्य वायु ।

6. गृहस्थधर्म-प्रकरण

केशवपन (केश कटाएब)-

मंगल के ओ आरे पारे, केश कटाबी कहि गेल गोआरे ।
शनि मंगल के आरे पारे, केश कटाबी कहि गेल गोआरे ॥ 120 ॥
केश कटाबी बापे[1] पुत्ते, नहि कटाबी बापे पुत्ते[2] ॥
जहिखन भेटए नाउ, तहिखन केश कटाउ ॥ 121 ॥

नव वस्त्र परिधान-

कपड़ा पहिरी तीनि दिना, बुध बृहस्पति शुक्र दिना ।
शनि जारए, रवि फाड़ए, सोम करए सुड्डाह ॥
मंगल मारए जीव सौँ, बुध पहिरि घर जाह ।
नँगटे पहिरी, भुखले खाइ, जहाँ मन आबए तहाँ जाइ ॥ 122 ॥

नवान्न-

पूर्वार्द्ध बीच[3] राशि मे पाब, माघ फाल्गुनक शुक्ल सोहाब ।
कृष्णहुमे पंचमी धरि होइ, नन्दा[4] त्रयोदशि छाड़ए सब कोइ ।
सुन्दर तिथि, शुकुश[5] छोड़ि बार, मृदु चर[6] क्षिप्र नक्षत्र अधार ॥
जन्म त्रितारा हरिक शयान, धनु तुलमे नहि करी नवान ॥ 123 ॥

व्रत करबाक दिन

सुतब उठब पाँजर मोड़ा, ताहि बीचमे जन्मल छौँड़ा ।
राजाक बेटा रामलाल, आठ नओमे 'डाक' नेहाल ।
बतहाक[7] चौदह, बतहीक[8] आठ, अन्न त्यागि कए जीवन काट ॥ 124 ॥

मन्त्र-ग्रहण-

चैतहि दुःख वैसाखहि सिद्धि, जेठ मरए आषाढ़ कुबुद्धि ।
साओन पुत्र, भादब दुःख देह, सब सिधि आसिन, कातिक ज्ञानदेह ॥

---

1. सोम एवं बुध । 2. रवि एवं शनि । 3. वृश्चिक पूर्वार्द्ध । 4. पड़िब षष्ठी, एकादशी । 4. शुक्र, मंगल, शनि । 5. मृदु-चि.अनु. रे.मृ. । चर -स्वा.पुन. श्र.ध.श.। क्षिप्र-पुष्य, हस्त, अभि. अश्विनी । 8. बतहा-महादेव, 9. बतही-दुर्गा । हरिशयनी, देवउठान, पार्श्वपरिवर्त्तनी, रामनवमी, कृष्णाष्टमी.

अगहन शुभ, पूस ज्ञानक नाश, माघ मेधा, फागुन विजय प्रकाश ।
कृष्णपक्ष पञ्चमी परयन्त, एहिसँ आगाँ वांछित अन्त ।
शुक्लपक्षमे इच्छित सिद्धि, शुभकारक द्रव्यक हो वृद्धि ॥
दु ती पा सा दस एगारह, कहथि 'डाक' ओ तिथिओ बारह ।
रिक्ता[1] तिथि केँ छोड़बे करी, शेष तिथि मध्यम मानि धरी ॥
अस्थिर[2] मृग चित्र अनु ओ रेव, वसु[3] नक्षत्रे मन्त्र लय लेब ।
शनि कुज छाड़ि सुन्दर शुद्ध काल, चन्द्र तारा लय शिष्य बेहाल ॥
सुन्दर दिन मे गुरु प्रति जाय, मन्त्र लेथि कह 'डाक' जनाय ॥ 125 ॥

मैत्री–

पुष्य[4] चन्द्र मित्र भाग नखत्ता, द्वादश मे शुभ बार लिखत्ता ।
अष्टमी तिथि थिर होएब लग्न, मैत्री कएलेँ हो नहि भग्न ॥ 126 ॥

॥ इति गृहस्थधर्म प्रकरण ॥

7. यात्रा प्रकरण

यात्राक प्रसंग–

उजड़ल बसबह पुछबह ककरा, कोन दिन कोन मुँह करबह जतरा ।
उजड़ल बसबह जएबह कोन भाँति, दिने पूरब, पच्छिम राति ॥
भदबा के नहि जाति ने पाती, दक्षिण उत्तर दुपहर राती ।
गोधुलि दच्छिन, उत्तर उषा, कहए डाक ई सुखम सुखा ॥
पुरब गोधूली पश्चिम उषा, कहहि 'डाक' जे सुखहिँ सुखा ।
शनि मंगल भोजन कय चलबह, गेलहु लक्ष्मी पलटि कए लयबह ॥
शनि रवि मंगल ओ गुरुवार, दक्षिण पवन करब संचार ।
निचित रहह न करह दन्द, एकहु रोआँ न हो भङ्ग ॥

1. चौठ, नवमी, चतुर्दशी । 2. स्वा.पु. श्र.ध.शत. ।
3. धनिष्ठा । 4. पुष्य, मृग, अनु. पू.फ. ।

शनि मंगल पच्छिम जँ जाइ, अनको धन पड़ले किछु पाइ ।
शनि मंगल दच्छिन जँ जाइ, किछु ने किछु तँ पड़लो पाइ ॥
चौठ चतुर्दशि नवमी रिक्ता, अपनेहुँ घर नहि जइहह पुत्ता ।
सोमे बुधे शुक्के उषा, छाड़ह जोतिषी लेखा जोखा ॥
सोमे शुक्के बुधे बाम[1], एहि विधि[2] लंका जीतल राम ।
जोइ स्वर चलए सोइ पद दीजइ, कालहु सँ एक टक्कर लीजइ ॥ 127 ॥

यात्राक मुहूर्त्त-

पड़िबा नवमी शनि सोम श्रवणा, पुब्ब दिशा नहि करिअ गमना ।
अश्विनि पञ्चक बाण[3] गुरु तेरह, ई सब जानि दक्षिण जनि हेरह ॥
रवि छठि चौदसि भरणी पुक्ख, पश्चिम के थिक इहे बड़ दुःख ।
कुज[4] दुज दशमी बुध ओ हस्ता, उत्तर गमने मरण अवस्था ॥
कहहि 'डाक' गमन ने करी, नाशहि प्राण कोटि विधि धरी ।
रवि मूले जे पावी अंका, सोमे श्रवणा बजाबी डंका ॥ 128 ॥

योगिनीक वास-

पत्ती[6] पच्चा खस्सा दोआ । नवे नवे योगिनि होआ ॥ 129 ॥

यात्राक शकुन-

गमन काल जौँ बाम दिश, श्यामा[7] बोलए भूप ।
गोह सूर अरु सर्प के, दर्शन परम अनूप ॥
पुर पइठत जोँ बाम ते, तीतर दक्षिण जाय ।
कहए 'डाक' शुभ सकुन इएह, मिलिहेँ सब मन भाय ॥
पुव्वादिक जँह काल वस, सम्मुख दिग मत जाए ।
कालक सोझें जे नर पड़े, ताहि अवस्से खाए ॥

---

1. वाम श्वास । 2. 'स्वर'-पाठान्तर । 3. बाण=पञ्चमी । 4. ध.श.पूर्वभा.उत्तर भा. रेवती । 5. मंगल द्वितीया । 6. एकर व्याख्या पृ. 105 । 7. सामा, चकबी ।

दिशाशूल लेबइ जे वामा, राहु योगिनी पूठ[1] ।
सम्मुख लेबइ चन्द्रमा, लाबइ लक्ष्मी लूट ॥
नहि किछु जानी, दिग्बल धए तानी ॥
बाम भागमे बोलए गीदर, मन वांछित फल पावहुँ शीघर ॥ 130 ॥
सम्मुख दहिन जोँ बोल सियार, महाअशुभ कह 'डाक गोआर' ॥
निशा राति चहुँ दिशि जोँ बोलए, अशुभक द्वार तुरन्ते खोलए ।
रोगी रीछ सोनारक दर्शन, बामहि भला न दाहिन परसन ॥
नीलकण्ठ केर दर्शन होए, मन वाञ्छित फल पाबए सोए ॥
बोलए खारहा बाम दिश, मीठो बैन सुनाय ।
फल यात्रा सब शुभ लखो, अन धन देहि मिलाय ॥
दाहिन बोलए भय करे, आगे रोगहिँ नाश ।
पीछे बोलए गमन कर, तेजहुँ मन से आश ॥ 131 ॥
प्रात समय मिरगा, बाएँ सँ, दाहिन जाइत जोँ दरसाए ।
साँझ समय दाएँसँ बाएँ, मन वाञ्छित फल निश्चिय पाए[2] ॥
दहिआ[3] लौंगा पक्षिविशेष, दाहिन दर्शन पुण्यहि लेख ॥
वांछित फल तत्क्षण सब पाबए, कहत 'डाक' इहे फल मन भावए ।
वकुल मोर दर्शन शुभकारी, 'डाक' कह सज्जन लेहु विचारी ॥
कोकिल मुर्गा सुग्गर कही, चौथे मैना सुनहुँ ऐ सही ।
बाएँ बोलए तो शुभ होई, 'डाक' कहए मनमे लेहु जोई ॥ 132 ॥
गमन काल मे श्वान[4] यदि, पटपटाब निज कान ।
'डाक' कहथि जे प्राण बचए, सुकर ई एतबे मान ॥
मानव महिष मजार[5] द्वय, श्वान युग्म ओ कीर ।
लड़त देख यदि मार्गमे, 'डाक' कहथि तोँ फीर ॥

1. पीठ दिस । 2. सबैया छन्द । 3. दहिया-दही । लवंग-लग । पक्षिविशेष-नीकण्ठ । 4. कुकुर । 5. बिलाड़ ।

विप्र तीनि, पुनि क्षत्री चारि, शूद्र एक, रस[1] संख्यक नारि ।
'डाक' वचन मन ई सुन धारि, वैश्य दुइ प्राणहुँ सौँ मारि ॥ 133 ॥
यात्रा काल नकुल यदि देखी, नाशल काजकेँ सिद्धे पेखी ।
गमन समयमे काक यदि, बाम भाग मे देखी ।
यश कार्य सिद्धि होए, अगनित धन पुनि लेखी ॥
गमन कालमे बहए बसात, विघ्न बाधा सभे नसात ।
सुन्दर शिशुयुत युवती नारि, भरल कुम्भयुत हो पनिहारि ।
अथवा क्षेमकरी[2] मृदुभाषी, पुस्तक हाथ विप्र गृहवासी ॥
दधि कोकिल पुनि लावा[3] मीन, ई सब नहि छथि यात्रा हीन ॥
लगहरि गाय पिआबथि बाछा, विघ्न दोष सब बिसरू पाछा ।
'डाक' अग्रजानी ई देखि, शुभ यात्रा कहथि सब लेखि ॥ 134 ॥
चलत मार्ग मे तुरग मृग, दहिन बाम से जाय ।
'डाक' मनसि चिन्ता तजी, धन यश वार्ता पाय ॥
अजा एक अरु श्वान षट्, बृषभ एक गज सात ।
तीनि धेनु पञ्च महिस तेँ, यात्रा शुभ न लखात ॥
प्रात बाम दिस तितीर बाजए, पहर दुइ तँ दाहिन गाजए ।
वचन मानि 'डाक'क बड़ भाई, गमन करी कुशल सौँ जाई ।
उलुआ कारी पक्षी श्वान, गर्दभ गीदर वायस जान ।
बामहि भए 'डाक' जोँ चलए, धन यश इच्छा तीनू मिलए ॥ 135 ॥
मंगलक उषा बुधक प्रात, यात्रा करी 'डाक'क बात ।
रवि गुरु मंगल उषा जानी, आन सबहिकाँ फूसि मानी ॥
मास नखत्ता[4] ओ तिथि बार, जत दिन मासक जोड़ि विचार ।
जोड़ल अंक मे सातक भाग, शेष अंक फल कहथि 'घाघ' ॥
एक बाँचय तँ शुभ कहि दीअ, दुइ बाँचय तँ लाभ लय लीअ ।

1. रस–छओ । 2. जगदम्बा पक्षी । 3. पक्षी । 4. नक्षत्र ।

तीनि बाँचय तँ शत्रुक क्षय, चारि काज सिद्ध पाँच संशय ॥
छओ मे मृत्यु शून्य हो दुःख, नीको दिनक यात्रेँ नहि सुख ॥ 136 ॥
सापक बीअरि स्त्रीक रज, वैद्य लवण देखि यात्रा तज ।
अपन घर जौँ धहधह जर, छिक्का हो वा पाग खसि पर ॥
कारी धान, गुर्विणी कान, ई असगुन सब 'डाकहि' जान ॥ 137 ॥
रवि के पान, सोम के दर्पन, मंगल किछु किछु धनिया चर्बन ।
बुधे गुड़ बृहस्पति राई, शुक्र कहए जे दही सोहाई ॥
शनि कहए मोहि अदरक भाव, सकल काज जीति घर आब ।
ने गुनि भदबा ने दिगशूल, कहथि 'डाक' अमृत समतूल ॥ 138 ॥
गामक ठकठक बाँसक वान, हाथ मुँह दए चिल्हका कान ।
ताहू सौं जौं भेटए मलहारी, की होइ राजा की अधिकारी ॥
देहरीक खटखट नगरक बान्ह, चिलका कोड़ महतारी कान ।
ताहू सँ आगाँ भेटए तेली, एक पैर नहि आगाँ पेली ॥
वामे फनिपति दहिन सिआर, 'दही लएह दही लएह' कहए गोआर ।
तकरो आगाँ भेटए मलाह, देखि मीन करी परम उछाह ॥
की होइ राजा की होइ दीवान, कहहि 'डाक' जे परम सुजान ॥ 139 ॥
बड़दा वनचर भरल घैल, वेश्या राजा देवता शैल ।
कहहिँ 'डाक' यात्रा करु जानि, गेलहुँ लक्ष्मी देतहु आनि ॥
भरती सँ खाली भला, जोँ जल भरने जाय ।
कहहिँ डाक सुनु 'भाँडरी' यात्रा अति सुखदाय ॥
कनकट[1] बुचकट काटल केश, बाट चलैत जोँ लागय ठेस ।
केओ पूछए जाएब कतए, भेलो काज विनाशय ततए ॥
खाटक कटकट पुरुषक वान, बाट बैसल जोँ बुढ़िआ कान ।
तीन कोस पर भेटए तेलि, कहए डाक यात्रा दुरि गेलि ॥

1. 'काटल कपचल थकड़ल केश'– पाठान्तर ।

अयशी पापी संन्यासी तेलि, विधवा ब्राह्मणी मिलए अकेलि ।
तापर भेटए विप्र जौँ काना, ब्रह्मलोक धरि बचए न प्राना ॥ 140 ॥
नग्न भग्न गुरुविणी[1] जोई, फकसिआर जोँ आगाँ होई ॥
सुखे हाड़ लए श्वान जोँ चाभए, कहहि 'डाक' जे मरण देखाबए ।
फुटल घैल ओ टुटल खाट, बाट चलैत व्यास[2] काटल बाट ॥
यात्रामे जोँ खसए पाग, ई सब ताकए स्वर्गक बाट ॥
खेत भिखारी गाम सराउ, फेरि पलटि अपन घर आउ ॥ 141 ॥

॥ इति यात्रा प्रकरण ॥

8. अद्‌भुत प्रकरण

हस्त नक्षत्र मे खञ्जन दर्शन

हथिया करबए खंजन दर्शन, की दुख पाबै की हो परसन ॥
कमल गाय घोटक गाज साप, आबय सुन्दर भूमि पर आप ।
खञ्जन बैसल देखी राज, 'डाक' कहथि जे कुशल समाज ॥
भस्महि बैसल अरु नखकेश, भुस्सहिँ देखने दुःख कलेश ।
ऊपर देखने धनक वृद्धि, पूब कहै छथि कारज सिद्धि ॥
अग्नि कोन मे बहुभय होअ, दक्षिण देखने अग्नि उड़ोअ ।
नैर्ऋति देखने झगड़ विशेष, पश्चिम देखने धन अशेष ॥
सुन्दर वस्त्र सुगन्धित जल, वायव देखने ई सभ फल ।
उत्तर देखने सुन्दरि नारि, ईशहिँ[3] मृत्यु कहहिँ पुकारि ॥ 142 ॥

गिरगिटक खसब–

पल्ली[4] खसए जौँ सरटा[5] चढ़ए, एहि विधि फल 'डाक' पढ़ए ।
मस्तक खसए तौँ राजश्री होइ, भालहिँ ऐश्वर्य्य कहए सब कोइ ।
कानहि खसने भूषन लाभ, आँखि पर खसने बन्धु मिलाप ।

1. गर्भवती स्त्री (योषित्) । 2. सिआर (गीदर) । 3. ईशान कोण मे । 4. टिकटिकिया, घरक गिरगिट । 5. बनझाँखुरक गिरगिट ।

नाकपर खसने सुगन्धि देआबए, मुखपर खसने मिष्टान्न खोआबए ॥
कण्ठहि श्री हो, घाड़ बधाइ, बाहु पर खसने विभव बढाइ ।
बाहुमूल मे होए समृद्धि, हाथ दुनू पर धनक वृद्धि ॥
स्तनमूल मे सुन्नर भाग, हृदय खसय तौँ सौख्य सोहाग ।
पीठपर खसय तौँ पृथ्वी प्राप्ति, पाँजरहि खसने बन्धु मिलाप्ति ॥ 143 ॥
डाँढ़ पर खसय तौँ लाभ हो वस्त्र, गुह्यमे खसने मृत्यु अवश्य ॥
जाँघपर खसे धनक हानि, गुदमारगहि रोगभय आनि ॥
ऊपर खसय तौँ वाहन आब, जानु-जंघमे धन चल जाब ।
पएर पर खसने रटना[1] होअ, कहथि 'डाक' एहिविधि फल होअ ॥ 144 ॥
यदि पल्ली चढु नरतन जाय, सरट खसए जौँ ओहि विधि आय ।
फलहुक उलटा करितहुँ जानि, 'डाक' कहै छथि युक्ति बखानि ॥
रातिमे जौँ पल्ली चढ़ए, सरटक खसने 'डाक' पढ़ए ।
मरन निमित्तक होबए सोइ, नहि तौँ व्याधि अवश्ये होइ ॥
खसितहिँ यदि ऊपर चढ़ि जाय, खसने नीक चढ़ए ने सोहाय ॥
एहि विधि पल्लीक बजबो जान, छिक्कहुँमे कह 'डाक बखान ॥ 145 ॥

छिक्का-

दक्षिन छीके धन लए छीजए, नैर्ऋत कोन सिंहासन दीजए ।
पच्छिम छीके मीठ भोजना, गेलहुँ पलटए बायव कोना ॥
उत्तर छीके मान सम्मान, सर्वसिद्धि लए कोन इशान ।
पूरब छिक्का मृत्यु हकार, अग्निकोन मे दुःखक भार ॥
सबकेर छिक्का कहि गेल 'डाक', अपने छिक्कहि नहि करु काज ।
अकाशक छीके जे नर जाय, पलटि अन्न मन्दिर नहि खाय ॥
कार्यारम्भे छीके कोई, सुनिकए मन्त्र बिचारहु सोई ॥
छिक्कें सूती छिक्कें खाइ । छिक्कें पर घर नहि जाइ ॥
सम्मुख छिक्कें दुन्ना लाभ । पाछाँ छिक्कें काज नसाब ॥ 146 ॥

1. पर्यटन, भ्रमण ।

नापसँ छिक्काक फल–

पदच्छाया–

नापो पाएरक छाया अपन, अंगुली से गिन लेहु मनेमन ॥
तामे तेरह आओर मिलाउ, तखन आठहि भाग लगाउ ।
भाग देइ कइ शेष जे बाँचए, कहत 'डाक' ताकर फल साँचए ॥
एक बचए तौं लाभ बुझाबए, कार्यसिद्ध दुइ माँह जनाबए ।
तीनि बचए तौं होबए हानी, चारि रहए तौं शोक बखानी ॥
पाँच रहए भयकाँ उपजाबए, छओ बचए तँ लक्ष्मी आबए ।
सात बचए तँ दुःखहि जाना, शून्य शेष सँ निष्फल माना ॥
पदछाया केर इएह विचार, सुन 'भाँडरि' कह 'डाक गोआर' ॥ 147 ॥
पृष्ठ बाममे छिक्का सुनी, कुशल कार्य सब सिद्धी गुनी ।
सन्मुख छीक कलह बढ़ाबए, दाहिन बित्तक नाश कराबए ॥
अपन छीक सबसँ भयकारी, द्रव्य नाश विपत्ति दुखकारी ।
सरदी–सुँघनी बलक छिक्का, 'डाक' कहथि ई सब फिक्का ॥ 148 ॥

उत्पात दर्शन सँ मृत्युक योग–

छाया जोँ दक्षिण दिश देखी, दुइ शिर छायाक देखने लेखी ।
छाया देखी मुण्डविहीन, चन्द्र सूर्य दुइ राति ओ दीन ॥
दुनू बिम्बमे छिद्र देखाय, उदय अस्तमे बुझल जाय ।
पाँज सौँ पकड़य स्वप्न मे प्रेत, अथवा देखलहुँ होअह सचेत ॥
बज्रपात होय जाहि घर, उल्कापातहु मानह डर ।
कच्छ[1] मच्छ जौँ वर्षन होय, इन्द्रधनुष निशि देखल जोय ॥
अरुन्धती जे देखथि नहि, माथ गिद्ध काक बैसु अपनहि ।
देखी जौँ ई सब उत्पात, करी पवित्र गंगहि निज गात ॥
दश सात पाँच पन्द्रह दिन आँट, डाक तकै छथि दक्षिण बाट ॥
देवता बाभनक पूजा करी, ताही पुण्ये बचबो करी ॥ 149 ॥

2. काछु ओ माँछ ।

अधिक क्रोध होबए अति डर, से जन वर्ष पुरितए मर ।
अचके मोट वा पातर देह, वर्ष बितैतें यमक गेह ॥
देवता पण्डित गुरु भूदेव[1], माय, बाप जेहि राजहिँ सेव ॥
एहि सातोक जे निन्दा कर, कहए 'डाक' वर्षहि यमघर ॥ 150 ॥
दीपगन्ध[2] अरुन्धती तारा, नहि लागए देखने बेचारा ।
'डाक' कहए सुनु 'भाँडरि रानी', जाथि यमक घर वर्षहि मानी ॥ 151 ॥

कन्याक अनिष्ट ग्रह-

जन्म लग्न सँ मंगल सात, चन्द्रहुँ सँ जनिअह ई बात ।
विधवा होइतिह से सुकुमारि, कहए 'डाक' ई ग्रह विचारि ॥
सातम सूर लग्न सँ जकरा, कहए 'डाक' पति छाड़ए तकरा ॥
सातम शनिकें पाप जौं देख, कन्या धरतहु लम्पट वेष ॥ 152 ॥

काक चेष्टा विचार

तनु अति कारी बड़का लोल, पैघ काक अति ऊँचे बोल ।
ताहि काक के बाभन जान, कहथि 'डाक' जे आन नहि मान ॥
पिंगल आँखि नील रंग ठोर, सब देह कारी क्षत्री सोर ।
पांडु नील रंग चोंच ओ देह, कहथि 'डाक' जे वैश्य कहि लेह ॥
भसमक रंग ओ दुबर शरीर, करकर बाजए रह नहि थीर ।
ताहि 'डाक' कह शूद्र पुकारि, एहिसँ आन थिक अन्त्यज हारि ॥
पाँचो मे मुख बाभन जान, असगुन सगुन तकरे जान ।
जौं मांस बोकरए आगाँ आबि, कहथि 'डाक' जे अन्न न पाबि ।
आगाँ लाबय माँटिक ढेप, भूमि लाभ हो ताही खेप ॥

---

1. भूदेव-ब्राह्मण । 2. संस्कृत मूल-

दीपनिर्वाणगन्धं च सुहृद्वाक्यमरुन्धतीम् ।
न जिघ्रन्ति, न शृण्वन्ति, न पश्यन्ति गतायुषः ॥ हितोपदेश ।

रत्न आनि जौँ राखय अग्र, कहथि 'डाक' जे राज हो सग्र ।
काक द्वार मे आबय जाय, कहथि 'डाक' जे पाहुन लाय ॥
जूता छाता शस्त्र सवारी, छाया अंग नाँचे काग कारी ।
स्वामी मृत्यु देखाबय काक, फूल चढ़ाए पूजित हो 'डाक' ॥ 153 ॥

असमयवृष्टिक फल–

राष्ट्रविप्लव

असमय तीनि दीन सँ ऊपर, जाहि देश वर्षा हो भूपर ।
देशप्रधानक होबए मरन, कहथि 'डाक' जाउ ईशक शरन ॥
सात राति जौँ असमय बृष्टि, ताहि देस मे इन्द्रक दृष्टि ।
स्वर्गधामकेँ राजा जाय, कहए 'डाक' कए निश्चय भाय ॥
असमय बरिसय झरझर बादर, समय मे होए मेघवा कादर ।
सकल प्रजागण रोगे पूर, भयक कारणे 'डाक' भेल चूर ॥ 154 ॥

प्रतिमाक हँसब आदिक फल–

प्रतिमा हँसए ओ मूने नैन, रोदन करए बाजए बैन ।
धूआँ उठए ज्वाला देख, अति भय होय देश मे लेख ॥
सकल देव प्रतिमा मे जान, कहथि 'डाक' जे होय नहि आन ॥
बिनु कारण जौँ बुझना जाय, प्रतिमा बाजब सुनलाँ जाय ।
कहए डाक निश्चय भूपाल, देशक राजा मर ओहि साल ॥ 155 ॥

अन्य उपद्रव–

कुकुर बिलारि जौँ वन जाय, वनक हरिना गाम देखाय ।
गगनहि गीध घूमि केँ आबि, भवन भीति बैसय सुख पाबि ॥
गदहाक सन मुह नेनाक उपज, घोड़ा भेड़ा खच्चर अज ।
अनेक रूपक मनुष बिआय, देव प्रतिमा खसल देखाय ॥
जाहि देश ई सब उतपात, देश छाड़ि केँ भागह परात ।
कहथि 'डाक' सब तरहेँ दुःख, लोके खएतहु लोकक मुख ॥

कौआक बीचमे कुकुर बाज, राति दिन जौँ इएह समाज ।
कहथि 'डाक' सुनु भाँड़रि रानी, ओहि देशमे भय अति मानी ॥
मुख्य घरमे काकगन पइस, बजितहिँ गिदरा भोरहिँ बइस ।
गगनहि गिद्धक झुण्ड मँड़राय, अति भय 'डाक'केँ शीघ्र देखाए ।
गीदर दिन मे बोलही, कागा निसि मे बोल ।
कहए 'डाक' पड़ए काल तब, निश्चय घर-घर डोल ॥ 156 ॥

नेनाक दन्तजन्मक प्रसंग-

पहिनहि ऊपर जन्मल दाँत, बापहि खएतहु अथवा मात ।
दाँत लेने जन्मए बाल, माय बाप ओ 'डाक'क काल ।
सबकेँ खाय अपनहुँ नहि बाँच, कहथि 'डाक' तोँ बुझह साँच ॥ 157 ॥

श्वानचेष्टा विचार

दहिन पाएर सँ श्वान यदि, अंग निम्न कुड़िआबए ।
उदर माथ अरु कण्ठ गुद, सुखद राज्य धन पाबए ॥
हृदय नसिका कर्ण युग, नेत्र पृष्ठ ओ भूमि ।
फल सुखदाई हो एकर, 'डाक' कहै छथि जूमि ॥
उक्त अंग सब बाम पग, खजुआबय यदि श्वान ।
फल जानी पुनि अपशकुन, 'डाक' कहथि परमान ॥
श्वान करए क्रन्दन जहाँ, लोटए भूमि पर जाए ।
'डाक' कहथि निश्चय तहाँ, आबए विपदा धाए ॥ 158 ॥

ग्रहण

रविसँ चन्दा सात मे, राहु सँ हो एकन्त ।
तखने गहना[1] लागिए, कथी लए खड़ी घसन्त ॥
जाहि नखत्ते रवि तपे, ताहि अमावस होए ।
किछु किछु पड़िबा संचरए, सूर्यपर्व[2] तब होए ॥

1. ग्रहण ।

एक मास जौँ दुइ गहन, घोर युद्ध भूपतिकेँ तखन ।
जलवर्षा नहि होबए साल, 'डाक' कहै छथि सुनु भूपाल ।
पहिले सूरज पाँछा चन्द, गरहन लगलेँ 'डाक' अनन्द ।
पहिले चन्दा पाँछा सूर, गरहन देखलेँ रोगे पूर ॥
गृहपति घरनी कलह घोर, कहए 'डाक' सुनु कहल मोर ॥ 159 ॥

इति अद्‌भुत प्रकरण ॥

9. प्रश्नप्रकरण

प्रश्नक काल–

पुछनिहारके नामक अक्षर, तिथि दिन मास नक्षत्र एक कर ।
रावणक[3] मुहेँ भाग करू, शेष अंक सौँ फल उचरू ॥
सात पाँच तीनि मंगल बात, नओ एक सिद्धि हाथे हाथ ।
छओ चारि मे कार्य विफल, दुइ आठ नाशे काज सफल ॥ 160 ॥
प्रश्नकर्त्ताक नाम जत अक्षर, जतबा मात्रा फराक कय धर ।
अक्षर दोगुन चौगुन मात्रा, सब मिला कय करी एकत्रा ।
तीनि अंक सौँ भाग कए देख, शेष बाँचए फलक लेख ।
एक शीघ्रे, दुइ फलहिं देर, शून्येँ नाशे 'डाक'क फेर ॥ 161 ॥

बेटा कि बेटी

जत मास गर्भ, नारिक नाम, जत जन बैसल छथि ओहि ठाम ।
जोड़ि अक्षर सब हो जत अंक, साते हरने बाँचए जे निटंक ॥
'डाक' कहए एक दुइ ओ पाँच, बाँचए पुत्र करबिअह नाच ।
एहि सँ आन जौँ बाँचए आबि, कन्या देखलेँ बड़ सुख पाबि ॥ 162 ॥
गाम नाम ओ गुर्व्विणी, नाम अक्षर एक फल ।
'डाक' जोड़ै छथि एक कय, तीनि भाग जे बाँचल ॥
एकेँ पूत, दुइ कन्याक आस, शून्य बाँच तौँ गर्भक नाश ।
प्रश्न फल जौँ उलटा देखी, स्वामीक गर्भ के संशय लेखी ॥ 163 ॥

2. सूर्यग्रहण । 3. दस सँ ।

पहिने ककर मृत्यु-

[1]अक्षर दोगुण चौगुन मात्रा, गामे नामे करी एकत्रा ।
तीन अंक सौँ भाग करी, भाग शेष सौँ उत्तर भरी ॥
एके शून्येँ पहिल पति, दुइ रहय तँ जाय युवति ॥ 164 ॥

10. वनस्पति प्रकरण

केराक वृक्ष रोपबाक-

कहय 'डाक' तोँ सुनह बाभन ! केरा रोपी आषाढ़ सावन ।
तीन सए साठि जे केरा रोपए, आबि निचिन्त घरहि भए सोबए ॥
केरा रोपी काटी नहि पात, केरे देतहु धोती भात ।
फागुन केरा रोपल जाय, मास मास फल बैसल खाए ॥
तीनि विलत्ते तेरह हत्थे, तीनि मासे दिने तत्ते ॥
भादब भदबा सीमी वारि, केरा रोपी दिन विचारि ॥ 165 ॥

अगहनक वर्षाक प्रभाव-

जौँ नहि बरिसए अगहन मेघ, कटहर गाछ केँ होएत घेघ ॥
कहथि 'डाक' जौँ होमए पानि, टुटल डारि कह गाछे कानि ॥ 166 ॥

गाछ मे वृद्धिक उपाय-

गूआ गोबर, बाँसहि माँटि, बाँझ नारिकेर सिक्कटि काटि ।
ओले कुरकुट, छाहे मान, बढ़ए फलए ई 'डाक'क गान ॥ 167 ॥

असमय फूलक फलादेश-

डुम्मरि पीपर पाकड़ि बड़, असमय फूलए जँ देखि पड़ ।
बाभन क्षत्री वनियाँ शूद्र, क्रमसँ लेखा करथि रुद्र ।
जाहि गाम मे देखथि डाक, अतिपीड़ा सँ होथि अवाक ॥ 168 ॥

---

1. द्रष्टव्य- पृ.- (224)

ठनकाक शब्दसँ संकेत–

फागुन केरा, चूत[1] चैत, कृत्तिक ठनकहिँ तार ।
स्वाती ठनकहिँ माष तिले, कहि गेल, डाक गोआर ॥ 169 ॥

लगातार वृष्टि सँ गम्हरीक उपज–

साठी उपजए साठि दिना, जँ घन बरिसए राति दिना ॥ 170 ॥

बाँस आदि फुलएबाक कुफल–

बाँस मान[2] कुसिआर फुलाए, छओ मास मे घर बिलाए ।
हटि कए बान्हह अपन घर, कहए डाक रओ शान्ती कर ॥ 171 ॥

गाछमे अतिशय फूल–फल देखि धान्यक वृद्धि–

अतिशय सखुआक गाछ फुलाए, कलम[3]–शालिक वृद्धि देखाए ।
अधिक फुलए जँ लाल अशोक, रकत धान अति 'डाक' भूलोक ॥
खीरी फुलए तँ उजरा धान, अतिशय उपजए सकल जहान ।
नील अशोक अतिशय फूल, सुङहा धान होएतहु, जनु भूल ॥ 172 ॥
बड़ जँ फूलए अति भकरार, जवक बाढ़िएँ डाक अहंकार ।
तेनुक बाढ़िएँ गम्हरिक वृद्धि, कहथि 'डाक' सुनु 'भाँडरि' सिद्धि ॥
पिपरक फुल–फल हो अतिकर, सकल धान्य सँ घर के भर ।
पाकड़ि मे फूल अतिशय होए, तिल उड़िदेँ घर भरु सबकोए ॥ 173 ॥
शिरिस अधिक फूलए बाग, गहुमक उपजेँ जगतहु भाग ॥
सतपत्ती[4] मे फूल अधीक, जवक उपजा होएतहु नीक ।
कुन्द फूल अति विकसित होए, कपास अधिक हो जानु सबकोए ॥ 174 ॥
अशनक[5] फूल अति हो भकरार, सरिसब चकचक गाम मझार ।
बैरक अधिकेँ कुरथी दून, चिरबेल[6] फूलए चौगुन मूङ ॥
बेँत फूल अति, तेगुन तीसी, पलास फुलए तँ कोदो पीसी ।
तीलवृक्ष जँ अति कय फूल, मूंगा चानी शंख समतूल ॥ 175 ॥

---

1. आम । 2. मएनाक गाछ । 3. करमा धान । 4. छतिमन । 5. पलाशक प्रभेद । 6. करौना ।

इङ्गुद[1] केँ जँ फल अतिशय, सन[2] सँ 'भाँड़रि' घर भरि लय ।
हथिकर्नी जँ अधिक फुलाए, घोड़कर्नी एहिना जँ देखाए ।
क्रमसँ हाथी घोड़ा बढ़ए, कुदि कुदि 'डाक' ताहि पर चढ़ए ।
पाटल[3] फूलए अति फुलवाड़ी, गोधन बढ़तहु सुनह 'भाँडरी' ॥ 176 ॥
केराहि अतिशय फुल फल देखी, बकरी भेँड़ी अधिक परेखी ।
चम्पहि चकचक सोन उपज, मधुरी फूले विद्रुम सहज ॥
कुरबक फूलए उपजए हीरा, नन्द्यावर्ते वैदुर्य धीरा ।
फुलए गाछ मे अति सिनुआरि, मोती बढ़तहु देतहु तारि ॥ 177 ॥
कुसुम फुलाएल अतिशय भाए, शिल्पीजन मन अति हर्षाए ।
लाल कमल अति राजहि सुख, नील कमल मन्त्रीक नहि दुःख ।
सनहुल फुलेँ सेठिक बड़ भाग, धवल कमल बाभन धन जाग ।
कुमदिनि फूलेँ पुरहित नाँच, कहइ 'डाक' ई जानह साँच ॥ 178 ॥

11. नीति प्रकरण

बाभन कुत्ता हाथि, तीनू जातिअहिँ खाथि ।
कायथ कौआ रोड़, तीनू जाति बटोर ॥ 179 ॥
सएमे सूर[4], सहस मे काना, सबा लाख मे इँच्चाताना ।
इँच्चाताना कहए पुकारि, हम मानल कुइरा सँ हारि ॥ 180 ॥
खिचड़ी सङ जे मछरी खाए, मुइला बहुक जे नैहर जाए ।
बाट चलैत जे गाएब गीत, कहए 'डाक' ई तीनू पतीत ॥ 181 ॥
उत्तम खेती मध्यम वान[5], अधम चाकरी, भीख निदान[6] ॥ 182 ॥
तीतरपंखी[7] बादरा, विधवा कज्जल रेख ।
ओ घर करए, ई बरसिए, एहिमे मीन न मेष[8] ॥

1. पितौझिआ । 2. पटुआ । 3. पाड़रि । 4. आन्हर । 5. वाणिज्य । 6. अगतिक गति ।
7. तितीरक पाँखिक समान कारी मेघ । 8. गणनाक काज नहि ।

पछबा सँ जँ उघरए मेघ, विधवा करए सिङार ।
ओ उढ़रए, ई बरिसए, कहि गेल 'डाक' गोआर ॥ 184 ॥
विप्र टहलुआ, चाकर चोर, अरु बेटीकेर बाढ़ि ।
ताहू सौँ धन नहि घटए, करी बड़हि सँ राड़ि ॥ 185 ॥
काँची कुची वेश्या घालए, ब्रह्मण घालए दासी ।
हँसी-ठठा संन्यासी घालए, चोरहिँ घालए कासी[1] ॥
आलस काज किसानहि नासए, चोरहिँ नासए ढाँसी ।
हँसी खुशी संन्यासी नाशए, वेश्या नाश उदासी ॥ 186 ॥
मोट दातमनि जे करए, नित उठि हरिड़ा खाहिँ ।
दूध-सलाका जे पिबए, ता घर वैद न जाहिँ ॥ 187 ॥
खाए कए मूती, सूती वाम, वैद अनएबाँ कोनो ने काम ।
धन मे धान, अओर धन गाए, किछु किछु सोना अओर सब छाए ॥ 188 ॥



1. उकासी ।

डाकवचन संहिता

द्वितीय खण्ड

(डाकवचन संग्रह लोकमुख एवं विविध स्रोतसँ प्राप्त वचन)

खेती प्रकरण

बड़द विचार

काछ कसौटी साँवर वान । ई छोडि नहि कीनह आन ॥
जबे देखियह रूपाधौर । टक्का चारि दिअह उपरौर ॥ 1 ॥

जाहि बड़दक काछ (जाँघक ऊपर) कसल ओ शरीरक बान्ह (गठन) सामला (सिलेब) हो तँ तकरे कीनह । रूपाधौर = रूप्यधवल = चानीसन उज्जर । उपरौर = अनका सँ ऊपर (अधिक) ।

जौं देखिअह बेरैया गोल । ऊठि बैसि कै करियह मोल ॥
बएल मुसराहा जे कोइ लेइ । आय नाश पलमे करि देइ ॥
त्रिया बाल सब किछु छुटि जाए । भीख माँगि कए घर-घर खाए ॥ 2 ॥

बेरैया गोल = फीका गोल (लाल कत्थी रंगक) बड़द किनबामे बहुत विचार करी । मुसराहा = देहक रंग सँ दोसर रंगक नाङरि वला बड़द ।

समथर जोतै, पूत चराबै, चढ़ते जेठ भुसौला छाबै ।
भादो मास उड़ै जौं गरदा, बीस बरस तक जोतै बरदा ॥ 3 ॥

समस्थल = समतल खेत जोतए, गिरहथक बेटा स्वंय बड़द कें चराबए, जेठ मासक शुरुएमे भुस्साक घर छाड़ए आ भादवमे बड़दघारामे धूरा उड़ए (रुक्ख रहए) तँ बीस वर्ष तक बड़द कें जोति सकैत अछि ।

ना मोहि लाधे उलिया कुलिया, ना मोहि लाधे दाईं ।
बीस वरिस तक करु वरदाई, जौं ना मिलिहैं गाई ॥
बड़सिंगा जनु लिअह मोल । कूप खसाउ रुपैया खोल ॥ 4 ॥

बड़द कहै अछि– हमरा छोट कोलीमे नहि लाधह आ ने दहिना मोड़ घुमाबह (बड़द वामे दिस घुमैत अछि) । जँ गाय सँ भेंट नहि कराबह तँ बीस वर्ष तक बड़दक उपयोग करबह' । पैघ सींगवाला बड़द नहि कीनह, एहि सँ

नीक थिक जे रुपैया कें कूपमे खसाए फेकि दएह ।

सींग मुड़ा माथ उठा, मुँह के होबए गोल ।
रोम नरम चंचल करन, तेज बैल अनमोल ॥
सात दाँत उदन्त के, रंग जे काला होए ।
एहु कबहु नहि लीजिए, दाम चाहे जे होए ॥ 5 ॥

उदन्त = बढ़िया, अनुशासित ।

छक्कर कहए हम आबी जाइ । सत्तर कहए गोसैएँ खाइ ॥
नब्बे कहए हम नव दिस जाइ । हित कुटुम पुरोहित खाइ ॥ 6 ॥

छओ दाँतक बड़द खूब दौड़बरहा करत । सात दाँतक गोसाँइ = मालिक कें खाएत आ नौ दाँतक सर्वनाश करत ।

उज्जर बरौनी मूँहक मोआ । ताहि देखि हरबाहा रोआ ॥
सर्वशोख कह देख मोर कला । बे-मेहरी के करओं घरा ॥ 7 ॥

आँखिक पुतरी (बरौनी) उज्जर ओ मुँह पीयर (महुक फूलसन) जाहि बड़द कें हो तकरा देखि हरबाहो कनैत अछि । जाहि बड़दक जीह पर कारी चेन्ह आ भौंह उज्जर हो से सर्वशोख कहबैछ । ओ अपन कला (प्रभाव) देखबैत कहैत अछि जे हम घर कें बेमेहरी (विना स्त्रीक) कए देब । मेहरारू = स्त्री ।

छोट सींग ओ छोटे पूछ । ऐसन कें ले ले बेपूछ ॥
पूछ झबा ओ छोटे कान । ऐसन बड़द मेहनती जान ॥ 8 ॥

पूछ = पुच्छ नाङरि । बेपूछ = बिनु पुछनहिं । झबा = झबड़ल केशवला नाङरि ।

बैल लीजै काजरा । दाम दीजै आगरा ॥
एक बात तों सुनह हमारी । बूढ़ बैल सँ भली कोदारी ॥ 9 ॥

काजरा = कारी आँखिवला । आगरा = अगुआर, पहिनहिं ।

सरङपताली भुइयाँ डेर । अपन खाए पड़ोसिया हेर ॥ 10 ॥

जाहि बड़दक एक सींग ऊपर मुहें आ दोसर नीचाँ मुहें हो तथा जे नीचाँ दिस तकैत रहए से अपन घरकें नष्ट कए पड़ोसियोक हानि करए ।

किसानक हेतु निर्देश-

सुख सुखराती देव उठान । तकरा बारहें खेत खढ़ियान ॥
तकरा बारहें करी लेवान । धान पान सँ आनन्द किसान ॥
तकरे बरहें ओर छोड़ । बहिङा लए लए दौड़-बौड़ ॥
खेती पाती वीनती, ओ घोड़ा के तंग ।
अपने हाथ सम्हारिए, जौं जीने के ढंग ॥ 11 ॥

पाती = पत्र लिखब । विनती = प्रार्थना । तंग = सेवा, सम्हारब ।

ढेला ऊपर चिल्ह जौं बैसए । गली गली मे पानी डोलए ॥
आर्द्रा धान, पुनर्वसु कूख । गेल किसान जे बोअए पूख ॥ 12 ॥

आर्द्रा मे वाउग वा रोपल धान धाने उपजत, पुनर्वसु नक्षत्रक बाउग कएल खखरी (कूख) होएत ओ पुष्यक धान किछु नहि होएत ।

आगाँ गहूम पाछाँ धान । ता कें कही बड़ा किसान ॥
दश वाह के लाड़ा । बीस वाह के गाड़ा ॥ 13 ॥

गहूमक खेतीकेँ अगुआए पाछाँ धान समेटबाक चाही । एक विगहा दश हर बहला पर लाड़ा (दानावला चीज गहूम आदि) वउग करी आ बीस हर बहलापर गाड़ा (रस गारैवला चीज कुसियार) रोपबाक चाही ।

एक हर हत्या, दू हर काज । तीन हर खेती, चारि हर राज ॥
खेती करए खाद सौं भरए । सए मन कोठिला मे लए धरए ॥ 14 ॥

एक हर रखला पर बड़दकें भीड़ पड़लासँ ओकर हत्या बुझू, दू हर सँ कहुना काज चलत, तीन हर सँ निम्मन खेती होएत आ चारि हर त राज लगा देत ।

बीज बाउग-

बुध बृहस्पति दुइ भला, शुक्र न भला वपान ।
रवि मंगल बोनी करए, द्वार न आबए धान ॥
हरिन फलांगे काकड़ी, डेगे डेगे कपास ।
जाए कहह किसान से, बोवए घना उखास ॥ 15 ॥

वपान = वपन, बाउग । वोनी = बाउग । हरिणक एक कुदबाक दूरी पर ककड़ी आदि रोपी । एक डेग पर कपास (बाङ, तूरक बीया) आ कुसियार सघन कए रोपल जाए ।

असकरि बोउ सनैया, संचर नाहि बसात ।
दोसकरि बोउ रहलिया, तर हरदी न नशात ॥ 16 ॥

सनैकें ततेक सघन बाउग करी जे हवोक प्रवेश नहि हो । राहरि केँ दोसकर हरदिक संग खेती करी ।

बाङी मे बाङी करए, करए ईख मे ईख ।
एह घर ऐसन जाएते, सुनि सुनि जनि परसीख ॥ 17 ॥

बाङ (तूर) उपजलहा खेत मे फेर तूरक खती ओ कुसियारक खेत मे दोबारा कुसियारक खेती तहिना नाश होइछ जेना आनक सिखओने घर नाश होइछ ।

बुध बउनी, शुक्र लउनी ।
रोहिण खाट, मृगशिर छउनी ॥
आर्द्रा आएल, धानक बउनी ॥
'डाक' कहै ई बात प्रमान ।
समहरि स्वाती फूटए धान ॥ 18 ॥

बउनी = बाउग, बीआ छीटब । लउनी = कटनी । छउनी = घर छाड़ब । सम्हरि = मीलिकए, पूरा खेत ।

चित्रा दीपक चेतबए, स्वाती गोवर्धन्न ।
डाक कहै हे भड्डरी, अधिक कए उपजै अन्न ॥ 19 ॥

चित्रा नक्षत्रमे दीयाबाती आ स्वाती मे गोवर्धन पूजा (कतिक सुदि पड़िब) हो तँ अन्न बहुत उपजए ।

स्वाती गहूम आर्द्रा धान । पुष्य पुनर्वसु तक परमान ॥
कोठी चढ़ि कए बोले जओ । आधा कातिक हमरो वाओ ॥
जे कहुँ बोअए बीघा चारि । तौं हम देबौ कोठिला फाड़ि ॥
अगहन जौं बोअए जवा । जत्ते बोअए ओत्ते लबा ॥

बुध बृहस्पति दुइ भला, शुक्र न भला वपान ।
रवि मंगल वओनी करए, द्वार न आबए धान ॥ 20 ॥

वपन = बाउग = वओनी ।

खेतीक विशेष विचार

मंगलवारी होए दिवारी । हँसए किसान रोअए व्यापारी ॥
हथिया बरसए तीन होए, शक्कर शाली माष ।
हथिया बरसए तीन जाए, तील कोदो कपास ॥
आर्द्रा गेल तीन गेल, सन साठी कपास ।
हथिया गेल सब गेल, अगिला पछिला चास ॥ 21 ॥

शक्कर = कुसियार । शालि = धान । माष = उड़ीद । आर्द्रा विनु बरसाक बीति गेल तँ सन = पटुआ, साठी = गम्हरी आदि भदै आ कपास बहुत कम होएत ।

खेत करए साँझ घर सोबए । काटए चोर, हाथ धरि रोबए ॥
तीन बैल दो मेहरी । काल बइठे देहरी ॥ 22 ॥

खेती कए निश्चिन्त भए जे सुतै छथि, तनिक धान चोर काटि लै' छनि । तीन बरद आ दू स्त्री जनिका रहैन तनिका द्वारि पर काल बैसल रहै छनि ।

बहुत करए से अओर के । थोड़ करए से आप के ॥
धान पान ओ खीरा । तीनू पानिक कीड़ा ॥
खेती तौं थोड़ी करए, मेहनत करए विशाल ।
राम चाह ओहि मनुष कें, टोटा कबहुँ न चाल ॥ 23 ॥

टोटा = कमी, आपत विचलित नहि करए ।

बान्हि कोदारि खुरपी हाथ । लाठी, हँसुआ राखए साथ ॥
काटए घास ओ खेत निराबए । से गृहस्थ पक्का कहलाबए[1] ॥ 24 ॥

निराबए = पटाबए वा निकाबए ।

---

1. काटै घास निराबै खेत । पूर किसान डाक कहि देत ॥ –पाठान्तर ।

बीजक मात्रा

जओ गहूम बोए पाँच पसेर । मटर के बीघा तीसे सेर ॥
बोवए चना पसेरी तीन । तिन सेर विगहा जोनरी कीन ॥
दुइ सेर मेथी, अरहर माष । डेढ़ सेर विगहा बीज कपास ॥
पाँच पसेरी विगहा धान । तीन पसेरी दलिहन मान ॥
सबा सेर विगहा साँबा मान । तील सरिसओ अँजुरी मान ॥
बर्रे कोदो सेर बोआओ । डेढ़ सेर बीघा तीसी लाओ ॥
एहि विधि सौं जब बोए किसान । दूने लाभ की खेती जान ॥ 25 ॥

जौ–गहूम विगहामे पाँच पसेरी (25 सेर = 16 कि. वाउग करी । जोनरी = जनेर । दलिहन = खेसारी, मसुरी । अँजुरी = आँजुर भरि (दुनू हाथ भरि) ।

आर्द्रा धान, पुनर्वसु पैया । रोबए किसान जे बोअए चिरैया ॥
आर्द्रा रेंड़, पुनर्वसु पाती । लाग चिरैया दीया न बाती ॥ 26 ॥

आर्द्रा मे बाउग कएलासँ धान उपजत, पुनर्वसू मे बाउग सँ बिमारी धरत आ पुष्य मे वाउग सँ किसान कानत । आर्द्राक छिटल धानमे कर ओ सीस मोट होइछ, पुनर्वसुक छिटल पताह होइछ आ पुष्यक छिटल किछु ने होइछ, घरमे दीपो नहि लेसल जा सकैछ ।

अगहन जे कोइ बोअए जौआ । होइ न होइ, न खाए कौआ ॥
आएल स्वाती फूटए धान । विधिक लिखल नहि होअए आन ॥
उगल अगस्त फूलल कास । आब की बोअब निगोड़े माष ॥
अगहनक बारह चैतक आठ । जहाँ मन पड़ए तहाँ काट ॥ 27 ॥

भादवक पूर्णिमा दिन अगस्त्य ताराक उदय भेल । निर्गुण गृहस्थ आब उड़ीद नहि बोअह ।

चना चित्तरा चौगुना, स्वाती गहूम होए ।
मध्यम आगाँ बोइ करि, पछता कर से रोए ॥
चित्रा गहूम, आर्द्रा धान । न उनके गेरुइ, न इनके घाम ॥

पुष्य-पुनर्वसु बोवइ धान । असलेषा जोनरी परमान ॥
पुरबामे जनु रोपह भैआ । एक धानमे सोड़ह पैआ ॥ 28 ॥

चितरा मे बदाम आ स्वाती मे गहूम बाउग कएलासँ चौगुन वृद्धि होएत । चित्राक गहूममे गेरुइ (भूरा रंगक रोग) नहि लागत आ आर्द्राक रोपल धानमे रौदक कुप्रभाव नहि पड़त । पुरबाक धानमे अनेक रोग धरतह ।

रोहिन मृगशिर बोअइ मक्का । उड़ीद मड़ुआ दे नहि टक्का ॥
सावन साँवा अगहन जबा । जेतने बोआ ओतने लबा ॥
घन भला होबए चना, घना न भली कपास ।
जिनके छेहर ऊख हो, छोड़ह उनके आस ॥
पहिले काँकड़ि, पाछे धान । तकरा कही पूरा किसान ॥ 29 ॥

पहिने ककड़ीक खेती कए पाछू धान समेटए से पक्का किसान थिक ।

सनइ घना, बाङ बेगरा, मेढक फन्दे ज्वार ।
डेग-डेग पर बाजरा, करए दरिद्रा पार ॥ 30 ॥

सनइ घनगर, बाङ (कपास) दूर पर, ज्वार बेङक कुदबाक दूर पर ओ बाजरा एक डेग पर बाउग कएलासँ खूब उपजए ।

जोत न माने अलसी चना । पोस न माने हरामी जना ॥
वोअह गहूम काटि कपास । ने हो ढेला, ने हो घास ॥
मार्ग मास माष उखाड़ । तब करि डारह रब्बी यार ॥
तीन किआरी, तेरह कोर । तब देखह ऊख के पोर ॥
पाही जोतए ओ घर जाए । डाक करै ता कोन उपाय ॥
हथियामे हाथ-गोड़, चितरामे फूल ।
चढ़ती स्वाती माष, झम्पा झूल ॥ 31 ॥

उड़ीद कें हथिया नक्षत्रमे हाथ-पएर फैलै छै, चित्रामे फूल आ स्वाती अबैत देरी छीमी झूलए लगैत छैक ।

खाद-

गोबर कचरा नीमक खली । ताहि से खेती दूनी फली ॥
गोबर पानी राखी सड़ए । तब खेत मे दाना पड़ए ॥ 32 ॥

गोबर, पानि आ राख (छाउर) सड़ि कए जखन खेतमे पड़ै छै तखन फसलमे दाना पड़ै छै ।

जेकरा खेत पड़ल नहि गोबर । तहि किसान कें जानह दूबर ॥

छोड़ै खाद जोतए गहिराइ । तब खेती के मजा चखाइ ॥ 33 ॥

खेतक जोत–

जोतए खेत चास नहि टूटए । तेकर भाग अषाढहि फूटए ॥

कचाह खेतकें जोतए कोइ । उगए ने अंकुर नाज ने होइ ॥ 34 ॥

जे किसान खेत जोतए आ जँ चासहिमे (पहिले जोतमे) खेत टुटैत नहि अछि तँ ओहि किसानक भाग्य अषाढ़हिमे फूटि जाइ अछि, खेती नीक नहि होइ अछि ।

धन हरजन जे कंसहि मार । दुर्वासा के सोर उपार ॥

जब मथुरा पर कीन्ह पयान । तब देवता के भए अस्थान ॥ 35 ॥

ओ हरक जन (हरवाह) धन्य थिक जे कंस (खढ़ पतार) कें माटितर दबाए मारि दैत अछि, दूबिक सीर शाखा–प्रशाखा कें उपाड़ि दैत अछि आ मोथा पर आक्रमण कए नाश कए दैछ । तखन ओ खेत देवताक (लक्ष्मीक) स्थान भए जाइछ ।

खेतीक रीति–

जोड़े हरे जोतह चासा । फेरा पचओटा सोलह भासा ॥
हर चलय गुमार । चौकी चलय रेबाड़ ॥
जौँ नहि तमबह माघ वसन्त ।
जँ नहि तमबह घैला सुखन्त ।
तँ की तमबह बेङ कुहरन्त ? 36 ॥
हाँसू खुरपी करिन कोदारि । हरकठ परिकठ खेतक आरि ॥
उस्सर खासर हो जौँबासा । राड़ी खेरही रोपह बाँसा ॥
पुरती सौँ किछु भरती आछा । कहए डाक किछु अक्कठ गाछा ॥ 37 ॥
पुरबा रोपए पूर किसान । आधा खखरी आधा धान ॥
खेती जोरू जोर के । जोर घटए तौं आउर के ॥ 38 ॥

खेती करब ओ स्त्री राखब जोर (शक्ति)वलाकें थिक । जँ तागत घटल तँ ई दूनू अपन रहैतो अनके भए जाएत ।।

वर्षाक योग–

मग्घा लगावय घग्घा, सवाती लावय टाटी ।
कहतारी हाथी रानी, हमहूँ आबत बाटी ।। 39 ।।
कृतिक चुए छओ लए मुए । जौं रोहिनि नहि कादो करए ।।
जौं कृतिकामे बोअए साठी । दुखकें मार निकालि लाठी ।।
जेकर बनल अरदरा, तेकर बारहो मास ।। 40 ।।

घग्घा = लगातार वर्षा । स्वातीमे वर्षा बन्द । हाथी रानी = हथिया नक्षत्र । बाटी = रास्ता । चुअए = वर्षा हो । मुअए = मरए। आर्द्रामे खूब वर्षासँ भरि साल नीक समय रहए ।

अदरा वरषे सब किछु भा । एक जबास पत्र विनु भा ।।
जे न भरे असलेखा-मग्घा । फेर भरे असलेखा-मग्घा ।।
चितरा वरषे माटी मारे । आगे होइ सूइके कारे ।।
जौं वरषे वैसक्खा राउ । एक धान मे दोबर चाउर ।।
सावन पछबा महि भरए । भादब पछबा पत्थल सड़ए ।।
चैतक पछबा भादब जाला । भादो पछबा माघक पाला ।। 41 ।।

आदरा = आर्द्रा । भा = भेल । जबास = एक छोट गाछ । फेर भरे = अगिले साल पोखरि भरत । माटी मारे = माटिक शक्ति कम होएत । चाउ = चाउर । पत्थल सड़ए = पाथर डूमल रहए । जाला = जरए वा जल्ला मकड़ा लागए । पाला = ठंढ ।

चढ़ैत बरसए चित्तरा, उतरत बरसए हस्त ।
केतनो राजा भार दे, हारए ने गिरहस्त ।।
चित्रा स्वाती अओर विशाखा, जौँ बरसए आषाढ़ ।
चलह पिआ परदेश अब, पड़ते भारी गाढ़ ।। 42 ।।

अखाढ़क एहि सब नक्षत्रमे वरषा भेला पर समय बहुत गाढ़ (गहन

समस्यावला) होए ।

जौं पहिले आखाढ़मे, बादर बिजुरी होए ।
तौं जानह वरिसए महि, मघा विना नहि जोए ॥ 43 ॥

आषाढ़ कृष्ण पड़िब कें जौं मेघसँ बिजली चमकए तँ मघा नक्षत्र (भादव मास) सँ पहिने वर्षा नहि हो ।

यात्रा इत्यादि

दिक्शूल–

सोम शनि पूरब नहि चालू । मंगल बुध उत्तर दिस कालू ॥
रवि शुक्के पच्छिम जौं चालू । रोग शोक संकट के पालू ॥
बीफे दच्छिन करे पयाना । पलटि बहुरि नहि ता को आना ॥ 44 ॥

शुक्क=शुक्र दिन । कालू=काल (मृत्यु) । वीफे=बृहस्पति । एकर विपरीत दिस जाएबामे दिग्बल (शुभ) होअए ।

वर्षक राजा–

विजय दशमि जे वारा होइ । संवत्सर के राजा सोइ ॥ 45 ॥

ई डाकक अपन मत थिकनि ।

सात ग्रहक योग–

सात ग्रह एक राशि विलोक । महाकाल के देबए कोक ॥
गहता अत्था गहता ऊगए । ता तेँ चोखे शाख न पूगए ॥ 46 ॥

कोक = निमन्त्रण । गहग अत्था = ग्रस्त (ग्रहण लागल) उदय वा अस्त काल ग्रहण सूर्य वा चन्द्रक हो तँ बढ़िया जकाँ अन्न (शाख) नहि होअए ।

मासमे पाँच शनि आदि–

पाँच शनिच्चर, पाँच रवि, पाँच मंगल जौं होइ ।
छत्र टूटि धरनी पड़ए, अन्नक महगी होइ ॥
माघे मंगल, जेठ रवि, जौं शनि भादव होइ ।
छत्र टूटि धरनी पड़ए, अन्नक महगी होइ ॥ 47 ॥

जँ एक मासमे शनि, रवि आ मंगल पाँच–पाँच दिन पड़ए तँ राजाक

छत्रभंग एवं अन्नक महगी हो । माघ मासमे मंगल, जेठमे रवि ओ भादव मे शनि दिन जँ पाँच टा पड़ए तँ आओरो अधिक अनिष्ट हो ।

दोउ आसिन, दोउ भादो, दोउ अखाढ़ के माह ।
सोना चान्दी बेचि कए, अन्न बेसाहओ साह ॥ 48 ॥

आसिन, भादव वा आषाढ़ मे मलमास पड़लासँ अन्नक महगी होएत । साह = बनियाँ ।

शनिचक्र–

शनि चक्कर के सुनिए बात । मेषक शनि नाशए गुजरात ॥
वृषहिं करए निरोधा चार । भूबइ आबु गौड गिरनार ॥
मिथुना पिंगल ओ मुलतान । कर्कहिं काश्मीर खुरसान ॥
जौं शनि सिंह करए रसरंगा । तो गढ़ दिल्ली होसइ भंगा ॥
जौं शनि कन्या करए निवासा । तो पूरब किछु माल विनाशा ॥
तुला वृश्चिक के शनि जोए । मारवाड़ मे करत विलोए ॥
मकर कुम्भ मे जौं शनि आए । देलो अन्न कोइ नहि खाए ॥
जौं धनु मीन शनिच्चर जाए । पवन चले न पानि बरसाए ॥
कातिक मावस नाशै जोसी । शनि रवि भौमवार जो होसी ॥
स्वाती नखत अरु आयुष योग । जागए काल विनाशए लोग ॥
एहि विधि शनिक दशा अधिकार । कहै 'डाक' ज्योतिषक विचार ॥ 49 ॥

निरोधा चार = एहि चारूमे गतिरोध करए– भूपति (राजा), आबु = आप (जल) वा पंचाम्बु (पंजाब), गौड़ (बंगाल), गिरनार (देश) । विलोए = विलोप (वस्तुक अभाव) । मावस = अमावस्या । जोसी = योषित् (स्त्री) । होसी = होबै ।

संक्रान्ति–

जाहि वारे रवि संक्रमे, तही अमावस होइ ।
खप्पर हाथें जग भ्रमे, भीख न देबे कोइ ॥
जहि वारे रवि संक्रमे, सत्तमि चौथे वार ।
अशुभ परन्ते शुभ करे, जैसे ज्योतिष सार ॥ 50 ॥

रवि संक्रम = सूर्यक संक्रान्ति । जाही दिन संक्रान्ति हो सएह दिन सप्तमी वा चौठ तिथिकें पड़ए तँ अशुभो शुभ भए जाए ।

रिक्ता तिथि अरु शुक्र दिन, दुपहर अथवा प्रात ।
जौं सँकराँति तौं जानिअ, सम्वत महगो जात ।।
ज्येष्ठा आर्द्रा शतभिषा, स्वाति सलेखा माँहि ।
जौं सँकराँति तौं जानिअ, महगे अन्न विकाहिं ।। 51 ।।

संवत् = वर्ष । सलेखा = आश्लेषा ।

कर्क संक्रमे मंगल वार । मकर संक्रमे शनिहि विचार ।।
वारि पन्द्रह मुहूर्त होइ । देश उजाड़ करे जे जोइ ।। 52 ।।

वर्षा आदिक योग

अगहन

मार्ग महीना माँहि जौं, ज्येष्ठा तपै न सूर ।
तो इमि बोलइ भड्डरी, निपटै सातो कूर ।। 53 ।।

सूर = सूर्य । कूर = अन्नक ढेर । निपटै = समाप्त हो ।

पूस

पूस अन्हरिया सप्तमी, जौं पानी नहि देइ ।
तों अदरा बरसए सही, जल-थल एक करेइ ।। 54 ।।
पूस अन्हेरी तेरसें, चहु दिसि बादर होइ ।
सावन पूनो, मावसे, जलधर अति हीं होइ ।। 55 ।।

माघ

माघ सुदी आठें दिवस, जौं कृतिका रिष होइ ।
की फागुन रोली पड़े, सावन महगे होइ ।।
अथवा नवमी निरमली, बादर रेख न होइ ।
तौं तलाब सूखे भला, पुहुमी जल नहि होइ ।। 56 ।।

माघ सुदी पूनो दिवस, चन्दा निरमल जोइ ।
पशु बेचो कन संग्रहो, काल हलाहल होइ ॥
नवमी माघ अन्धारिया, मूल रिच्छ के भेद ।
तौं भादव नवमी दिवस, जल बरसए विन खेद ॥
माघ सप्तमी ऊजली, लाधल मेघ करन्त ।
तौं अखाढ़ मे भड्डरी, घना मेघ बरसन्त ॥ 57 ॥

आठें = अष्टमी । रिष = ऋक्ष, नक्षत्र । रोली = रोड़, कठोर, विवाद। निरमल = शुक्ल पक्ष । पुहुमी = पृथ्वी । कन = अन्नक कण । रिच्छ = ऋक्ष, नक्षत्र ।

अगिन कोण जौं बहे समीरा । पड़े अकाल दुख सहै शरीरा ॥
उत्तर सौं जल फूही पड़ए । मूस साप दुनू अवतरए ॥
माघी शुक्ला सप्तमी, पूर्वोत्तरहि बसात ।
बिजुरी चमकए गगनमे, बादर आबत जात ॥
तो वर्षा हो वर्ष मे, अन-धन होए सुभिक्ष ।
निर्मल मेघा डाक कह, जानउ तब दुर्भिक्ष ॥ 58 ॥

अतवरए = बहार आबए, अधिक देखाए । माघ सुदि सप्तमीमे ईशानकोनक हवा बहए आ बिजली सहित मेघ आबाजाही करए तँ ओहि वर्ष खूब वर्षा भेला सँ नीक समय होएत । जँ मेघ साफ रहए तँ अधालाह समय हो ।

माघ शुक्ल नवमी तिथि, बादर वर्षा होए ।
भादव वर्षा हो बहुत, डाक सुनह सब कोए ॥ 59 ॥

माघी पूर्णिमा मे बसातक फल-

पच्छिम बहए नीक करि जानउ । आगाँ बहै तुषार प्रमानउ ॥
जौं कहुँ बहै इसाने कोना । नापा विश्वा दो दो आना ॥
जौं कहुँ वायु अकासे जाए । पड़ए न बून्द काल पड़ि जाए ॥
दक्खिन-पच्छिम आधो समयो । भड्डर जोइसि अइसो मनियो ॥ 60 ॥

फागुन

फागुन बदि दूजा दिना, बादर होए न विज्जु ।
वरसे सावन भादबा, साधो खेलो तीजु ॥ 61 ॥

दूजा = द्वितीया । विज्जु = बिजलोका । तीज = तृतीया दिन खेलह ।

होली शुक्क शनिच्चरी, मंगलवारी होइ ।
चाक चहोरे मेदिनी, विरले जीबे कोइ ॥
मंगल पड़े तो भू चलए, बुध दए जाए अकाल ।
जौं दिन होए शनिच्चरी, निश्चय पड़ दुरकाल ॥ 62 ॥

चाक चहोरे = चाक पर चढ़ल, चक्कर कटैत । मंगल दिन होली हो तँ भूकम्प हो ।

चैत

चैत मास उजियारे पाख । आठें दिवस बरसते राख ॥
नव वरसे जत बिजुली जोइ । ता दिस काल हलाहल होइ ॥ 63 ॥

चैत शुदि अष्टमी दिन आकाशमे जँ धूरा उड़ए अथवा नवमी मे वर्षा हो तँ जेम्हर बिजली चमकए तेम्हर अकाल पड़ए ।

चैत मास दशमी खरा, जौं कहुँ कोरा जाइ ।
चौमासा भरि बादरा, भली भाँति बरिसाइ ॥ 64 ॥

खरा=रुक्ख, सुखाएल । कोरा=बिनु मेघक ।

एक बुन्द जल चैतहि होए । सए बुन्द सावनमे खोए ॥
चैत शुक्ल पड़िबा दिवस, बादर बिज्जु देखाइ ।
सावन भादव वरसिहए, उपजए नाज सवाइ ॥
चैत मास उजियारे पाख, आठे दिवस बरसत राख ॥
नव बरसए नहि बिजुरी जोए ता दिसि काल हलाहल होए ॥
चैत रोहिणी रोहिणी, एक घड़ी जौं दीख ।
हाथे खप्पर मेदिनी, घर-घर माँगए भीख ॥ 65 ॥

नाज = अनाज, अन्न । आठे = अष्टमी । नव = नवमी । चैत मासक रोहिणी नक्षत्र मे जँ सौर रोहिणी एको दण्ड पड़ि जाय तँ अकाल पड़ए ।

बिजली भली न चैत के, बुन्दी भली न जेठ ।
झगड़ा भला न राज सौं, दिवरो भलो न सेठ ॥ 66

दिबरा = दिबालिया ।

वैशाख

वैशाख शुदि पड़िबा दिवस, बादरि बिजुली होय ।
बिनु दामहिं बेसाहि जे, पूरा साख भरोय ॥
अछय-तीज केँ रोहिनि नाहि । पूस अमावस मूल न जाहि ॥
राखी श्रवणाहीन देखाहिं । पूनो कातिक कृत्तिक नाहि ॥
पुहुमी मे खल बलहि प्रकाशय । कहत भडुली साख विनाशय ॥ 67 ॥

साख=अन्न । अछय तीज =अक्षय तृतीया । पुहुमी = पृथ्वी ।

जेठ

जेठ पहिल पड़िबा दिना, बुध वासर जौं होइ ।
मूल अषाढ़ी जौं मिले, पुहमी कम्पए सोइ ॥
जेठ आगली पड़िबा देखि । कमन वासरे ता कें पेखि ॥
रवि वासर अति बाढ़ि बढ़ाए । मंगल वारे व्याधि बताए ॥
बुधे अनाज महग अति करइ । शनिवासर परजा दुख पड़इ ॥
चन्द्र शुक्र सुरगुरु के वार । होबइ अन्न भरए संसार ॥
रोहिण मे रोहिण पड़ए, एक घड़ी जँ दीख ।
हाथे खप्पर मेदिनी, घर-घर माँगए भीख ॥ 68 ॥

रोहिणी नक्षत्र मे दैनिक गतिक रोहिणी एको घड़ीक हेतु पड़ि जाए तँ भीख मँगाबए ।

जेठ उजारे पाखमे, आर्द्रादिक दश रीछ ॥
सजल होए निर्जल कहो, निर्जल सजल परीछ ॥
जेठ मास जौँ तपै निराशा । तौं जानह बरसा के आशा ॥
उतरे जेठ जौं बोले दादर । कहए भड्डरी बरसए बादर ॥
जौं बदरी बादर सोँ खमसए । कहइ भड्डरी पानी बरसए ॥ 69 ॥

रीछ = ऋक्ष, नक्षत्र । परीछ = परीक्षा करह । निराशा = पानिक अभाव । दादर = बेंग । बदरी = मेघिन मेघसँ मिलि शब्द करए ।

रोहिन तपे, कृतिका छीटए, बिजुरी बरसा मान ।
मृगशिर बहै समीरिआ, अन धन अच्छा जान ॥
जत दिन जेठ बहए पुरबाइ । तत दिन सावन धूरि उड़ाइ ॥
कर्क के मंगल होबे जब से । निश्चय वर्षा बरसे तब से ॥
रोहिन गरजए ढन ढन मेघ । कृतिका तपे न बरसए मेघ ॥
मृगशिर पूरा तपते जाए । नहि बरखा हो डाक बताए ॥ 70 ॥

रोहिणी नक्षत्रमे सूर्य पृथ्वीकें तपाबथि, कृत्तिकामे मेघ पानि छिटए बिजलीक संग बरखा हो आ मृगशिरामे हवा बहए तँ अन्न धन नीक हो ।

जेठ मास जे निन्द भरि सोअए । तेकर दुःख अषाढ़े रोअए ॥
रोहिन बहए, मृगशिर तपए । राजा जूझए, रैयत खपए ॥ 71 ॥

रोहिणी मे खूब हवा बहए आ मृगशिरामे हरदम रौदे रहए तँ राजा के युद्ध ओ प्रजाक क्षय हो ।

आषाढ़

धुर अषाढ़ के सप्तमी, शशि निर्मल जौं दीख ।
तों पिआ जाएब मालबा, हम एत माङब भीख ॥
नवे अषाढ़ी बादरी, जौं गरजे घनघोर ।
कहए भड्डरी जोइसी, काल पड़ए चहुँ ओर ॥ 72 ॥

धुर=अगिला, शुक्ल पक्ष ।

रोहिन बरसए, मृग तपए किछु-किछु आर्द्रा जाए ।
कहे घाघ घाघिन सुनु, श्वानो भात न खाए ॥
उत्तर चमकए बीजुली, पूरब बहए जँ वाय ।
घाघ कहे सुनु भड्डरी, वरदा भीतर लाय ॥
ना गिनु तिन सए साठि दिन, ना कर लग्न विचार ।

गनु नवमी आषाढ़ बदि, होबइ कोनउ वार ।।
रवि अकाल, मंगल जग डग्गै, बुध समे सम भावो लग्गै ।
सोम शुक्र सुरगुरु जौं होए, पुहुमी फूल फलन्ती जोए ।। 73 ।।
शनि आदित ओ मंगलो, जौं वरसे सरसाय ।
अन्न महग्गा होएते जोरो चलते वाय ।।
चित्रा स्वाती विशाखड़ी, जौं वरसे आषाढ़ ।
चलो नरा विदेश को, पड़ते काल सुगाढ़ ।। 74 ।।

आदित्य = रवि दिन । सरसाय = अधिक जल दए । चित्रा = चित्रा नक्षत्रक दैनिक भोग । सुगाढ़ = अति कठिन ।

आषाढ़ी पूनो दिना, बादर भीतर चन्द ।
नाशे लच्छन काल के, सकल नरा आनन्द ।।
आषाढ़ी पूनो दिना, निर्मल ऊगए चन्द ।
पिअ जाएब तों मालवा, एतहो दुख अरु दन्द ।।
आर्द्रा जौं बरसए नहि, मृगशिर पौन न जोइ ।
तौं जानब हे भाँडरि, बरखा बुन्द न होइ ।। 75 ।।

पौन = पवन, बसात । दन्द = झगड़ा ।

जेठ बीते पहिले पक्खा, अम्बर गरजि पड़ै ।
अषाढ़ सावन नहि बरसए, भादव बरषा करै ।। 76 ।।

पहिल पक्ष = आषाढ़ कृष्ण । अम्बर = मेघ ।

आषाढ़ी सुदि अष्टमी, विजुरी बादरि नाहि ।
हर फाड़ि जारनि करह, बीआ राखह नाहि ।। 77 ।।
रातिक कागा, दिनक सियार । की झड़ बादर की उपटार ।। 78 ।।

रातिमे कौआक बाजब आ दिनमे गिदरक बाजब वर्षाक झड़ी लगबाक अथवा अकालक संकेत थिक ।

साओन

सावन कृष्ण एकादशी, गरज मेघ अधरात ।
तों जाएब पिआ मालबा, हम जाइब गुजरात ।।
सावन बदि एकादशी, बादल ऊगए सूर ।
तौं एह भाषह भाँड़रि, घर-घर बाजए तूर ।। 79 ।।

सूर = सूर्य । तूर = तूर्य, बाजा ।

जौं कृतिका तौं सम वरो, रोहिनि होइ सुकाल ।
जौं मृगशिर आबए तहाँ, निश्चय होइ अकाल ।। 80 ।।

सावन कृष्णपक्षक द्वादशी मे यदि कृत्तिका नक्षत्र होइ तँ समभाव, रोहिणी रहै तँ नीक समय आ मृगशिरा होइ तँ निश्चय अकाल पड़त ।

चित्रा स्वाती विशाखरी, सावन ना वरिसन्त ।
हाली अन्न संग्रह करह, दूनो मोल करन्त ।। 81 ।।

साओन मे चित्रा स्वाती विशाखा नक्षत्र नहि बरसए तँ झटपट अन्न किनह, आगू दुन्ना दाम भए जएतह ।

मृगशिर वायु न बादरा, रोहिन तपै न जेठ ।
आर्द्रा जौं बरसए नहि, कवन सएह असलेठ ।। 82 ।।

असलेठ = आश्लेषा नक्षत्र ।

सावन पहिली पंचमी, आन्धी चलए बयार ।
तोँ जाइब पिआ मालवा, हम जाइब पितुसार ।। 83 ।।

पितुसार = पितृशाला, नैहर ।

मघ के वरसे, मातु के परसे । भूखा न माँगे पुनि किछु हर से ।।
जौं सावनमे बह पुरबैया । बेचि बरद कें कीनह गैया ।। 84 ।।

मघ = मघा नक्षत्र । परसे = स्पर्शसँ वेसी आनन्द मघामे वर्षासँ ।

साओन कृष्ण पक्षमे देखए । तुलके मंगल होए विशेखए ।।
कर्क राशि पर गुरु देखाए । सिंह राशिमे शुक्कर जाए ।।

सरवर सूखए, बरसिए धूर । कहूँ न उपजए सातो तूर ॥
ढेला ऊपर चिल जौं बोलए । गली-गली मे पानी डोलए ॥ 85 ॥

सरोवर = पोखरि सुखा जाए, धूराक वर्षा हो ओ सातो तूर (अन्न = जौ, गहूम, धान, तिल, काउन, साम, बदाम) नहि उपजए ।

पवन थाक, तीतर लबए, गुरु हँसि देबए नेह ।
कहत भड्डरी जोइसी, ता दिन बरसए मेह ॥
बोलइ मोर महातुरी, खाटी हो जौं छाछ ।
मेह मही पर जा पड़ए, जानह काछो काछ ॥ 86 ॥

बसात थाकि कें मन्द होए, तितीरकें जोर लगै, गुरु चेलाकें हँसिकें स्नेह करथि तँ ज्योतिषी भड्डरी कहै छथि जे मेघ बरिसए ।

मयूर जोरसँ बाजए, छाछ (दहीक घोर) खट्टा भए जाए तँ मेघ पृथ्वी पर आबि बरसि भरि डाँर पानि लगा देअए ।

उगन्त धनुषा जौं प्रगट, लोहित अस्तक भोग ।
डाक कहए हे भाँडरि ! नदिया चढ़सी योग ॥ 87 ॥
मघा पाँच नखत्तरा, भृगु पच्छिम दिस होए ।
तौं तों जानह भाँड़रि ! पुहुमी पानि न होए ॥ 88 ॥

सूर्य उगैत जँ इन्द्रधनुष प्रकट होए, अस्तकाल सूर्य लाल होथि तँ नदीमे बाढ़िक योग होइछ ।

सावनमे मघा, पूर्वफल्गुनी, उत्तरफल्गुनी, हस्त ओ चित्रा नक्षत्र मे भृगु (शुक्र) पच्छिम दिस होथि तँ वर्षा नहि हो ।

आषाढ़क धोइ, सोना होइ ।
सावनक धोइ, किछु किछु होइ ।
भादवक धोइ, किछु नहि होइ ॥ 89 ॥

आषाढ़मे बाढ़िक धोअल धान सोना होएत, खूब उपजत ।

भादव

रवि उगन्ते भादवे, अमावस रविवार ।
धनुष उगन्ते पच्छिमे, होबइ हाहाकार ॥ 90 ॥

भादव अमावस्या रवि दिन सूर्योदय कालमे इन्द्रधनुष अशुभ थिक ।

भादव मासे ऊजरी, लखो मूल रविवार ।
तौं एह भाखए भड्डरी, साखि भली निरधार ॥ 91 ॥

ऊजरी = शुक्ल पक्ष । साखि = अन्न । निरधार = निर्धारित ।

मंगल रथ आगाँ चलए, पाछासँ चल सूर ।
मन्दवृष्टि तब जानिअ, पुहवी सगरो झूर ॥
मूल गलए, रोहिनि गलए, आर्द्रा बहए न वाय ।
हाली बेचह बरदिया, खेती लाभ नशाय ॥
भादव बदि एकादशी, जौं ना छिड़कइ मेघ ।
चारि मास बरिसए नहि, कहए भड्डरी देख ॥ 92 ॥

भादवमे मूल गलए = गरए बरिसए । हाली = झट दए । छिड़कए = बुन्दाबुन्दी बरिसए ।

भादव जत दिन पछबा वयारी । तहि दिन माघे पड़ए तुसारी ॥
अगस्त ऊगा मेह न अण्डे । जौं अण्डे तँ धार न खण्डे ॥ 93 ॥

बयारी = हवा । तुसारी = पाला, वर्फ ।

अगस्त्य ताराक उगला पर मेघमे अण्डा (गर्भ) नहि होइछ आ जँ भए जाए तँ जल धारा खण्डित नहि हो, खूब पानि हो ।

उत्तर जानि । बान्हब पानि ॥ 94 ॥

उत्तरा नक्षत्र अएला पर आरिकें बान्हि दी जे पानि नहि बहए ।

आसिन

वाउरु चलै इसाना । ऊँची करै किसाना ॥ 95 ॥

यदि ईशान कोनक बसात बहए तँ ऊँच स्थान पर जाइ, खूब वर्षा होएत ।

हथियाक पेटसँ निकलल जाड़ । गोनरि लेल खढ़ काटए राड़ ॥ 96 ॥

गोनरि = खढ़क बनाओल ओढ़ना ।

कातिक

रोहिनि जौं बरसए नहि, वरिस जेठ ओ मूल ।
बुन्द एक स्वाती पड़ए, होबए तीनू तूल ॥ 97 ॥

जेठ ओ मूल = ज्येष्ठा आ मूल नक्षत्र ।

मंगल वारी होए दिवारी । हँसए किसान रोबए व्यापारी ॥ 98 ॥

वर्षफल अशुभ–

माघमे वादरि लाली धरए । साँचे जानह पाथर पड़ए ।
जए दिन भादव बहए पछार । तए दिन पूसहिं पड़ए तुषार ॥ 99 ॥

पछार = पछबा बसात । तुषार = पाला, वर्फ ।

मासक अनुसार सेवनीय वस्तु–

साओन खट्टा, भादव तीत । आसिनमे गुड़ भक्षण मीत ॥
कातिक मूली, अगहन तेल । पूस दूध सौं करियह मेल ॥
माघ मास उठि प्रात नहाए । फागुन मे घी खिचरी खाए ॥
चैत चिबाबए नीमक पात । मास बैसाख वासी भात ॥ 100 ॥

मासक अनुसार निषिद्ध वस्तु–

साओन साग, न भादव दही । आसिन करैला, कातिक मही ॥
अगहन जीरा, पूसे धना । माघे मिसरी, फागुन चना ॥
चैत गुड, वैशाखक तेल । जेठक पन्थ, अषाढ़क बेल ॥
नियमित विधि जे संयम करए । ता घर वैदा पाँव न धरए ॥ 101 ॥

मही = माँटि तरक वस्तु ओल । धाना = फढ़बी, भूजल जओ ।

वस्तुक कमी–

मीन शनिच्चर, कर्क गुरु, मेघ के मंगल होए ।
गहूम गोरस गोड़री, विरले विलसए कोए ॥ 102 ॥

गोरस = दूध–दही । गोड़रि = गोनरि (खढ़क ओढ़ना), तूर । विरले व्यक्ति क्यो–क्यो सेवन करथि । जाहि वर्षमे शनि मीन राशि मे, बृहस्पति कर्क मे आ मंगल मेषमे हो ताहिमे एहि वस्तु सभक कमी हो ।

अद्‌भुत प्रकरण

ग्रहण

मास रिच्छ जे तीज अन्हारी । लएह ज्योतिषी ताहि विचारी ॥
तेहि नखत्त जौं पूरनमासी । निश्चय चन्द्र ग्रहण उपजासी ॥
एकहि मास ग्रहण दुइ होइ । ता तें अन्न महग्गा होइ ॥
कर्क राशि मे मंगल वारी । ग्रहण पड़ै दुर्भिक्ष विचारी ॥
गुरुवासर घन वर्षा करइ । सूरज वासर राजा मरइ ॥ 103 ॥

रिच्छ = ऋक्ष, नक्षत्र । तीज अन्हारी = कृष्णपक्षक तृतीया । नखत्त = नक्षत्र । पूरनमासी = पूर्णिमा । उपजासी = उत्पन्न हुए, लागए । कर्क राशि मे = साओन मासक मंगल दिन ग्रहण लगला पर अकाल, बृहस्पति दिन घनगर वर्षा ओ रवि दिन राजाक नाश हो ।

पल्लीपतन

पड़ै छिपकली अंग पर, जौं सरटा चढ़ि जाए ।
तिथि, वार, नक्षत्र कर, ता को फल दरसाए ॥ 104 ॥

(1) तिथि फल–

पड़िबा पड़ै जौं छिपकली । सरटा चढ़ै जौं अंग ॥
रोग बढ़ै तन वेगही । करए शक्तिके भंग ॥
दुतिया मे दे राज घनेरा । तृतीया द्रव्य लाभ बहुतेरा ॥
दुःख चतुर्थी माँहि बखान । पंचमी षष्ठी देइ धन धान ॥
सप्तमी अष्टमी नवमी दशमी । मरबामे नहि लाबइ कमी ॥
एकादशी पुत्रके लाहे । करए द्वादशी द्रव्य उछाहे ॥
त्रयोदशी देअ सब सिद्धि । चतुर्दशी मे नाशय रिद्धि ॥ 105 ॥
मावस पूनो माँहि हो, बुद्धिहानि धन जाए ।
सरट चढ़े गोधन बढ़े, एही फल दरसाए ॥ 106 ॥

पल्ली = छिपकली । सरटा = बाहरक गिरगिट । लाहे = लाभ । रिद्धि = ऋद्धि = धनवृद्धि । मावस = अमावस्या । पूनो = पूर्णिमा ।

(2) वारफल–

रवि शनि मंगल वारमे, दुःख बड़ो हो जोए ।
सोम बुध गुरु शुक्रमे, लाभ सौख्य जिअ सोए ॥ 107 ॥

(3) नक्षत्र फल–

अश्विनीमे आरोग्य सुक्षेम । भरनी रोग करए धरि नेम ॥
कृतिका करए द्रव्य के हानि । रोहिनि मृगशिर सम्पति दानि ॥
आर्द्रा के फल मृत्यु बताइ । पुष्य पुनर्वसु धन दरसाइ ॥
असरेसा कर जीव विनाश । मग्घा पूर्वा जीवन आश ॥ 108 ॥
ज्येष्ठा जे नक्षत्र कहाइ । ता मे मृत्यु भीति बड़ भाइ ॥
मूल पूर्वाषाढ नक्षत्र । अओर उत्तरा ठाठहु तत्र ॥
सरवन के उत्तर तहँ जानि । ई चारू शुभ फल के दानि ॥
जानि धनिष्ठा शतभिषा, मृत्यु दायिनी सोय ॥
पूर्वभाद्र ओ उत्तरभाद्र, विजय सम्पदा होय ॥ 109 ॥

नेम = समय, अवसर । ठाठहु = बन्धन देअए, नियन्त्रित करए । सरवन = श्रवणा ।

(4) लग्न फल–

मेष करै शुभ अरु वृष नाशए । मिथुन लग्न मे रोग प्रकाशए ॥
कर्क कला, सिंहा सुत–लाहो । कन्यामे धन नाशउ माहो ॥
तुला मिलाबइ द्रव्य घनेरे । वृश्चिक वेश्मलाभ बहुतेरे ॥
धनु अरु मकरहु धन उपजाबए । कुम्भ वस्तु के हानि देखाबए ॥
मीन लग्न अति ताहि सताबए । एही भड्डुली लग्न बताबए ॥ 110 ॥

मेष लग्नमे पल्ली पड़लासँ शुभ हो । लाहो = लाभ । वेश्म = घर ।

छिक्का

छींक पीठ के कुशल उचारइ । वामे कारज सबहि सम्हारइ ॥
सम्मुख छींक कलह सम्भाषइ । छींक दाहिनी द्रव्य विनाशइ ॥
ऊँचहि छींक कहइ जयकारी । नीचहि छींक होइ भय भारी ॥
अप्पन छींक महादुखदायी । ऐसन छींक विचारह भाई ॥
छींक सूँघनी छलकर लिन्ही । सरदी धाँस कहा कए लिन्ही ॥ 111 ॥

वायें ऊँचे पीठ के, छींक कहे सुखकार ।
नीचे सम्मुख दाहिने, अप्पन छींक असार ॥ 112 ॥

गण्डमूल विचार

(1) **चारि घड़ी ज्येष्ठा के अन्त । आदि मूल के जानह अन्त ॥**
गण्डमूल नारदमत जान । नहि देखी सुत वसु परमान ॥
एक घड़ी ज्येष्ठा अवसान । आदि दूइ लए मूल विधान ॥
गुरु वसिष्ठ कह गण्डहिं जान । नहि देखी सुत अष्ट समान ॥ 113 ॥

नारदक मतमे ज्येष्ठा नक्षत्रक अन्तिम दू घड़ी ओ मूल नक्षत्रक आदिक दुइ घड़ी (दण्ड), कुल चारि घड़ी गण्डमूल थिक । ताहिमे जन्म भेला पर ओहि सन्तानक मुँह आठ वर्ष तक माता-पिता नहि देखथि ।

वसिष्ठक मतमे ज्येष्ठाक अन्तक एक ओ मूलक आदिक दू घड़ी गण्डमूल थिक ।

आदि मूलके आठ घड़ी, पाँच शाक्रके जान ।
नहि देखी सुत वर्ष धरि, आठ डाक परमान ॥ 114 ॥

मूलक आदि आठ घड़ी ओ ज्येष्ठाक अन्तिम पाँच घड़ी अभुक्तमूल थिक । एहिमे उत्पन्न शिशुक मुख आठ वर्ष धरि नहि देखी ।

(2) मूल आ असरेस नक्षत्रक फल-

प्रथम चरण जौं मूलमे, बालक जन्मए कोइ ।
नाश करए निज बापकें, दूजे जननी सोइ ॥ 115 ॥

चरण तीन मे धनकें नाशए । चारिम शुभ कर डाक प्रकाशए ॥
असरेसा मूलक विपरीत । कहए डाक एह चिर परिचीत ॥ 116 ॥

मूलक पहिल चरणमे जन्मल बालक पिताक नाश करए, दोसर चरणमे माएक नाश करए, तेसर चरणमे धनक नाश करए आ चारिम चरणमे शुभ करए । आश्लेषा नक्षत्रमे जन्मल पुत्र एकर विपरीत फल देअए । ओकर चारिमे चरण अधलाह थिक ।

(3) मूलनक्षत्रक निवास-

भादव आसिन माघ अषाढ़ । मास मूल कर स्वर्ग निवास ॥
चैत पौष कातिक ओ सावन । भूमि मूलके अति मनभावन ।
अगहन फागुन ओ वैशाख । जेठ मूलके हेठ प्रभाख ॥
जहँ बस मूल तहाँ फल होए । कहए 'डाक' नहि राखो गोइ ॥ 117 ॥

हेठ = अलग भए पाताल मे वास । स्वर्ग मे उत्तम, भूमिपर मध्यम आ पाताल मे अधम फल हो । एकर शान्ति कराबी ।

(4) जन्मसमयमे अशुभ काल-

गण्ड शूल ज्येष्ठा ओ पात । परिघ गण्ड क्षय तिथि व्याघात ॥
संक्रम वैधृति ओ व्यतिपात । वज्र अमावस चौदस जात ॥
भद्रा जमघट ओ मृत्युयोग । दग्ध सहोदर मातु उरु योग ॥
पितु जन्मर्क्ष जन्म जौं होइ । कहए डाक नाशै सब कोइ ॥ 118 ॥

मातु उरु योग = माताक जन्मनक्षत्रक योग ।

मुहूर्त प्रकरण

शिशुविलोकन मुहूर्त-

तृतीया पंचमी सप्तमी होए । दश एकादश द्वादश जोए ॥
तेरस पूनो तिथि परमान । तेसर मास सुलग्नक ज्ञान ॥
दिन रवि-शशि गुरु शुक्र पड़ए । फल फूल कपड़ा द्रव्य धरए ॥
माएक कोर भरल हो बच्चा । देखि प्रसन्न मन हो बड़ अच्छा ॥ 119 ॥

प्रसूतीक नखच्छेदन मुहूर्त्त-

अश्विनी रोहिणी मृग आधीन । पुष्य पुनर्वसु श्रवणा तीन ॥
छओ हस्त उत्तर भरमार । घट युग्म मृग चौकड़ि मार ॥
सोम बुध गुरु शुक्र सोहाए । पाँच सात दश तीनि जुड़ाए ॥
एकादश तेरस तिथि जान । सूती नखछेदन घाघ बखान ॥ 120 ॥

तीनू उत्तरा । कुम्भ, मिथुन आ मेष लग्न प्रशस्त ।

अन्नप्राशन मुहूर्त–

अमा अष्टमी द्वादशी, रिक्ता नन्दा छोड़ि ।
शनि रवि मंगल, अष्ट तनु, मीन मेष अलि जोड़ि ॥
असिनी हस्त तीनि मृग जाए । अदिति दूइ श्रव तीनि सोहाए ॥
अनल इन्द्र, कन्या के पाँच । खाए खीर षट् बालक नाच ॥
डाक कहए ई मन अनुमानि । अनप्राशन शुभदायक जानि ॥ 121 ॥

अमावस्या, अष्टमी, द्वादशी, रिक्ता ओ नन्दा तिथि सँ भिन्न तिथि; शनि रवि आ मंगल सँ भिन्न दिन; मीन, मेष, वृश्चिक आ आठम लग्न (तन्वादि भाव) सँ भिन्न लग्न; अश्विनी, हस्त, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसू, पुष्य, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, कृत्तिका आ ज्येष्ठा नक्षत्रमे कन्याक पाँचम मास ओ बालकक छठम मासमे अन्नप्राशन शुभ हो ।

मुण्डन मुहूर्त–

विषम वर्ष तेसरसँ मान । अष्ट अर्क रिक्ता नहि चान ॥
पड़िबा षष्ठी पर्व पूर्णिमा । चैत रहित शुभ मास उदयना ॥
स्वाति पुनर्वसु श्रवणा तीनि । हस्त पुष्य मृग चित्र अश्विनी ॥
रेवती, शुभ दिन हो शुभ लग्न । शुभ मुण्डन कह डाक, न भग्न ॥ 122 ॥

अष्ट अर्क = अष्टमी द्वादशी । पर्व = अमावस्या । उदयन = उत्तरायण ।

कर्णवेध मुहूर्त–

चैत पूस क्षय रिक्ता जान । जन्ममास समवर्ष सुजान ॥
देवशयन, तारा विपरीत । दुष्ट लग्नकेँ त्यागि पुनीत ॥
छठम सातम आठम मास । द्वादश षोडश दिन परिहास ॥
विषम वर्ष शुभ दिन शुभ लग्न । श्रवण धनिष्ठा हस्त प्रसंग ॥
अश्व पुष्य मृग चित्रा जान । अन्त्य मित्र अभिजित परमान ॥
केन्द्र कोण शुभ त्र्याये पाप । अष्ट शुभ गुरु लग्न प्रताप ॥
शुक्ल पक्ष कह डाक विचारि । कर्णवेध शुभ हो परचारि ॥ 123 ॥

चैत, पूस, हरिशयन (आषाढ़ सुदि एकादशीसँ कातिक सुदि एकादशी तक) ओ जन्म मास, समवर्ष, दुष्ट तारा (1, 3, 5.7) ओ दुष्ट लग्नकें छोड़ि, जन्मसँ बारहम, सोलहम मास, विषम वर्ष, शुभ दिन ओ शुभ लग्नमे कर्णवेध हो । विहित नक्षत्र– श्रवणा, धनिष्ठा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा ओ अभिजित । केन्द्र ओ त्रिकोण (1, 4, 5, 7, 9, 10) स्थानमे शुभ ग्रह ओ 3, 6, 11 स्थानमे पापग्रह हो, गुरु लग्नमे तथा आठम (आत्मस्थान) शुद्ध हो । त्रि (3) ओ आयस्थान (11) = त्र्याय ।

अक्षरारम्भ–

पञ्चमाब्द गणपति–हरि दूजा । वाणी लक्ष्मी के कए पूजा ॥
दुतिया तितिया पञ्चमी षष्ठी । दश एकादश द्वादश तिथी ॥
हस्त पुष्य आर्द्रा श्रव चित्रा । अन्त्य पुनर्वसु स्वाती मित्रा ॥
अश्विनी शुभ दिन चर कें छोड़ि । भठा छुआबी दुहु कर जोड़ि ॥ 124 ॥

विद्यारम्भ–

मूल हस्त श्रवणा भउ तीन । अश्विनी मृग पूर्वात्रय कीन ॥
पुष्य दुइ रवि गुरु भृगु होए । दुइ तीनि छओ पाँच जौं होए ॥
दश एकादश द्वादश जान । विद्यारम्भ डाक परमान ॥ 125 ॥

वरवरण (तिलक) मुहूर्त–

कृतिका रोहिणी पूर्वा तीन । तीनि उत्तरा हो शुभ दिन ॥
रिक्ता भद्रा मावस पात । खल वैधृति रवि दग्धा कात ॥

सप्तम अष्टम हो शुभ शुद्ध । लग्न शुद्धिवश गणना बुध ॥

गणक प्रविधि वरिअ वर हाथ । कहै डाक हो शुभ सब साथ ॥ 126 ॥

मावस = अमावस्या । पात = व्यतीपात योग । खल = दुष्ट योग ।

कन्यावरण–

तिलक मुहूर्त विवाहक देखि । दिन तिथि ओ शुभ लग्न परेखि ॥

कन्यावरण सगुन शुभ जान । डाक कहै विधि करए सुजान ॥ 127 ॥

सेवा (नौकरी) मुहूर्त-

आदि अन्त अनुराधा हस्त । पुष्य आदरा मृगशिर वित्त ॥

दिन तिथि ओ शुभ लग्न विचार । तारा चन्द्र मेल अनुसार ॥

स्वामी सँ मेलापक शुद्ध । कहए डाक सेवा करु बुद्ध ॥ 128 ॥

अश्विनी, रेवती, अनुराधा, हस्त, पुष्य, आर्द्रा, मृगशिरा ओ चित्रा नक्षत्र ओ शुभ दिन तिथिमे सेवा प्रारम्भ करी । स्वामी (मालिक) के नाम ओ अपन नाम मे ग्रह मेलापक शुद्ध कए ली ।

वसना (बही खाता) मुहूर्त-

हस्त पुनर्वसु चित्रा होए । तीनू उत्तर मृगशिर जोए ॥

अनुराधा श्रवणा हो अन्त । पुष्य-ऋक्ष थिर लगन करन्त ॥

शनि मंगल रिक्ता कें छोड़ि । वसना शुभद डाक कह जोड़ि ॥ 129 ॥

व्यापार (लेन-देन) मुहूर्त-

श्रुति गुन, कर गुन, पुष्य युग, मृग हय रेवती सखाउ ।

देहि-लेहि धन, धरनि धरु, गएहु न जाइहि काउ ॥ 130 ॥

श्रुति गुन = श्रवणासँ तीन नक्षत्र = श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा । कर गुन = हस्त सँ तीन = हस्त, चित्रा, स्वाती । पुष्य सँ दू = पुष्य, पुनर्वसू । मृगशिरा, अश्विनी, रेवती ओ अनुराधा (सखा = मित्र = मैत्र) – एहि बारह नक्षत्र मे धन (सोना, रुपैया आदि), धरणी (भूमि) आ धरोहर (न्यास) एहि सबहक लेन देन प्रारम्भ करी तँ गेलो (बुड़लो) वस्तु प्राप्त भए जाए ।

धनक हेराएब आदिक अशुभ काल–

उ गुन पू गुन वि अज कृ म, आ भ अ मू गुनु साथ ।
हरए धरए गाड़ए दिअए, धन फिरि चढ़ए न हाथ ॥ 131 ॥

उ गुन = तीनू उत्तरा, पू गुन = तीनू पूर्वा, विशाखा, रोहिणी, कृत्तिका, मघा, आर्द्रा, भरणी, अश्लेषा ओ मूल नक्षत्र कें एक संग बुझू। एहि चौदह नक्षत्रमे हरण कएल (चोरी), धरोहर देल, गाड़ल आ देल धन फेरसँ हाथ नहि आबए।

तिथि दिनक कुयोग–

रवि हर दिसि गुन रस नयन, मुनि प्रथमादिक वार ।
तिथि सब काज नशावनी, होइ कुयोग विचार ॥ 132 ॥

रवि = 12 = द्वादशी, हर = एकादशी, दिशा = दशमी, गुन = तृतीया, रस = षष्ठी, नयन = द्वितीया, मुनि = सप्तमी तिथि यदि क्रमशः प्रथम दिन = रवि सँ शनि धरि पड़ए तँ सब काजक नाश करए, ई कुयोग कहबैछ। अर्थात् रविकें द्वादशी, सोमकें एकादशी, मंगलकें दशमी, बुधकें तृतीया, बृहस्पतिकेँ षष्ठी, शुक्रकें द्वितीया आ शनिकें सप्तमी पड़ला पर कुयोग होइछ ।

घातचन्द्र–

शशि सर नव दुइ छ दश गुन, मुनि फल वसु हर भानु ।
मेषादिक क्रम तें मनहि, घातचन्द्र जिअ जानु ॥ 133 ॥

मेष वृष आदि राशिवलाकें शशि शर आदि संख्याक चन्द्रमा घातक होइत छथि । मेषकें पहिल, वृषकें पाँचम (शर), मिथुन केँ नवम, कर्ककेँ दोसर, सिंह कें छठम, कन्याकें दसम, तुलाकें तेसर (गुण), वृश्चिककें सातम (मुनि), धनुकेँ चारिम (फल), मकरकेँ आठम (वसु), कुम्भकेँ एगारहम (हर) ओ मीन केँ बारहम (भानु) चन्द्रकें घातचन्द्र कहल जाइछ ।

वैधव्ययोग–

रविवार दुतिया जौं होए । असरेसा तहि दिन महँ जोए ॥
कृतिका होए शनिच्चर वार । साते तिथि काँ करञो विचार ॥
होए शतभिषा मङ्गलवार । कहए द्वादशी तिथि निर्धार ॥
एहि योगमे कन्या होइ । निश्चय विधवा जानह सोइ ॥ 134 ॥

जाहि कन्याक जन्म द्वितीया रवि आश्लेषा नक्षत्र मे, सप्तमी शनि कृत्तिका नक्षत्रमे अथवा द्वादशी मंगल शतभिषा नक्षत्रमे हो से विधवा होअए।

जन्म लग्न दुइ शुभ ग्रह होए। एक पाप ग्रह नभ मँह जोए॥
शत्रुक्षेत्र मह दुइ ग्रह मान। तौं कन्या कें विधवा जान॥ 135॥

जाहि कन्याक जन्म लग्नमे दुइ गोट शुभग्रह, दशम (नभ = आकाश = शून्य) स्थानमे एक पापग्रह ओ शत्रुगृह (छठम स्थान) मे दुइ ग्रह हो ताहि कन्याकें विधवा जानू।

असरेसा दुतिया के होए। मन्दवार युत लीजिए जोए॥
पड़ए शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजए निर्धार॥
रविवार द्वादशी जौं होए। नखत विशाखा जानह सोए॥
ऐसन योग लखि जौं पड़ै। तौं कन्याकें विधवा करै॥ 136॥

वैधव्य योग– (1) द्वितीया शनि आश्लेषा नक्षत्र, (2) सप्तमी मंगल शतभिषा नक्षत्र ओ (3) द्वादशी रवि विशाखा नक्षत्र।

वैधव्यभंग योग–

जन्म लग्न वा चन्दतें, शुभ ग्रह सातम होए।
अथवा सप्तम लग्नपति, शुभगा कन्या होए॥ 137॥

जन्म लग्न अथवा जन्मक चन्द्र सँ सातम स्थानमे शुभग्रह हो अथवा लग्नेश सातम भावमे हो तँ कन्या सौभाग्यवती हो।

जारज योग-

भानु चन्द्र तनु ना लखए, लग्नप लखए न लग्न।
सो सिसु होइ परपुरुष के, भाषत जोइस मग्न॥
रवि कुज गुरु, तिथि अष्टमी, चौठ चौदसी सार।
तीनि उत्तरा जन्म मह, सो सिसु कहओं परार॥ 138॥

जाहि शिशुक तनुभाव (प्रथम लग्न)मे सूर्य, चन्द्र ओ लग्नेशमे सँ एको नहि देखि पड़ए तकरा परपुरुषसँ उत्पन्न जारज सन्तान बुझक थिक।

रवि दिन अष्टमी तिथि ओ उत्तर फल्गुनी नक्षत्र, मंगलदिन चौठ ओ उत्तराषाढ़ आ बृहस्पति दिन चतुर्दशी ओ उत्तरभाद्र मे जाहि नेनाक जन्म से

पराया (जारज)) होइछ ।

पुत्राभाव योग–

गुरु तें पञ्चम गेहपति, जाए पड़ए त्रिक भाव ।
ऐसन योग जौं लखि पड़ए, ता के पुत्र अभाव ॥
पुत्र धर्म अरु लग्नपति, जाए पड़ए त्रिक थान ।
जन्म समय या योग तें, सदा पुत्र के हान ॥ 139 ॥

जाहि व्यक्तिक कुण्डलीमे बृहस्पति जाहि भावमे होथि ताहिसँ पाँचम घरक स्वामी त्रिक भावमे (छठम, आठम, बारहम) स्थानमे बैसल होथि तँ ओहि व्यक्तिकेँ पुत्रक अभाव हो ।

जाहि व्यक्तिक जन्मकुण्डलीमे पुत्रभावेश (पंचमेश), धर्मभावेश (नवमेश) ओ लग्नेश त्रिक (6, 8, 12) स्थान पर बैसल हो तँ ताहि व्यक्तिकेँ पुत्रक हानि (नाश वा अभाव) हो ॥

नीच होएबाक योग–

सहज सप्त धन सदन मँह, क्रूर बसए खग आइ ।
भवन पाँचमे गुरु बसए, नीच जात मनसाइ ॥
सिंह लग्न जनमए शिशु, सातम शनि विकराल ।
म्लेच्छ होइ किछु दिवस मँह, जदपि ब्रह्म के बाल ॥
जाके बुध भृगु राहु सँग, सातम भाव विराज ।
लहए सर्वदा राजसुख, होबए बेश्याबाज ॥ 140 ॥

जाहि जातक कें तेसर, सातम ओ दोसर घर मे क्रूर ग्रह (खग) बसए आ पाँचम घरमे गुरु बसए तँ से नीच स्वभावक होइछ ।

सिंह लग्नमे जन्मल शिशुक सातम भावमे शनि हो तँ ओ म्लेच्छ (मलिन) स्वभावक हो, भने ओ ब्राह्मणेक बालक किएक नहि हो ।

जकर बुध, गुरु ओ राहु एक संग सातम भावमे हो से सदा राजसुख करैत वेश्यागामी हो ।

स्त्रीक राजयोग–

केन्द्र धाम नभगा शुभ होइ । नरतनु पाए कलत्र समोइ ॥
रानी होइ बहुत धन ता के । मन प्रसन्न होबए सुत वा के ॥
चन्द्रज तुङ्ग बसए तनु जाइ । लाभ धन गुरु आबए धाइ ॥
सो तिय होए नृपति के नरी । जनविख्यात होए सुकुमारी ॥
जौं षट्वर्ग शुद्ध गुरु होइ । शशि दृग केन्द्र भवन मँह होइ ॥
ऐसन योग जनम सुकुमारी । रानी होए सदन धन भारी ॥ 141 ॥
कर्क चन्द्रमा सातमे, जीवदृष्टि परिपूर ।
पुत्र पौत्र धन भूरि युत, ताको पति नृप शूर ॥
लाभ भवन सित चन्द्र जौं, सोमज सप्तम होइ ।
सुरगुरु परिपूरन लखए, रानी होइ तौं जोइ ॥ 142 ॥

ज्वालामुखी योग-

पड़िबा मूल, पञ्चमी भरनी । अष्टमी कृतिका, नवे रोहिनी ॥
दशे असरेसा जौँ तौँ बाँच । ज्वालामुखी नखत एह पाँच ॥ 143 ॥
जन्मए तौं जीवए नहि, बसए तौँ उज्जड़ होइ ।
नारी पहिरए भूषणो, पुरुषविहीना होइ ॥
संगर चढ़ि जीतए नहि, किरसी निहफल जाए ।
कूआँ-पोखर जे खनए, तुरते वारि पड़ाए ॥ 144 ॥

विविध प्रसंग (नीति आदि)

मडुआ मीन, चीन संग दही । कोदोक भात दूध संग सही ॥
खरच बड़ा हो कम रोजगार । घर के मानइ सब सुकुमार ॥
टाटक घरे लुक्का वरए । ऊ घर कुशल विधाता करए ॥ 145 ॥
जेहि घर साला सारथी, तिरिया के हो सीख ।
सावन मे विन हर लवे, तीनू माँगे भीख ॥
बहु बजार वनिहार वनि, वाड़ी बेटा वैल ।
व्योहर बरही वन बबुर, बात सुनह ई छैल ॥

जे बकार बारह बसे, से पूरन गिरहस्त ।
अओरो कें सुख दे सदा, आप रहए अलमस्त ।। 146 ।।

ई बारहो वस्तु जनिका उपस्थित रहनि से पक्का गृहस्थ थिकाह– बहु, बजार, जन, बोनि, बाड़ी, बेटा, बड़द, व्यहार (ऋण लगानी), बरही, वन (गाछी), बगूरक गाछ आ अपन बातक मान्यता ।

सावन सोवे ससुर घर, भादो खाये पूआ ।
खेत-खेत मे पूछत डोले, तोहरे केतिक हूआ ।।
भादव मे गाम-गाम खाए मलपूआ ।
अगहन मे पूछे जे, कए मन हूआ ।। 147 ।।

साओन भादव मे खेती छोड़ि पहुनाइ कएनिहार अगहन मे धानक खोज करैत छथि !!

बीसी तीसी मकर पचीसी । जाड़क राज रहए कह रीसी ।। 148 ।।

वृश्चिक संक्रान्तिक अन्तिम बीस दिन, धनु संक्रान्तिक तीसो दिन आ मकर संक्रान्तिसँ पचीस दिन धरि जाड़क राज्य रहैत अछि से ऋषि कहैत छथि ।

भुइयाँ खेड़े, हर हो चारि ।
घर हो गिरहिनि, गाए दुधारि ।।
रहर दालि, जरहन के भात ।
गागर नेबो ओ घिउ तात ।।
सहरस खण्ड दही जौँ होए ।
बाँके नयन परोसए जोए ।।
कहए डाक तब सबही झूठ ।
ओतए छाड़ि एत्तहि बैकुण्ठ ।। 149 ।।

खेड़े = खेलाए । जरहन = उसना । सहरस = ताजा । बाँके = कनखी । जोए = स्त्री ।

जाकर घर वासए चतुरंग ।
साँझ प्रात नर पीबए भंग ॥
नारी ओगरए गाछी चास ।
तकर घर हो शीघ्रहि नास ॥ 150 ॥

चतुरंग = शतरंज खेल ।

घोकड़ी लाधि भूमिपर सोबए ।
उढ़री बहु लए जे नर रोबए ॥
बाट चलए नहि ताकए घूरि ।
कहए डाक ई तीनू बूड़ि ॥ 151 ॥
साँझ पराती भोर वसन्त ।
तकरा दुखक ने कहियो अन्त ॥
बैसल खाए चिबाबए पान ।
से की राखत वंशक मान ॥ 152 ॥
खटहट खटिया, बतकट बोहु ।
ई दुख विहि ककरो नहि देहु ॥ 153 ॥

खट्हट = छोट, पैर पसारबा योग्य नहि ।

बिना बले खेती करए, विना भाइ के रारि ।
विन मेहरी के घर करए, चौदह साख लबारि ॥ 154 ॥

विनु बलें खेती, विनु समाङक मारि, विना स्त्रीक घर बसओनाइ सरासर फूसि थिक ।

ढिलढिल बेँट कोदारी । हँसि कए बोलए नारी ।
हँसि कए माँगए दामा । तीनू काम निकामा ॥ 155 ॥

दाम = बकियौता मूल्य वा कर्जक टाका कड़गर भए माँगी ।

हरिनक गवाही सुग्गर देल । दुनू पडा कए वन चल गेल ।
डारिक चुक्कल वानर गेल । अवसर चुक्कल मानव गेल ॥

जनिका लागल दैवक डाङ । तीनू लोक मे कतौ न त्रान ॥

कहै डाक करमक ई भोग । भला करम कए करु ने सोग ॥ 156 ॥

पहिल पहर राति टकुआतान । दोसर पहर राति धनुषाबान ॥

तेसर पहर राति कँकोड़ा टाङ । चारिम पहर राति मोटरी बान्ह ॥ 157 ॥

ई सुतबाक क्रम थिक– पहिने लम्बा भए सुती, तकर बाद धनुष जकाँ भए जाइ, तख हाथ–पएर मोड़ि ली आ अन्तमे सकुचि कए मोटरी जकाँ भए जाइ ।

बात बाजी जानि, पानि पिबी छानि ।

राखी मन नहि आनि, डाक होएत नहि हानि ॥ 158 ॥

बड़ो आदरा, आसिख छोट । कारज समता कर बड़ गोट ।

सब्बहुँ प्रीत करए जे जीव । ता पर परसन होबए शीव ॥ 159 ॥



डाकवचन-संहिता

तृतीय खण्ड

प्राचीन ग्रन्थ सभमे प्राप्त डाकवचन

1. म.म. हरपतिकृत व्यवहारप्रदीपमे (1430 ई.) :-

(एकर हस्तलेख दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयमे अछि)

राशिक मान-

मेष मीन तिअ दण्डा दीस । ता उप्परि दिअ पल अठतीस ॥
वृष कुम्भ चौदण्डा मान । पल एगारह भुगुतिअ मान ॥
मिथुन मकर पल तीनि गुनू । कर्कट तेतालीस धनू ॥
सिंहहि वृश्चिक सप्तचलीस । तुल सह कन्या पल अठतीस ॥
मिथुना सञो मोञे सब पल कहिअ । पाँचे दण्डे सबे पल लहिअ ॥ 1 ॥

अर्थ- मेष ओ मीन राशिक मान (काल) बुझबाक हेतु पहिने तीन दण्ड निर्दिष्ट करी, ताहि ऊपर अठतीस पल दी- 3 दण्ड 38 पल । वृष ओ कुम्भ राशिक मान चारि दण्ड ओ एगारह पल भुक्ति (भोग) मानैत छथि । मिथुन ओ मकर राशिक पहिने तीन पल गुनी (दण्ड बादमे कहल जाएत) । कर्क आ धनु राशिक पल तैंतालीस होइछ । सिंह ओ वृश्चिकक पल सैँतालीस ओ तुला तथा कन्याक पल अठतीस होइछ । मिथुन सँ हम सबटा पले कहलहुँ ओहि सबमे पाँच दण्ड दए निर्दिष्ट पल प्राप्त करी ॥

दिन ओ राति (सूर्योदय सँ अग्रिम सूर्योदय पर्यन्त) 60 दण्डक होइछ, जाहिमे मेष आदि बारहो राशि क्रमशः अपन अपन समयानुसार बितैछ । सभ राशिक निर्धारित काल उपर्युक्त वचन द्वारा निर्दिष्टि भेल अछि । यथा-

राशि	**दण्ड**	**पल**	**कुल पल**
(प्रत्येक) मेष, मीन	3	38	218
(प्रत्येक) वृष, कुम्भ	4	11	251
(प्रत्येक) मिथुन, मकर	5	03	303
(प्रत्येक) कर्क, धनु	5	43	343
(प्रत्येक) सिंह, वृश्चिक	5	47	347
(प्रत्येक) कन्या, तुल	5	38	338
	30	00	1800/30 = 30-00

ग्रहक राशि मे भोग-

तिक्खा काणा, राउता, भुञ्जए दिवहा तीस ।
ताके डेढ़े भूमिसुअ, मास अठारह सीस ॥
जत्ते दिवहा चन्द गऊ, तत्ते सनि वरिसाञि ।
बारह मास बेहप्फइ, इत्थि गुनिञ ग्रह काञि ॥ 2 ॥

सूर्य (तीक्ष्ण), शुक्र (काना) ओ बुध (राजपुत्र-चन्द्रपुत्र) एक राशि मे तीन दिन (दिवस) भोग करैत (रहैत) छथि । तकर डेढ़ (साढ़े-सार्ध) गुना (45 दिन = डेढ़ मास) मङ्गल (भूमिसुत) रहैत छथि । अठारह मास (डेढ़ वर्ष) धरि राहु ओ केतु (सीस = केवल मूड़ीवला) रहैत छथि । जतेक दिन तक चन्द्रमा जाइत छथि (रहैत छथि) ततेक वर्ष तक शनि रहैत छथि (जतेक स्थानमे 'अओढ़े' पाठ मामला पर अर्थ सुलभ होएत) । अर्थात् चन्द्रमा अढ़ाइ दिन ओ शनि अढ़ाइ वर्ष (30 मास) रहैत छथि । बारह मास धरि बृहस्पति रहैत छथि । एहि तरहेँ गुनि केँ ग्रहक राशि मे रहबाक समय जानी ।

1. सूर्य शुक्र ओ बुध एक एक मास (30 दिन) ।
2. मंगल- 45 दिन ।
3. राहु, केतु-अठारह अठारह मास ।
4. चन्द्र- अढ़ाइ दिन ।
5. शनि- अढ़ाइ वर्ष
6. बृहस्पति- एक वर्ष ।

मुहूर्त्तक मान-

तिथि परिमाणह साठि दण्डा । से लए करह बारह खण्डा ॥
अद्दा भद्दा कित्तिक मूल । भनइ डाक सबेटा करे चूर ॥ 3 ॥

तिथिक परिमाणक कुल साठि दड केँ लए बारह भाग कएलासँ 60/12 = 5 दण्डक एक मुहूर्त्त होएत । (ई परिभाषा डाकक अपन थिक । सामान्यतया ज्योतिषमे 2 दडक एक मुहूर्त्त होइछ ।)

आर्द्रा, भद्रा (विष्टि), कृत्तिका ओ मूल युक्त मुहूर्त्त सभ काज केँ चूर्ण (नष्ट) कए दैछ- ई डाक कहैत छथि ।

सिद्धियोग-

तथा च डाकः-

> **नवञी चौठि चौदसि भउ खोड़े । पड़िब एकादसि छठि कवि जोड़े ।।**
> **तिअ अट्ठञि तेरसि भूपुत्ते । सत्तमि दुइ दोआदसि राउत्ते ।।**
> **पाँचञि पुनिमा दसञि बेहप्फए । सिद्धियोग एहु मुनिवर जम्पए ।। 4 ।।**

नवमी, चौठ ओ चतुर्दशी तिथि जँ शनि (खोड़=नाङर) दिन होअए, पड़िब, एकादशी ओ षष्ठी शुक्र (कवि) दिन युक्त होअए, तृतीया, अष्टमी ओ त्रयोदशी मङ्गल दिन पड़ए, सप्तमी, द्वितीया ओ द्वादशी बुध (राजपुत्र = राजा= चन्द्रमा, तनिक पुत्र) दिन पड़ए ओ पञ्चमी, पूर्णिमा ओ दशमी बृहस्पति दिन होअए तँ एकरा मुनिवर लोकनि सिद्धियोग कहैत छथि-

शुक्र- पड़िब, षष्ठी, एकादशी

शनि- चौठ, नवमी, चतुर्दशी

मंगल- तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी

बुध- द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी

बृहस्पति- पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा ओ अमावस्या ।

यमघण्ट विचार-

> **जइ रविवारे मघा धनिट्ठा । सोमे पुक्ख विसाखा लिट्ठा ।।**
> **मङ्गल कित्तिक भरणि विरुद्धा । कर पुबफग्गुनि बुध विरुद्धा ।।**
> **वारे बेहप्फइ मूल रेवाती । सुक्कहि वारहि रोहिनि स्वाती ।।**
> **स्रवना सतभिख जइ सनिवारे । एहु यमघण्ट कहिअ गोआरे ।। 5 ।।**

यदि रवि दिन मघा ओ धनिष्ठा नक्षत्र पड़ए, सोम दिन पुष्य, विशाखा ओ अश्लेषा पड़ए, मङ्गल दिन कृत्तिका ओ भरणी पड़ए तँ से विरुद्ध (अधलाह) थिक, बुध दिन हस्त (कर) ओ पूर्वफल्गुनी पड़ए तँ अधलाह थिक, बृहस्पति दिन मूल ओ रेवती पड़ए, शुक्र दिन रोहिणी ओ स्वाती पड़ए, शनि दिन जँ श्रवणा ओ शतभिषा पड़ए तँ एकरा गोआर (डाक) यमघण्ट योग कहने छथि, जे त्याज्य थिक ।

दग्ध तिथि-

सनि सत्ते, सुक्क लए दुइ । छट्ठि बेहप्फए होए विरुइ ॥
बुध तीअ, दोआदसि सूर । मङ्गल दसमी परिहर दूर ॥
होए एकादसि सोमे वारे । दगध तीथि फुड़ कहिअ गोआरे ॥ 6 ॥

शनि सप्तमी, शुक्र द्वितीया, बृहस्पति षष्ठी लएकेँ विरुद्ध होइत छथि। बुध तृतीया, रवि (सूर=सूर्य) द्वादशी ओ मंगल दशमी तिथि केँ दूर कए हटएबाक चाही । सोमवारकेँ जँ एकादशी हो तँ एकरा सभकेँ गोआर (डाक) स्फुट (स्पष्ट) रूपेँ दग्ध (जरल) तिथि कहैत छथि । एहि योगमे शुभ कार्यक आरम्भ नहि करी । (इयेह बात 'द्वादश्यर्कयुता भवेन्न शुभदा' इत्यादि शिशुबोधस्थ पद्य मे कहल गेल अछि) ।

(रवि 12, सोम-11, मंगल-10, बुध-3, बृहस्पति-6, शुक्र-2, शनि-7) ।

राहुक उदय-

पुव्व-द-नै-पा-वा-उ-नि, अस्स चलन्ते तम चलइ ।
दिस्स विदिस्से जाइ, वाञे पाछे शुभ कहइ ॥
जह अग्गे तह खाइ, (राहु दहिन सम फल रहइ ॥) ॥ 7 ॥

राहु (काल)क वासक निरूपण करैत छथि- पूब, वह्निकोण, दक्षिण, नैर्ऋत, पच्छिम, वायुकोण, उत्तर ओ निसान (ईशान) कोणक क्रमसँ अगहन सँ प्रारम्भ कए तम = अन्धकार = राहु घोड़ा जकाँ चलैत दिशा ओ विदिशा (कोण) मे समान काल कए जाइत अछि= डेढ़ डेढ़ मास रहैत अछि । यात्रा कएनिहारक वामा ओ पाछाँ मे रहला पर शुभ कहैत अछि । जकर आगाँमे पड़ैत अछि तकरा खा जाइछ आ दहिना मे कोनो फल नहि दैछ । घोड़ा जेना एक घर छोड़ि चलैछ तहिना राहु दिशा ओ विदिशाक क्रमसँ चलैछ ।

राहुक स्थिति- संक्रान्ति-मासक क्रमेँ-

पूब- अगहन, पूस, माघ (आधा पूससँ अग्निकोण मे)

दच्छिन- फागुन, चैत, वैशाख (आधा चैत सँ नैर्ऋत्य कोण मे)

पच्छिम- जेठ, अषाढ़, साओन (आधा आषाढ़ सँ वायु कोण मे)

उत्तर– भादब, आसिन, कातिक (आधा आसिन सँ ईशान कोण मे)।

योगिनी विचार–

पत्ती पच्चा खस्सा दोआ। नवे नवे योगिनि होआ॥
आगे योगिनि मार कर, पाछे अति सुख देइ।
वामे योगिनी लाभ कर, दाहिने जिब हरि लेइ॥ 8॥

पत्–प्रतिपत् (पड़िब), ती– तृतीया, पच्– पञ्चमी, चा–चौठ, खस्–षष्ठी, सा–सप्तमी, दो–द्वितीया, आ–अमावस्या एहि तिथि सबसँ अपना लगाए नवम नवम संख्यक तिथि लए लए पूर्वादि दिशामे योगिनीक वास रहैछ। यथा–

तिथि	**दिशा**	**तिथि**	**दिशा**
1 – 9	पूब	6 – 14	पच्छिम
2 – 11	अग्निकोण	7 – 15	वायव्य कोण
5 – 13	दक्षिण	2 – 10	उत्तर
4 – 12	नैर्ऋत्य कोण	30 – 8	ईशान कोण

आगू (सम्मुख) स्थित योगिनी मारक (घातक) होइछ, पाछाँ मे स्थित अतिसुख दैछ, वाम दिस लाभ करबैछ ओ दहिन दिस प्राण हरण कए लैछ।।

पशुयात्रा (डाकाः) –

तिन्निओ पुव्व मृगसिर जेट्ठा। भरणि विसाख असलेस धनिट्ठा॥
चलिअ चौपा होइह वृद्धी। जत्तहि चालिअ तत्तहि सिद्धी॥ 9॥

तीनू पूर्वा (पूर्वफल्गुनी, पूर्वाषाढ़ ओ पूर्वभाद्र), मृगशिरा, ज्येष्ठा, भरणी, विशाखा, आश्लेषा ओ धनिष्ठा नक्षत्र मे चौपा (चतुष्पद जन्तु) जँ यात्रा करए तँ वृद्धि हो ओ ओकरा जतहि लए जाइ ततहि सिद्धि भेटए।।

द्वितीयोदित चन्द्र विचार–

मच्छा भेड्डा[1] दाहिना, अवरे उत्तर काञि।
घला बलद्दा समहि सम, अवर बोलि बुझु काञि॥ 10॥

1. मेहा (मेष) – पाठान्तर।

शुक्लपक्षक द्वितीया तिथिमे उगल चन्द्रमाक श्रृंग (नोंक) मीन ओ मेष राशिगत रहला पर दक्षिण भाग उन्नत (अधिम उठल) रहैछ, एहिसँ भिन्न (अवर) राशि मे रहला पर उत्तर श्रृंग उन्नत रहैछ, किन्तु कुम्भ (घल = घट) ओ वृष (बलद्दा - बड़द) राशिमे रहला पर दुनू श्रृंग समाने रहैछ । सम रहला पर सम फल, उत्तरोन्नत रहला पर सुभिक्ष (उत्तम समय) ओ दक्षिणोन्नत रहला पर दुर्भिक्ष फल होइछ । ई बात ज्योतिषशास्त्र मे स्पष्ट अछि-

"मीन-मेषगतश्चन्द्रो भवेद् याम्योन्नतः सदा ।
समश्रृङ्गो वृषे कुम्भे, शेषभे तूत्तरोन्नतः ।।
याम्योन्नते च दुर्भिक्षं, समत्वं च समे विधौ ।
सुभिक्षं सौम्यदिग्भागे चोन्नते शशलाञ्छने ।।"

नववस्त्रभूषणधारणे डाकः-

अस्सनि रेवए अवर धनिट्ठा । हत्थ आदि कए पाँच-नखत्ता ॥
एकरा उत्तर दुइ गुरुमन्ती । कापल परिहह, न करह भन्ती ॥
संखा मोन परिहह रन्ता । वरखा सत एक जीवओ कन्ता ॥
पुष्य-पुनर्वसु परिहरह, रोहिण पालह बज्ज ।
तीनि उत्तर परिहरह, जइ भत्तारे कज्ज ॥ 11 ॥

अश्विनी रेवती अओर धनिष्ठा, हस्त आदि पाँच नक्षत्र (हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा), रोहिणी (एकरा = एकल = ब्रह्मदेवता नक्षत्र), तीनू उत्तरा, पुनर्वसू (दुइ-युगलनक्षत्र), पुष्य (गुरु जकर स्वामी) एतेक नक्षत्र ओ शुभ दिन (बुध, बृहस्पति, शुक्र) मे कपड़ा (कापल) पहिरबाक चाही, एहिमे कोनो सन्देह (भ्रान्ति) नहि करी । एही मुहूर्त्त मे अनुराधा तक शंख, सोना, रत्न आदिक आभूषण पहिरक चाही, एहिसँ एक सए वर्ष धरि स्वामी जिबथु से कामना पूर्ण होएत । यथा रत्नशतक मे लिखल अछि-

हस्तादि-पञ्चक-पुनर्वसु-वासवाश्वि-पुष्य-प्रजापतिषु चोत्तर-रेवतीषु ।
दध्यान्नवाम्बरमथाप्यभुजङ्गभाग्य-पित्र्येशभेषु भरणीषु च नैव धार्यम् ।।

उपर्युक्त "अस्सनि रेवए" वचन सँ पूर्व प्रकाशित मूल पोथी मे सम्पादक 'नवान्नभक्षण' लिखैत छथि, परन्तु ओकर मुहूर्त्त सँ केवल दुइ चरण

मिलैछ, तेसर चरणसँ मेल नहि खाइछ ।

नवभूषण-धारणमे निषिद्ध नक्षत्र कहैत छथि-

पुष्य, पुनर्वसू केँ त्यागि, रोहिणी ओ भरणी (पालनार्थक) केँ वर्जित कए ओ तीनू उत्तराकेँ त्यागिएकेँ नवभूषण पहिरक चाही, यदि पतिक (भर्ताक) काज हो, (द्रष्टव्य- रत्नशतकम् श्लोक सं.- 115)

बीजबन्धन-विचारः (तथा च डाकः)-

कुण्डह धान कि अस्सनि स्रवने । अद्दा रेवए मृग-कर-मूले ॥
मघा सवाती न कर विचार । राउत सुरगुरु सुक्कह वार ॥ 12 ॥

धानकेँ (बीयाक हेतु) अश्विनी, श्रवणा, आर्द्रा, रेवती, मृगशिरा, हस्त, मूल, मघा ओ स्वाती नक्षत्रमे बुध (राउत), बृहस्पति ओ शुक्र दिनमे राखह, एहिमे कोनो आन-तरहक विचार नहि करह । कुडि रक्षणे धातुसँ 'कण्डन' शब्द बनैछ ।

ग्रामवास-विचार :-

सेवक रे सुनु गामक बत्ता । अक्खर दोगुण चौगुण मत्ता ॥
गामे नामे एक करिज्जइ । मुनि अङ्के तसु भाग हरिज्जइ ॥
एक सुन्न जञो पाबसि चारि । छाड़ दलत्तिहिँ होइह मारि ॥
वेबि छक्क जञो पाबसि ओरे । सव्वओ वित्त समप्पिह तोरे ॥
तीञे पाँचे मान-संमान । कहए डाक ई गाम प्रमान ॥ 13 ॥

रे सेवक ! एक गामसँ दोसर गाममे बसबाक वार्ता सुन । गामक नाममे जतेक अक्षर (व्यञ्जन ओ स्वतन्त्र स्वर) हो तकरा दोगुन करी ओ जतेक मात्रा (व्यञ्जनक आगू लागल स्वरक मात्रा अर्थात् ह्रस्व-1, दीर्घ-2 ओ प्लुत-3) हो तकरा मिलाए चौगुना कए (दुनू, गुणित अंककेँ जोड़ि) मिलाए दी एवं बसनिहार व्यक्तिक नामक अक्षर ओ मात्रासँ एहिना अंक बनाबी । गाम ओ नामक अंककेँ एक करब आ तकरा सात (मुनि)) अंक सँ भाग देब । प्राप्त शेष द्वारा फल जानी ।

एक शून्य ओ चारि जँ पबैत छह तँ तुरत्ते (दलत्तिहि-तलत्तिहिँ-त्वरितमेव, 'दरबरि' प्राचीन मैथिली) ओहि गामकेँ छोड़ि दएह, नहि तँ मारि होएतह ।

जँ दू (द्वे अपि=वेबि) वा छओ शेष (ओर) पबैत छह तँ ओ गाम सबहु वित्त (धन) तोरा समर्पित करतह । तीन वा पाँच शेष रहला पर मान-सम्मान देतह । ई ग्रामवासक प्रमाण डाक कहैत छथि ।

विष्णुदेवकृत रत्नकलापमे एकर वचन अछि-

अक्षरं द्विगुणं कृत्वा मात्रां कृत्वा चतुर्गुणाम् ।
नामाक्षरेण संयुक्तं कारयेत् सप्तशोधितम् ।।
त्रि-पक्ष-रसकैर्लाभः पञ्चेन्दू शुभदायकौ ।
वेद-शून्ये भवेद्धानि र्वासं तत्र न कारयेत् ।।

एहि मे एक शेष शुभ कहल गेल अछि ।

ग्रामवासे अष्टवर्गविचारः (अठदशावर्ग)-

पच्छी वसु सर, पञ्च मजार । छह केसरी, सुनहे सर चार ।।
अहि सर सात, उन्दु सर एक । गज सर तीनि, बेबि सर मेख ।।
पछि विड़ारा सिंह सुनह, अहि मूसा गज मेस ।
अचे हले मिलि दुहु करसि, गुनि सप मानब सेस ।।
मेसे मूसे बहु-सम्पत्ती । गजे विड़ारे अति कर सिद्धी ।।
नागे सिंहे होइह खेड्डा । सुनहे धरि पछाड़िअ भेड्डा ।। 14 ।।

गरुड़(पक्षी)क शर आठ, विलाड़ (मार्जार)क पाँच, सिंहक छओ, कुकूर (श्वान)क चारि, साप(अहि)क सात, मूस(उन्दुरु)क एक, हाथीक तीनि ओ भेड़ा (मेष)क दू शर होइछ एवं प्रकारेँ वर्ग आठ अछि- पक्षी, विलाड़, सिंह, कुकूर, साप, मूस, हाथी ओ भेड़ा । बसनिहारक नाम ओ गामक अन्तर्गत स्वर ओ व्यञ्जन (अच् हल्) मिलाए राखी ओ तकरा आठ (सप = सर्प = आठ संख्या) सँ भाग दए एक सँ आठ धरि शेष भेला पर क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि ओ राहु अधिपति होएताह ओ अपन स्वभावक अनुसार फल देताह ।

गामक ओ नामक अक्षरक द्वारा प्राप्त संख्यानुसार दुनूक शर ओ वर्गमे मिलान करी तथा नामक आदि अक्षर पर वर्ग बुझि सेहो मिलान करी । मेष ओ मूस वर्ग मिलला पर बहुत सम्पत्ति होएत, हाथी ओ विलाड़मे अत्यन्त

सिद्धि करत, हाथी ओ सिंह मे खेद होएत तथा कुकूर (शुनह) भेड़ाकेँ धए पछाड़ि दैछ । (पूर्व निर्दिष्ट पक्षी आदि अपनासँ पाँचमक शत्रु थिक) ।

ग्रामवासे वर्गविषये अपरो गौड़ीयः प्रकारः-

गामे ठामे नामे जान । सोम सुक्क बुध खोजि आने आन ॥
बोलथि डाक एतेओ कए लेख । अलपेँ काल किछु सम्पए देख ॥ 15 ॥

फलश्रुति-

अक्के कुजे लाबए ठाँओ । गोधन जन नहि बाढ़ए काओ ॥
उदये हो तँ बहए अक्ख । उदर भरि आन पाबए भक्ख ॥
चान्दे बुधे लाबए ठाओ । ताहेरि बसा सम्पति पुत जाओ ॥
लच्छी थाकए ताहेरि गेहे । होई चान्द ठाञि रह पहरे ॥
गुरु दीसा लाभ छाड़ि जाने । मूलहुँ चोरी बोलए चाने ॥
सकुलहि नव संचित धन हरइ । नर.........................॥
सुक्कहि दीसा बहए जबे । पुत परिवार बढ़ाबए तबे ॥
सनि दीसा लाबए पूर । हाथे आतप लाबए दूर ॥ 16 ॥

गाम, ठाम (स्थान वा टोल) ओ नाम (बसनिहारक) एहि तीनूक शर द्वारा उत्तम फल जानि सोम, शुक्र ओ बुध दिन यत्नपूर्वक लए वास करी । डाक कहैत छथि जे एतबाक लेखा कएलासँ थोड़े समयमे सम्पदा देखल जाए सकैछ ।

फलश्रुतिवला ई अंश आन विषयक (वायु बहबाक) बुझि पड़ैछ । (अर्थ अनुसन्धेय ।) ताहेरि = तकर । थाकए (बंगला) = रहए ।

अपरञ्च डाकः :-

वरगक सर सबे बुझइछ आन । बुझितहुँ बुझइतेँ कर अनुमान ॥
जोइसि सोए सदिव कए लेइ । दाहिन सर वाम कए लेइ ॥
सुन सुन सामिञ गामक नाग । जे जहि आगर से ने भाग ॥ 17 ॥

वर्गक शर (पक्षी, बिलाड़, सिंह आदिक) सब आन तरहेँ बुझैत अछि ओ बुझितहुँ अनुमाने करैछ । ज्योतिषी (जोइसि) सदैव जोड़ि लैत छथि

ओ दहिना स्वरकेँ वामा कए लैत छथि। (नाकक पूड़ा दए श्वास चलब केँ स्वर कहैछ)।

अग्रिम दू पाँतीक अर्थ अस्पष्ट अछि। सामिञे स्वामी।

गर्भपत्य-जिज्ञासा- (डाकः)-

अक्खर दोगुन चौगुन मत्ता। भाग हरि बुझु जत्ते वेत्ता॥

चल उज्जारे, बाल इकारे। दुइ धनी फुर कहल गोओर॥ 18॥

गर्भिणीक नामक अक्षरकेँ दूना ओ मात्राकेँ चौगुना कए जोड़ि ली, एहिना प्रश्नकालक स्थानक नामक अंक प्राप्त कए दुनू कें जोड़ि दी। तीन सँ भाग दी। शून्य शेष रहला पर बच्चा चल (मृत) हो, एक शेषेँ बालक ओ दू शेषेँ पुत्री उत्पन्न हो। (मूल पाठमे संशोधन अपेक्षित अछि।)

स्त्री-पुरुष मरण जिज्ञासा-

अक्खर दोगुन चौगुन मत्ता। भाग हरह ताहर सिवनेत्ता।

एक सून जञो पुरुसहिं णट्ठा। बेबि होए जञो तिरिअ विणट्ठा॥ 19॥

स्त्री ओ पुरुषक नामक अक्षर केँ दूना ओ मात्राकेँ चौगुना कए जोड़ि ली। ओहिमे तीन (शिवनेत्र)सँ भाग दी। जँ शेष एक वा शून्य हो तँ पहिने पुरुष नष्ट होएत। जँ दू शेष हो तँ स्त्री पहिने मरए। ताहर-तकर। बेवि-दू॥

अथ सेवाचक्रम्, तत्र डाकः -

सिर सत्ता देहि, उर सत्ता। पिट्ठहि देहि पञ्च णखत्ता॥

हाथे दुइ दुइ पादहि चारि। सेवाचक्क कहञो विचारि॥

सिर सम्मानइ देइल दच्छ। हीञे वित्त समप्पइ सच्छ॥

हाथे देइल पुरबइ आस। पिट्ठिहि णिप्फल पाञे परवास॥ 20॥

पहिने स्वामी (मालिक)क नक्षत्र सँ सेवाचक्र प्रारम्भ करी। चक्रक मस्तक पर क्रमशः सात नक्षत्र लिखी, तखन छाती पर सात, पीठ पर पाँच नक्षत्र, दुनू हाथ पर दू दू ओ पएर पर चारि नक्षत्र दए सेवा चक्र बनाए ली। आब सेवकक नक्षत्रकेँ चक्रमे ताकी। जँ ओहि चक्रमे सेवकक नक्षत्र माथ पर हो तँ मालिक ओकर सम्मान करए, जँ हृदय पर हो तँ स्वच्छ धन समर्पित करए, जँ हाथ पर हो तँ आशा पूर्ण करए। जँ पीठ पर हो तँ सेवा निष्फल

हो आ जँ पाएर पर हो तँ प्रवास कराबए ।

विष्णुदेवकृत रत्नकलाप मे–

"अथ सेवाचक्रं युद्ध जयार्णवे–

यदृक्षं स्वामिसम्बन्धि न्यसेद् भानि तदादितः ।
मूर्ध्नि सप्त, तथा पृष्ठे सप्त भानि वरानने ।।
हृदये सप्त, सप्तैवं पादयो र्विन्यसेत्ततः ।
प्रेष्यभं स्वामिनो मूर्ध्नि तदा पुत्राँल्लभेन्नरः ।।
पृष्ठे तु निष्फलं सर्वं पादयोस्तु गमागमः ।
हृदये सफला सेवा लोकपूज्यो भवेन्नरः ।।"

दुनू मे किछु–किछु अन्तर सेहो द्रष्टव्य थिक ।।

अरिषट्क-लक्षणम्, तत्र डाकः–

धनु वृष वृश्चिक मृग मानी । भरण करा अरिषट्क जानी ॥ 21 ॥

धनु, वृष, वृश्चिक, मृगशिरा, भरणी ओ हस्त एहि छबो केँ अरिषट्क (छओ शत्रुगण) जानी ।।

2. म.म. महाराज शुभङ्कर ठक्कुरकृत तिथिद्वैधनिर्णय (1575 ई.)मे– (ई ग्रन्थ दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयसँ मुद्रित अछि ।)

सुखरात्रि–विचारे डाकः । तथा च भाषा–

स्वाती दीआ जञो बरए, विसाखा खेलए गाए ।
अवसओ नरबइ जुज्झिहइ, अन्न महग्घा जाए ।। 22 ।।

स्वाती नक्षत्र मे जँ दीपावलीक अवसरपर दीप बारल जाए ओ विशाखा नक्षत्रमे कार्तिक शुक्ल पड़िबकेँ गोक्रीड़ा कराओल जाए, तँ अवश्ये नरपति (राजा) युद्ध करथि ओ अन्न महग भए जाए ।।

3. गामवास–विचार ग्रन्थमे (1500)–

ग्रामवास–विचारः । अत्र डाकः –

उत्तर आगत कहिहइ थीर । दच्छिन कुसल कहए बलवीर ।।
पुव्वे दिगे काज निसेध । पच्छिम दिसा तहिखन खेद ।।

चारि चौदिस कह दण्डकारि । छोड़ह दरबरि होइह मारि ॥
उत्तर दछिन कुसल थिर वास । चारू कोन बोल उदास ॥
पच्छिम दिसा दूर सिआ बोल । करह काज पिआ होएत अमोल ॥ 23 ॥

वासक हेतु निर्णीत स्थान पर जँ सिआर उत्तर सँ आबए तँ स्थिर वास हो, जँ दक्षिणसँ आबए तँ कुशल हो ओ पुरुष बलवान् हो, पूब दिस सँ कार्यक निषेध, पच्छिम सँ तत्क्षण खेद, चारू दिससँ चारि टाक अएलासँ दण्ड भेटए, तैं ओहि स्थितिमे वास छोड़िए दी, कारण शीघ्र (दरबरि = त्वरितम्) मारि भए जाएत ।

जँ सिआ (शिवा–गिदरनी) उत्तर ओ दच्छिन मे बाजए तँ कुशल एवं स्थिरवास फल हो । चारू कोनमे बाजए तँ उदास हो, पच्छिम वा पूब मे (वा दूर मे) बाजए तँ अवश्य वास काज करी, ई अमूल्य होएत ।

4. तालपत्र पर लिखल ''विक्रमोर्वशीय नाटक''क उपरका एवं तरका खाली पृष्ठ पर प्राप्त वचन (1600 ई०)–

एकर हस्तलेख दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयमे अछि ।

तरुरोपण-विचारः । तत्र डाकः-

पिप्पर पाकड़ि पएधर काँट । पच्छिम लोहित फूल नहि आँट ॥
वायव तेतरि उत्तर तार । इसानक बदरी परतह काल ॥ 24 ॥

घरक लगमे कोन दिशामे कोन गाछ रोपब अशुभ थिक से कहैत छथि– पीपर, पाकड़ि, दूधवाला गाछ (बड़), काँटवला गाछ (बबूर आदि) क्रमशः पूब, अग्निकोण, दक्षिण ओ नैर्ऋतकोणमे नहि रोपी । पश्चिममे लाल फूलवला गाछ नीक फल नहि दैछ । वायव्य कोणमे तेतरि, उत्तरमे तार ओ ईशानकोण मे बैरक गाछ प्रत्यक्ष कालस्वरूपे थिक ।

परिवेष(माड़रि)क फल–

शनि रवि मङ्गल लाग परिवेष । की महि भरए कि खसए नरेश ॥ 25 ॥

एहि तिनू दिन जँ चन्द्र वा सूर्य मे माड़रि (चारूभर गोलाकार प्रकाश) लागए तँ पृथ्वी पानिसँ भरए वा राजा पदच्युत हो ॥

5. ''प्रकीर्ण'' नामक प्राचीन ज्योतिषग्रन्थमे (1600 ई.)–

(पं० जीवानन्द ठाकुरक द्वारा 'मैथिल डाक'मे संगृहीत)

अथ युद्धयोगिनी । यथा वा डाकः-

पत्ती पच्च्चा खस्सा दूआ । नवे नवे यागिनि हूआ ॥ 26 ॥
अओधे योगिनि पचदह, उद्धे दह परमान ।
वामे दहिने तेरह तेरह, नओ सम्मुख कए जान ॥ 27 ॥

फलमस्याः –

अग्गे योगिनि मार मार कर, पाछे अति सुख देइ ।
वामे योगिनि लाभ कराबए, दहिने जिव हरि लेइ ॥ 28 ॥

एकर व्याख्या वचन अनुच्छेद (8) मे देखी । युद्ध यात्राक अवसर पर पन्द्रह योगिनी अधोदेश (नीचा भागमे), दस ऊपरमे, तेरह वामा भाग, तेरह दहिना भाग, नओ सम्मुखमे ओ चारि पाछाँमे रहैत छथि । एहि चौंसठियो योगिनीक निर्दिष्ट स्थानमे पूजा कए प्रस्थान करी ।

काक शकुने डाकः-

रवि लाम्भ, सोम करु सिद्धि, मंगल कलह परवास ।
बुध समागम बन्धु सँ, गुरु पूरए सबे आस ॥
सुक्क अभोअण, सनि मरण, काल मन्द फल जान ।
दाहिन हिन, अरु वाम गुण, काकवचन परमान ॥ 29 ॥

कौआक कुचरब दिशाक भेदेँ कोन फल दैछ से कहै छथि– रवि ग्रहक दिशा (पच्छिम) मे लाभ, वायव्यकोण (सोम) मे सिद्धि, दक्षिण (मंगल) मे कलह ओ प्रवास, उत्तर (बुध)मे बन्धु सँ मिलन, ईशानकोण (गुरु) मे सब आशाक पूर्ति, अग्निकोण (शुक्र)मे अभोजन (भोजनक अभाव), पच्छिम (शनि) मे मरण, नैर्ऋत्य कोण (काल–राहु)मे मन्दता, दहिना भाग हीनता वा दैन्य ओ वाम भाग गुण प्राप्ति हो ॥

सुवृष्टिफलम् । अत्र डाकः-

फागुन चौदसि सन्ध्याकाल । वरसा बूझब वाम विचार ॥
पुव्वेँ पुरिबा बहए अनङ्ग । एकओ मेघ न लागए अङ्ग ॥

अग्निकुनारी बोलए डाक । भूखल मरते परजा भाग ।
दक्खिन पवन बहए ॠतु साल । अन्न न उपजए हाहाकाल ॥
दक्खिन कोने सब खन बहइ । अवस सुभिक्ख निरन्तर रहइ ॥
पच्छिम पछबा पहए अवार । कोदब कुरथी हो बेवहार ॥
भण्डार कोन बोलए जोइसि । धोबी धोअए कूआँ पैसि ॥
उत्तर पवन सहज जञो बहइ । भाँडरि ! अन्नमूल लहु कहइ ॥
ईसान कोने दुन्दुर बाजए । सारि-साक बँसबे उपजाबए ॥
एतक पवन बह जञो चारूकात । अन दए धरनी अन दए बात ॥ 30 ॥

फगुन शुक्ल चतुर्दशी दिन सन्ध्याकाल (होलिका दाहक अवसरपर) बहैत वायुक अनुसार ओहि वर्षमे वर्षा होएबाक विचार बुझल जाइछ । होलिकाक अवसर पर जँ पूबभर पुरबा धुरझार (निरङ्ग= निरओँ) बहए तँ एक्को टा मेघ नहि लागए । अग्नि कोण (पूर्वदक्षिण) सँ बहए तँ डाक कहैत छथि जे भूखल प्रजा सभ मरए ओ भागए । दछिनाही बहए तँ ॠतु भरि वा साल भरि वर्षाक अभावमे अन्न नहि उपजए ओ प्रजामे हाहाकार मचए । दक्षिणकोण (नैर्ॠत्य)सँ लगातार बहैत रहए तँ निरन्तर वर्ष भरि सुभिक्ष अवश्य हो । पच्छिम दिससँ पछबा बसात धुरझाड़ बहए तँ पानि कम भेलासँ केवल कोदो ओ कुरथी उपजए ओ तकरे व्यवहार लोक करए (भात लए सेहन्ते लागल रहए) । भण्डारँ कोन (पश्चिमोत्तर, वायव्य)सँ बहए तँ ज्योतिषी कहैत छथि जे वर्षा ततेक कम होएत जे धोबी कूपमे पैसि कपड़ा खीचए (पोखरि सब सुखा जाए) । उतरंग हवा जँ स्वाभाविक रूपे मन्द मन्द बहए तँ हे भाँडरि रानी ! अन्नक मूल्य लघु (कम) हो (वर्षा खूब भेलासँ अन्न अधिक उपजए) । ईशान (उत्तर पूर्व) कोणसँ झरझर बहए तँ शालि (धान) ओ शाक (तरकारी) बँसबिट्टिअहु (भीठो खेत) मे उपजाबए । जँ चारू दिससँ हहाइत बसात बहए तँ धरणी ओ वायु अन्न देअए ॥

चन्द्रवास विचार-

मेष सिंह धनु पुव्वे चन्दा । दच्छिन कन्या वृष मकरन्दा ।
पच्छिम कुम्भ तुला अरु मिथुना । उत्तर कर्कट वृश्चिक मीना ॥ 31 ॥

मेष, सिंह ओ धनु राशिक चन्द्रमा पूबमे रहैत छथि, कन्या, वृष ओ मकरक दच्छिनमे, कुम्भ, तुला आओर मिथुनक पच्छिममे तथा कर्क, वृश्चिक ओ मीनक उत्तरमे रहैत छथि । (सम्मुख ओ दहिन चन्द्र शुभ ओ वाम तथा पृष्ठ चन्द्र अशुभ थिक) ।

यात्रायां डाकः-

अस्सनि गमन कहए शुभ सिद्धि । भरणी गेल न जीव अबुद्धि ।
कित्तिक्काञे कलन्तह दिज्जए । रोहिणि गमन मनहि मन खिज्जए ॥
मृगसिर गेल रभस बढ़ाबए । अद्दा गेल पलट्टि न आबए ॥
पुन-पुन सिद्धि पुनर्वसु गमने । पुक्खहि लेखि कि लेखब कमने ॥
गउ असरेस पड़त कलेसे । मग्घा गेलेँ धर यम केसे ॥
पुव्वा फग्गुनि कज्ज न सिज्झइ । तिअ उत्तर यमपाशहि बज्झइ ॥
हत्त्थहि हत्त्थ कहए सम्पत्ती । चित्ते चलइ न परइ विपत्ती ॥
रमत सोआती जाएत जाहाँ । मरत विसाखा जाएत काहाँ ॥
अवसओ काज होइह अनुराहे । जेट्ठा पेट भरए उच्छाहे ॥
मूल मूलहिं चउगुण पाइअ । पुव्वाषाढ़ पलट्टि न आइअ ॥
स्रवणा गेल सुनिअ सुख स्रवणे । अशुभ फल होइह धनिट्ठा गमने ॥
सतभिख हो जञो दैव पसन्ना । रेवए रमए होअए बहु धन्ना ॥ 32 ॥
पड़िबा नवमी मूल शनि स्रवणा । पुव्वेँ दिशि नहि सिज्झए गमना ॥
पनञ्चक अस्सनि बाण गुरु तेरह । एहि दिवस जनु दच्छिन हेरह ॥
रवि छठि चौदसि रोहिणि पुक्खा । पच्छिम गमने होइह दुक्खा ॥
कुज दुज दसमी जञो होअ हत्था । उत्तर गमने दसम अवत्त्था ॥
अद तिअ सोमे अनन्दए उच्छए । चौरए अवसि बुध नहि लच्छए ॥
अक्के सप्तमि वायव नट्टा । डाक कहइ गुनि गमन सफट्टा ॥ 33 ॥

यात्रामे नक्षत्रक फल कहल जा रहल अछि-

अश्विनी नक्षत्रमे सिद्धि हो, भरणी मे मरण, तेँ यात्रा कएनिहार बुद्धिहीन, कृत्तिका कलन्ति (क्लान्ति = कष्ट) देत, रोहिणीमे मानसिक खेद,

मृगशिरामे हर्ष (रभस)वृद्धि, आर्द्रा मे घुड़ि कए नहि आबए, पुनर्वसू मे बारम्बार सिद्ध, पुष्य मे लाभक लेखा के कए सकैछ, अश्लेषा मे कलेश हो, मघा मे यमराज केश धरैत छथि, पूर्वफल्गुनीमे कार्य नहि सिद्ध हो, तीनू उत्तरामे यमराजक पाशमे बाझए, हस्तमे सम्पत्ति हस्तगत हो, चित्रामे चलए तँ विपत्ति नहि पड़ए । स्वातीमे जतए जाएत ततहि आनन्दित रहत, विशाखामे मृत्यु हो, अनुराधामे काज अवश्य हो, ज्येष्ठा मे पेट भरए ओ उत्साह हो, मूल मे चौगुना मूल्य बढ़ए, पूर्वाषाढ़ मे घुरिकए आबए नहि, श्रवणामे कानसँ सुख सुनिअ, धनिष्ठामे अशुभ फल हो, शतभिषामे तखने रही (बाँची) जँ दैव (भाग्य) प्रसन्न हो, रेवतीमे आनन्दित रहए ओ बहुत धन हो ।

पड़िब, नवमी, मूल, शनि ओ श्रवणामे पूब दिसक गमनमे सिद्धि नहि हो । पञ्चक (भदबा = धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र ओ रेवती ई पाँचो नक्षत्र), अश्विनी, पञ्चमी (बाण)), गुरुवार ओ त्रयोदशी केँ दक्षिण दिस यात्राक हेतु तकबो नहि करी । रवि, षष्ठी, चतुर्दशी रोहिणी ओ पुष्य मे पश्चिम दिस गेलासँ दुःख हो । मंगल, द्वितीया, दशमी ओ हस्त मे उत्तर दिस यात्रा मरणदायक होइछ । अदतिअ (आर्द्रा, तृतीया) इत्यादि पंक्तिक अर्थ अनुसन्धानक बादे भए सकैछ, मूलपाठमे संशोधन अपेक्षित अछि ।

बीजवपन विचार : तत्र डाकः-

कृषि काज बोआरहि मानव । चारि काज अठदीस बखानब ॥
बाउग रोपनि जोतनि हरठाठ । ....॥
पुव्वेँ नट्ठे, अनाइबि कोणे । दक्खिन किञ्चित् नैरित सोने ॥
पच्छिम लाभ, कोण पतङ्ग, उत्तर देअ बहुत सुखरङ्ग ।
इसान कोण दैवत्ते जाए । सगुनक देल सबे केओ खाए ॥
सुक्कह बान, सनिच्चर खोड़ । मंगलवार बिआ हो थोड़ ॥
रवि अनाइबि, सोम खढ़दहा । बुद्ध बेहप्फए बाउग कहा ॥ 34 ॥

कृषि सम्बन्धी काज वायु (बयार) बहवासँ विचारक चाही । एकर चारि टा काज बीआक बाउग, रोपनि, खेत जोतब ओ हरकेँ ठाठब (बनल प्रत्येक अंगकेँ एक कए ठोकि तैयार करब) अथवा सीरपञ्चमी दिन हर ठाढ़ करबाक फल कही ।

यथा– पूबसँ हवा बहला पर उक्त चारू नष्ट हो, अग्निकोणसँ आपत्ति दूर (अनाबइ = अनापत्ति) हो अथवा आधा–छिधा हो, दक्षिणसँ किछु किछु फल हो, नैर्ऋत्य कोणसँ सोना (सम्पत्ति) हो, पच्छिमसँ लाभ हो, वायव्य कोणसँ फतिङ्गा (कीड़ा) लागए, उत्तरसँ बहुत प्रकारक सुख ओ आनन्द दिअय, ईसान कोणसँ भाग्ये पर (दैवायत्त = भाग्याधीने) हो । एहि वायुक शकुनसँ उपजल अन्नक भोग सभ करैछ ।

शुक्र दिन बाण लागए (बीआ मारल जाए), शनिकेँ कात करोटमे मारल जाए (खोड़–एक अंग हीन), मंगल दिन बीआ थोड़ हो, रविकेँ आधा छिधा हो, सोमकेँ खढ़ाह हो । तेँ बुध ओ बृहस्पति दिन बाउग कहल गेल अछि ।

6. विष्णुदेवकृत 'रत्नकलाप' नामक ज्योतिषग्रन्थमे (1650)–

ई ग्रन्थ मिथिला संस्कृत शोध संस्थानसँ मुद्रित अछि ।

क्षौरे डाकः–

नाऊ भेटए जबे । काम कराओब तबे ।। 35 ।।

केश कटएबाक मुहूर्त्तमे जँ नौआ नहि भेटए तँ जहिखन भेटए तहिखन काज कराबी, एहिमे दोष नहि हो ।

विष्णुदेव लिखैत छथि–

अशौचान्ते नृपाज्ञायां तीर्थे यज्ञादिकर्मणि ।
दुर्लभे नापिते प्राप्ते क्षौरदोषो न विद्यते ।। (श्लोक–594)

यात्रा प्रकरणे डाकः–

शनि रवि मंगल ओ गुरुवार । काल दिसा जञो बोलए बोआर ।।
निचित रहह न करह दन्द । एकहु रोआँ नहि होअ भङ्ग ।। 36 ।।

शनि, रवि, मंगल ओ बृहस्पति दिन नैर्ऋत्य कोण (दक्षिण पश्चिम कोणक स्वामी काल– राहु थिकाह)सँ वायु (बयार) जँ बाजए (हहाइत बहए) तँ यात्राकाल निश्चिन्त रहह, द्वन्द्व (विवाद) नहि करह । एकहु रोइयाँ भङ्ग नहि होएतह, यात्रा सफल रहतह । (रत्नकलाप श्लोक– 828)

नष्टवस्तु विचार-

तिअ अन्धा, चौ बन्धा, दस तरुणा, दस खोरा ॥
खोरा खोजेँ पाइए, तरुणा जाए पड़ाए ।
अन्धा बइठे पाइए, बन्धा कबहु न जाए ॥ 37 ॥

(रत्नकलाप- श्लोक 900) ।

हेराएल वा चोरी भेल वस्तुक प्राप्त सम्बन्धी विचारक हेतु पहिने नष्ट चक्र बनाए जली । ओहि मे तीन नक्षत्र अन्ध, चारि बन्ध, दस तरुण ओ दस खोर कहबैत अछि ।

आब वस्तुक नष्ट होएबाक काल जे नक्षत्र बितैत रहए से उक्त चक्रमे ताकि फलादेश करी-जँ ओ नक्षत्र खोर हो तँ खोज कएला पर वस्तु भेटए, जँ तरुण हो तँ पड़ाए जाए (दूर भए जाए), जँ अन्ध हो तँ बैसले बैसल भेटि जाए, जँ बन्ध हो तँ कोनो तरहेँ नहि जाए (अवश्य भेटए) । वस्तुतः उक्त नष्ट चक्र शिकारचक्र थिक । शिकार जँ भागि जाए वा नुकाए रहए तँ ओहि समयक नक्षत्र देखि चक्रक अनुसार फल बुझी । चक्र बनएबाक विधि रत्नकलापमे अछि-

कृत्तिकातो लिखेद् भानि, त्रिपङ्क्त्या नवकत्रयम् ।
मुरजाकृतिवेधोऽयं यत्र चन्द्रस्ततः फलम् ।।
अन्धे लब्धं विजानीयाच्छीघ्रं बन्धचतुष्टये ।
श्रमेण दशरेखायां न लाभो दशनिर्व्यधे ।।

शिकारचक्र-

कृ०^{1} रो०^{11} मृ०^{12} आ०^{4} पुन०^{5} पष्य०^{15} आश्ले०^{16} म०^{8} पू०फ०^{9}
ऊ०फ^{10} ह०^{20} चि०^{21} स्वा^{13} वि^{14} अनु^{24} ज्ये^{25} मू^{17} पू०आ०^{18}
उ० आ^{19} श्र^{2} ध^{3} श^{22} पू.भा^{23} उ.भा.^{6} रे.^{7} अ.^{26} भ.^{27}

गृहप्रकरणे डाकः-

गृहपति-हाथ करब परमान । चाकर दीरघ गुनि कए आन ॥
एक ऊन कए आठेँ हरब । कहथि डाक गृह ञे विधि करब ॥
एक अनेक, तीनि धनमान । साते पाँचे मान समान ॥
वेवि चौठि घर कलह कराब । छट्ठे मरण, आठे आगि लगाब ॥ 38 ॥

रत्नकलाप- श्लो० 650, भीमपराक्रमानुसार)

डीह पर घर बनएबाक काल घरक लम्बाइ ओ चौड़ाइ गृहपतिक हाथसँ नापि कए, गुणा करी, ताहिमे एक घटाए आठसँ भाग दी । तखन जे शेष बचए तदनुसार फल जानी । एक शेष रहलापर अनेक होइ (वंशवृद्धि हो), तीन शेष मे धन हो, सात ओ पाँच शेषमे मान-सम्मान हो, दू ओ चारि शेष झगड़ा लगाबए, छओ शेषमे मृत्यु ओ आठ शेषमे आगि लागए ।।

7. कलाधरकृत ज्यौतिष शिशुबोधमे (1700 ई.)

ई अनेक बेर दरभंगा ओ मधुबनी सँ मुद्रित भेल ।

राशि क्षेत्र विचार-

अस्सनि भरनि कृतिक एक पाए । मेष राशि कहँ एतेक उपाए ।।
कृतिक तीनि रोहिणी भउ वेद । दुइ मृशिर लए वृष परिछेद ।।
दुइ मृगशिर अदरा चौपाइ । तीनि पुनर्वसु मिथुन गोसाँइ ।।
एक पुनर्वसु पुष असरेस । भुञ्जहि कर्क न करिअ विशेष ।।
मघा पूब उत्तर एक पाए । सिंह राशि कहँ एतेक उपाए ।।
उत्तर तीनि हस्त भउ चारि । दुइ चितरा लए कन्य कुमारि ।।
दुइ चितरा स्वाती समतूल । तीनि विसाखा तूलम तूल ।।
एक विसाखा अरु अनुराध । सारे जेट्ठा बीछिक बाँध ।।
मूल पूर्व उत्तर एक पाए । धनु राशि कहँ एतेक उपाए ।।
उत्तर तीनि श्रवणा भउ चारि ।। आध धनिट्ठा मकर विचारि ।
धनिट्ठा दुइ शतभिष भउ चारि । तीनि पूर्व लए कुम्भ विचारि ।।
एक पूर्व उत्तर भउ वेद । सारे रेवती मीन परिछेद ।। 39 ।।

कोन राशिमे कोन नक्षत्र पड़ैछ, से कहैत छथि । प्रत्येक नक्षत्रमे चारि चरण (खण्ड) रहैछ । नक्षत्रक नओ चरणक एक राशि होइछ । तदनुसार-

मेष- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका 1 चरण ।

वृष- कृत्तिका-3, रोहिणी, मृगशिरा-2 ।

मिथुन- मृगशिरा-2, आर्द्रा, पुनर्वसु-3 ।

कर्क- पुन० 1, पुष्य, आश्लेषा ।

सिंह- मघा, पू.फ., उ.फ.-1 ।

कन्या- उ.फ. 3, हस्त, चित्रा-2 ।

तुला- चि.-2, स्वाती, विशाखा-3 ।

वृश्चिक- वि.-1, अनु. ज्येष्ठा ।

धनु- मूल, पूर्वाषाढ़, उ.आ.-1

मकर- उ.आ. 3, श्रवणा, धनि-2 ।

कुम्भ- धनि.-2, शत., पू.भा.-3 ।

मीन- पू.भा.-1, उ०भा, रेवती ।

चन्द्रदिशाज्ञानम्-

मेष सिंह, धनु पुव्वे चन्दा । दच्छिन कन्या वृष मकरन्दा ॥
पच्छिम कुम्भ तुला ओ मिथुना । उत्तर कर्कट वृश्चिक मीना ॥ 40 ॥

एकर व्याख्या- वचन अनुच्छेद सं.- 31 देखी ।

ग्रामवास विचारः-

पक्षी पसु शर पञ्च मजार । षट् केसरी श्वान शर चार ॥
अहि सर सात उन्दु शर एक । गज शर तीनि बेबि शर मेष ॥ 41 ॥

एकर व्याख्या अनुच्छेद सं.- 14 मे देखी ।

8. व्यवहाररत्नावली- पशुपति (1400 ई.)

कालगणना-

पू.वा.दा नै पा वा उ नि अहि आकारे यावत् जाय ।
चक्र धरत महि फिरय, जाहि पावए ताहि खाय ॥ 42 ॥

एकर व्याख्या अनुच्छेद 7 पर देखी ।

तन्वादिभावा :-

तनु धन सहज सुहृत रिपु जाया । मृत्यु धर्म कर्म आय व्यया ॥ 43 ॥

समयज्ञानम्-

बीस अङ्ुरी (करि) वर्ग खलिया काठी । थिर कए नाप नभौँ हाँ बाँटी ॥
सम कए नापल ऊपर खण्ड । जतेक आङ्ुर ततेक दण्ड ॥ 44 ॥

राशिमान-

मेष मीन तिअ दण्डा दीस । ता उप्पपर दिअ पाल अठतीस ॥
वृष कुम्भ चउदण्डा मान । पला एगारह भुक्ति समान ॥
मकर-मिथुन पल तीनि गुनू । कर्कट तैंतालीस धनू ॥
सिंह वृश्चिके सैंतालीस । तुल सह कन्या पल अठतीस ॥
आठ लग्न मिथुना सँओ गनिअ । पाँच दण्ड तुल पात करिअ ॥ 45 ॥

एकर व्याख्या अनुच्छेद 1 पर देखी ।

राहुक संचार-

पूबे देशे कहय खखारी । की झड़ बादर, की उपटारी ॥
अग्नि कोण कहय कोतबाला । जागय पहरी धन रखबारा ॥
दक्षिण दिसा विधु हँसाबए । नैऋत सँ तुअ खात आबय ॥
पश्चिम दिसा दूर सओँ बोल । करह काज पिआ हयत अमोल ॥
वायव कोने कह विपरीत । देखब काज किछु विपरीत ॥
उत्तर दिशा कचकच करय । किस पर देब खह कन्दर नय ॥
आठओ दिशा लगकुचि बोल । नदा छाड़ल गाञों... ॥ 46 ॥

ग्रामवासे वर्गः-

पक्षी वसु सर पञ्च मजार । षट् केसरी सुनहे सर चार ॥
अहि सर सात इन्दु सर एक । गज सर तीनि वेबि सर मेष ॥ 47 ॥

नागशयनव्यवस्था-

आदि भादव पूबे शीस । दक्षिण पश्चिम उत्तर दीस ।
तिनि मासक करब भाग । वाम करओट सूतथि नाग ॥
चितरा बरसे माँटी मारे । आगे भाइ गेरुइ के कारे ॥
अगहन दोबर पूस सवाइ । फागुन वरसे घरहु के जाइ ॥
सरंग पताली भौँआँ टेढ़ । अप्पन खा पड़ोसिया हेर ॥ 48 ॥

-व्यवहाररत्नावली-पशुपति,

सम्पादक- पं. भवनाथ झा

'शास्त्रार्थ'-बिहार शताब्दी स्मारक अंक-भाग-4,

2012-13 ई. । मिथिला संस्कृत शोधसंस्थान, दरभंगा

9. बुद्धिप्रदीपः (ज्योतिष) - धीरेश्वराचार्य (सोलहम शताब्दी)

(1) राशीनां नवचरणज्ञानम्-

आश्विनी भरणी कृतिक एक पाय (इत्यादि 12 पंक्ति) **॥ 49 ॥**

-(द्रष्टव्य 'शिशुबोध'क उद्धरण अनुच्छेद 39)

(2) शरीरगतचन्द्रः -

जन्मक तेसर पाँचम शीश । षष्ठ नवम गुणि लीजए पीठ ॥
दशम एकादश हृदये दीजए । आठम द्वादश पादहिं दीजए ॥
सातम चौठ पुनि हाथहि दीजए । कहथि डाक भाषा फल लीजए ॥ 50 ॥

फलञ्च-

माथक चन्द्रमा द्रव्य देखाबहि । हृदयक चन्द्रमा बहु सुख पाबहि ॥
पादहिं कलह पीठ निराश । हाथक चन्द्रमा पुराबहिं आस ॥ 51 ॥

(3) तिथिविशेषसंज्ञा-

पड़िबा षष्ठी एकादशि नन्दा (इत्यादि 3 पाँती) **॥ 52 ॥**

(द्र.सामान्यप्रकरण पृ. 21)।

(4) काकस्य वाक्यात् यात्राफलम्-

पीपर पाकड़ि बेल पर, पोखरि भिण्ड पलास ।
बोलए दहिने शुभ फलद, पूर्ण होए सभ आस ॥ 53 ॥

(5) प्रसङ्गाद् भाषाऽसगुनः -

नग्न-भग्न गर्विणी सोइ । षट्सियार जौं आगाँ होइ ।
हाड़ा लए सुनह जौं चाभय । कहथि व्यास किछु मरण देखाबय ॥ 54 ॥

(6) गृहप्रमाणम्-

गृहपति हाथ करब परमान । घर चाकर दीर्घ गुनि आन ।
एक छाड़ि कए वसु सओं हरब । बाकी बचय से लेखा करब ॥
एक अनेक, तिजे धनवान । चौठे होहि पुत्रकल्याण ॥
साते सकल मनोरथ पूर । कहथि डाक भाषा फल फूर ॥
गामे ठामे नामे जान । सोम शुक्र बुध दशा लय आन ॥ 55 ॥

द्रष्टव्य अनुच्छेद- 38

(7) वासस्थानस्थवृक्षफलम्–

पीपर पाकड़ि पयोधर काँट । लोहित फूल पच्छिम नहि आँट ॥
वायब तेतरि उत्तर तार । ईशानक बदरी पड़त अकाल ॥ 56 ॥

(द्रष्टव्य अनुच्छेद 24.)

(8) भाषा षोडशगृहप्रश्नः–

कर्ता एक सिद्धि लय आबय । दूजे पड़े परा धन पाबय ॥
तीजे कार्य्य बिलम्ब न होइ । चौथे पन्थ चल आबय सोइ ॥
पञ्चम त्वरित किछु बात जनाबय । छट्ठे देश दिगन्तर धावय ॥
सप्तमे पड़य पीड़ित घर आबय । अष्टम हनुमत बात सुनाबय ॥
नवमे मृत्यु दशा भउ चोरी । दशम एकादश किछु वित्त बटोरी ॥
बारह पाबय कुशल आनन्द । तेरह पड़ तौँ झगड़ा-दन्द ॥
चौदह पड़य न सोड़ह चीर । पन्द्रह पड़ए किछु दुःख शरीर ॥
सोड़ह सिद्धि लेन घर फीर । सोड़ह गृहफल बूझ सुधीर ॥
सोड़हो कोठाक जानय भेद । ताकर पानि भरत सहदेव ॥ 57 ॥

	1	
3	2	5
8	4	6
9	7	14
10	12	13
15	11	16

(9) योगिनीविचारः–

प ती प चा ष सा दु आ । नवे नवे योगिनि हुआ ॥
दाहिन योगिनी मारय मारय, सम्मुख जीव लय जाय पड़ाय ।
वामे पीठे बहुत धन पाबय, अन-धन लछमी देहि जनाबय ॥
ऊर्ध्वे योगिनी पञ्चदश, अधो दश परमान ।
वामे दहिने तेरह-तेरह, सम्मुख नव को जान ॥ 58 ॥

(द्रष्टव्य अनुच्छेद- 8)

(10) डाक भाषा शिवरात्रि दिन वायुविचार-

पूर्वे पूर्वा बहय कुरंग । एको मेघ न लाबय अङ्ग ।
अग्नि कुनारी बहय जौं वायु । भूखहिं मरिहैं प्रजा अभागु ॥
दक्षिण पवन लघु जौं बहहीं । अन्न मूल लड्ड भरि कहहीं ॥
नैऋत कोण बहय जौं वाय । धान-पान सभ प्रजा सुखाय ॥
पच्छिम पछबा बह विकरार । कोदो मरुआ हो वेवहार ॥
वायब कोना कहि गेल जोई । कूँआ पैसि वस्त्र धोय धोबी ॥
उत्तर उतरा बहय निराय । घरे घरनी रह नितराय ॥
कोन इसान जौं बहय निरङ्ग । रसगर सारि पुनि करह सुरङ्ग ॥ 59 ॥

(11) फाल्गुन चतुर्दशी वायुफलम्-

फाल्गुन चतुर्दशी सन्ध्या काल । वर्षा बूझब वायु विकार ॥ 60 ॥

(12) आषाढ़ पूर्णिमा विचार-

मास अषाढ़ पूर्णिमा गमना । ध्वजा ताकि कें बूझब पवना ॥
पूबे दिसा पवन चलि आबय । उपजय सारि पवन झड़ि लाबय ॥
अग्नय कोन बहय जौं अनिल । पड़य अकाल भूप सब हील ॥
दक्षिण बहय मलयानील । मध्यम शस्य रण जूझय वीर ॥
नैऋत पुहुमी बुन्द ने गिरइ । राजा रङ्क अन्न विनु मरइ ॥
पश्चिम पछबा लाम्भकर जान । अतिचारक किछु भये समान ॥
वायव पुहुमी जौं जल भरइ । ढोँढ़ साँप मूस अवतरइ ॥
उत्तर उतरा बहय इसान । धान-पान सभ खाय किसान ॥
इसान दुहू कुल दुन्दुभि बाजय । दही भात घृत भोजन कराबय ॥
जौं बह ध्वजा रहय ब्रह्मण्डा । काँपय पृथ्वी ओ बहु दण्डा ॥
नवरत्न पञ्चरत्न परितेजि, अन्न संग्रह करु जाय ।
व्यास वचन सभ भाषय, पुहुमी धुरि उड़ि जाय ॥ 61 ॥

(13) ग्रहण विचार:-

रवि सौँ चन्दा सप्त मे, राहौ सौँ एकन्त ।
अवसओ गहना लागही, की फल खण्डित सन्त ॥ 62 ॥

(14) ग्रहणदोष:-

रवि राउत जे घहराउ, की कह भय समुझाय ।
अब नहि गहना लागिहैं, राहु रहय मुँह बाय ॥ 63 ॥

रवि ओ राउत = राजपुत्र = बुध जँ एक घरमे रहथि तँ ग्रहण नहि लागए – 'रक्षत्येनं तु बुधयोग:' – मुद्राराक्षसनाटक ।

(15) सूर्यग्रहणयोग:-

जाहि नखत्ता रवि तपय, ताहि अमावस होय ।
किछु-किछु पड़िबा सञ्चरय, सूर्य पर्व तब होय ॥ 64 ॥

10. कागभाषा (हस्तलिखित प्राचीन छिटफुट पत्रमे)-

पूबे चिन्ता अग्नि दुज भोजन । दक्षिण कहय सन्तापहि मोचन ॥
नैऋत किछु सुवचने सुनाब । पश्चिम कहुखन मेघ देखाब ॥
वायव मित्र मिलय तहि वार । उत्तर अर्थ लाभ सञ्चार ॥
मन सन्ताप इसानहि भेल । पहिलहि पहर काग कहि गेल ॥ 65 ॥
पूबे धन अग्नेय मित्र योग । दक्षिण हित नैऋत अर्थ भोग ॥
पश्चिम किछु लाभ, तैँ जनि झूरह । वायव कलह उतर सुख पूरह ॥
सज्जन संग इसानहि भेल । दोसर पहर काग कहि गेल ॥ 66 ॥
पूबे व्यय अग्नेय कहि हानि । नृपति कथा कह उत्तर जानि ॥
दक्षिण शत्रु नैऋत सुख पाब । वायव कह कत कलह कराव ॥
इसानहि मित्र मिलए परचारि । आठहु दिसा दुज कहल विचारि ॥
पश्चिम.......................... भेल । तेसर पहर काग कहि गेल ॥
पूबे द्विज रव पन्थ चलाब । अग्नेये सुख भङ्ग कराब ॥
दक्षिण शत्रु नैऋत भाए । पश्चिम नृपति वश्य भए जाए ॥
वायव अरि सौँ होअए प्रीति । उत्तर कहए अग्नि-अभीति ॥
सज्जन संग इसानहि भेल । चारू पहर काग कहि गेल ॥ 67 ॥

–मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य– डॉ. रामदेव झा, पृ.– 80-88

10. पं. उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' द्वारा प्राप्त प्राचीन वचन–

दिक्शूल विचार–

खोड़े बोड़े गुरु रउतारेँ, तीखे काने ओ अङ्गारेँ ।
पुर्व्वादिक चल एक्को कोस, अपराउए मर डाकक न दोस ॥ 68 ॥

शनि, सोम, बृहस्पति, बुध, रवि, शुक्र ओ मंगल दिनकेँ क्रमशः पूब, अग्निकोण, दक्षिण नैर्ऋत्यकोण, पश्चिम, वायव्यकोण ओ उत्तर एको कोस यात्रा कएने यात्री अछैते अयुएँ अल्पायु भए मरताह, एहिमे डाकक दोष नहि देब, किएक तँ डाक पहिनहि जनाए देने छथि ।

खोर– नाङर (शनि), रङ सँ बोड़ल (कलंकित) बोड़ा = चन्द्रमा, यथा– कुलबोडा, रउतारे = राउत (राजपुत्र = बुध), तीक्ष्ण = सूर्य, काण = शुक्र, अङ्गार = अङोरा सन लाल मंगल । अपराउएँ (अल्पायु भए) । डाकक मत स्पष्ट अछ जे एक कोससँ कम यात्रामे दोष नहि हो ॥

नहि किछु जानी । दिग्बल धए तानी ॥ 69 ॥

जँ यात्राक दिन ताकए नहि आबए, आ ज्योतिषी नहि भेटथि तँ केवल दिग्बल टा जानि यात्रा करी, से उत्तम होएत । ऊपर वर्णित दिक्शूलक विपरीत दिग्बल कहबैछ–

दिन	**दिग्बल**	**दिक्शूल**
शनि	पच्छिम	पूब
सोम	वायुकोण	अग्निकोण
बृहस्पति	उत्तर	दक्षिण
बुध	ईशानकोण	नैर्ऋत्यकोण
रवि	पूब	पच्छिम
शुक्र	अग्निकोण	वायुकोण
मङ्गल	दच्छिन	उत्तर



डाकवचनक किछु प्रसिद्ध पाँतीक सूची



डाकवचनक संग्रहग्रन्थ

1. डाकवचनामृत– संग्रहकर्ता– पं. मुकुन्द झाक पुत्र पं. कपिलेश्वर झा
1 सँ 3 भाग व्याख्या सहित शुभंकरपुर । दरभंगा– 1905 ई.
शुभंकरपुर निवासी पं. चिरंजीव झाक संशोधित– 1924
प्रकाशक– कन्हैयालाल कृष्ण दास,
श्रीरमेश्वर प्रेस, लहेरियासराय, दरभंगा
बादमे– नवभारत प्रेस, लहेरियासराय
भाग–1 सामान्य प्रकरण, गृहस्थ, गृह, खेती, वर्षफल, वर्षा, यात्रा, छिक्का, पल्लीपतन, गृहस्थधर्म ।

2. मैथिल डाक– सम्पादक– पं. जीवानन्द ठाकुर, राजपुस्तकालयाध्यक्ष, दरभंगा
मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा– 1951

3. डाकवचन संग्रह–40 पृ. x 4 भाग= 160 पृष्ठ । आनुमानिक– 1955 ई.
1–4 भाग हिन्दी व्याख्या सहित,बाबू रघुवर सिंह बुक्सेलर, मधुबनी
   1. यात्रा, छिक्का, वर्षफल, चैमासक फल, वर्षा । पृ.– 28
   2. संक्रान्ति, ग्रहण, सामान्य विषय, शनि, चन्द्र, निन्दित योग मे जन्मक फल, दन्तजनन, संस्कार, पल्लीपतन, छिक्का, अद्भत, वर्षायोग । पृ.–30
   3. केरा रोपब, कटहर, खेती, बड़द, वनस्पति, धनरोपनी, बजीक मात्रा, नीति, डीह गुनब । पृ.–33
   4. बहीखाता, माघीपूर्णिमा, मासफल, वर्षफल, खेती, गण्डमूल, शिशुविलोन, प्रसूतीक नखच्छेदन,

अन्नप्राशन, कर्णवेध, मुण्डन, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भ, वरवरण, सेवा, वैधव्य योग, जारज योग, नीचयोग, स्त्रीराजयोग, ज्वालामुखी योग, व्यापारमुहूर्त, कुयोग, घातचन्द्र ।

4. डाकवचन संग्रह– 1–4 भाग (मधुबनी–संस्करणक पुनःप्रकाशन) — लोकबन्धु पुस्तकालय, जनकपुर रोड, पुपरी, आदर्श प्रेस, पुपरी (सीतामढ़ी)

5. डाकवचन संहिता– (प्राचीन ग्रन्थसँ प्राप्त वचन) व्याख्या सहित — सम्पादक व्याख्याकार– डॉ. शशिनाथ झा 'जिज्ञासा' पत्रिकामे राँटी (मधुबनी)– 1996 ई.

6. डाकवचन संहिता– ('मैथिली डाक' एवं अन्य स्रोत सँ प्राप्त वचन टीका–टिप्पणी सहित) — डॉ. शशिनाथ झा, दीप उर्वशी प्रकाशन, पटना, 2001 ई.

7. मैथिली लोक साहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य– डॉ० रामदेव झा– लहेरियासराय, 2002 ई.

8. बिहार पीजेन्ट लाइफ– जार्ज ग्रियर्सन– 1885 ई.
(मैथिली अनुवाद)– बिहार ग्राम जीवन– अनुवादक– भीमनाथ झा, मोहन भारद्वाज, धर्मनाथ झा
मैथिली अकादमी, पटना– 1985

9. मिथिला दर्पण– रासबिहारी लाल दास– दरभंगा– 2005 ई.

10. डाकदृष्टि– मोहन भारद्वाज– शेखर प्रकाशन, पटना– 2012 ई.



डॉ. शशिनाथ झा

डाकवचनसंहिताक टिप्पणी–व्याख्या–पाठपरिशेधन कएनिहार पं० श्री शशिनाथ झा (जन्म– 15.2.1954) मधुबनी जिलाक दीपग्रामनिवासी बुधवालवंशक श्रोत्रिय–वैदिकगङ्गानाथ एवं गुणवतीक पुत्र, व्याकरण–साहित्याचार्य, विद्यावारिधि, विद्यावाचस्पति, पाण्डुलिपिविशेषज्ञ छथि । ई कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक व्याकरणविभागाध्यक्ष एवं प्राचार्यक पदसँ सेवानिवृत्त भए सम्प्रति कुलपतिक पद पर कार्यरत छथि तथा मिथिलाविभूति, विद्यासागर आदि उपाधिसँ युक्त तथा साहित्यअकादेमीक भाषासम्मानसँ (2007) सम्मानित छथि । संस्कृत, मैथिली ओ हिन्दीमे हिनक रचित, अनूदित, व्याख्यात ओ सम्पादित सएसँ अधिक ग्रन्थ प्रकाशित अछि । विशेष द्रष्टव्य– http://www.brahmipublication.com/drshashinathjha/